राष्ट्रीय दैनिक

प्रातः किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 ट्रंप को चुनाव के लिए महिला सहयोगी की तलाश, उपराष्ट्रपति पद पर ...

केंद्र के अध्यादेश पर आप का साथ दे सकती है कांग्रेस, नए बयान से मिले ... 12

वर्ष : 11 | अंक : 67 | पटना, सोमवार, 17 जुलाई, 2023 | विक्रम संवत् 2080 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 37°C

न्यूनतम तापमान 28.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

देश के लगभग सभी हिस्सों में बारिश का पूर्वानुमान, पंजाब-हरियाणा में बारिश का कहर

प्रात : किरण

नई दिल्ली। देश के लगभग सभी हिस्सों में अगले 24 घंटों में हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। देश की मौसम संभावित गतिविधि पर यह पूवानुर्मान स्काईमेट ने जारी किया है। इसमें कहा गया है कि दक्षिण-पूर्व राजस्थान, मध्य प्रदेश, विदर्भ, दक्षिण गुजरात, कोंकण और गोवा, तटीय कर्नाटक, छत्तीसगढ़, ओडिशा और अरुणाचल प्रदेश में कहीं हल्की, कहीं मध्यम और कहीं भारी बारिश होगी। स्काईमेट के अनुसार बिहार, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, केरल, तमिलनाडु, तेलंगाना और आंतरिक महाराष्ट्र में हल्की से मध्यम बारिश हो सकती है। पंजाब, हरियाणा, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और आंतरिक कर्नाटक में हल्की बारिश संभव है। पिछले 24 घंटों के दौरान उप हिमालयी पश्चिम बंगाल, असम के पश्चिमी हिस्सों, तटीय ओडिशा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश की तलहटी, कोंकण और गोवा, दक्षिण गुजरात, ओडिशा, बिहार, विदर्भ, लक्षद्वीप, केरल, उत्तराखंड, दिल्ली के कुछ हिस्सों, उत्तरी हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, तमिलनाडु, अंडमान निकोबार द्वीप समूह और पूर्वी राजस्थान में हल्की से मध्यम बारिश हुई। इस समय मानसून की धुरी का पश्चिमी छोर अपनी सामान्य स्थिति से दक्षिण और पूर्वी छोर अपनी सामान्य स्थिति के उत्तर में है। मानसून ट्रफ बीकानेर, नारनौल, ग्वालियर, सतना, डाल्टनगंज, दीघा और बंगाल की पूर्वोत्तर खाड़ी से गुजर रही है। दक्षिणी उत्तर प्रदेश के मध्य और हरियाणा और आसपास चक्रवाती हवाओं का क्षेत्र बना हुआ है। आज बंगाल की

खाड़ी के ऊपर एक चक्रवाती परिसंचरण विकसित होने की उम्मीद है।

पंजाब-हरियाणा में कम से कम 55 लोगों की मौत

चंडीगढ़। पंजाब और हरियाणा में इस सप्ताह भारी बारिश के कारण आई बाढ़ का पानी कई इलाकों में कम होना शुरू हो गया है और दोनों राज्यों के प्रभावित इलाकों में राहत कार्य जारी है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पंजाब के 14 और हरियाणा के 13 जिले बारिश से प्रभावित हुए हैं और दोनों राज्यों में वर्षा जनित हादसों में कम से कम 55 लोगों की मौत हो गई है। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, पंजाब में बारिश जनित घटनाओं में अब तक 29 लोगों की जान गई है जबकि हरियाणा में यह संख्या 26 है। पंजाब के बाढ़ प्रभावित विभिन्न जिलों में 25,000 से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर ले जाया गया, जबकि हरियाणा में 5,300 लोगों को सुरक्षित निकाला गया। उन्होंने बताया कि हरियाणा के यमुनानगर स्थित हथिनीकुंड बैराज में शाम छह बजे प्रवाह दर 53,370 क्यूसेक और रात आठ बजे 54,619 क्यूसेक थी। अधिकारियों ने बताया कि बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में जल-जनित बीमारियों का खतरा है, इसलिए स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को ऐसे किसी भी प्रकोप को रोकने के लिए उचित कदम उठाने का निर्देश दिया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि बाढ़ प्रभावित इलाकों में चिकित्सा शिविर स्थापित किए गए हैं और लोगों को दवाएं वितरित की जा रही हैं। बारिश और बाढ़ से पटियाला, मोगा, लुधियाना, मोहाली, जालंधर, संगरूर, पठानकोट, तरनतारन, फिरोजपुर, फतेहगढ़ साहिब, फरीदकोट, होशियारपुर, रूपनगर और एसबीएस नगर सहित पंजाब के 14 जिले प्रभावित हुए हैं। वहीं, भारी बारिश के कारण अंबाला, फतेहाबाद, फरीदाबाद, पंचकूला, झज्जर, कुरुक्षेत्र, करनाल, कैथल, पानीपत, सोनीपत, पलवल, सिरसा और यमुनानगर सहित हरियाणा के 13 जिले प्रभावित हुए हैं। पंजाब के मानसा जिले में शनिवार को घग्गर नदी में दो जगह तटबंध टूट गए, जिसके बाद हरियाणा की सीमा से लगे कई गांवों में बाढ़ का खतरा मंडरा रहा है।

संक्षिप्त खबरें

खराब मौसम के कारण अमरनाथ यात्रा अस्थायी रूप से स्थगित

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम और बालटाल दोनों मार्ग पर खराब मौसम के कारण अमरनाथ यात्रा अस्थायी रूप से स्थगित कर दी गई है। अधिकारियों ने रविवार को यह सूचना दी। उन्होंने बताया कि खराब मौसम के कारण आज दक्षिण कश्मीर में पारंपरिक नुनवान पहलगाम आधार शिविर और मध्य कश्मीर के गांदरबल जिले के बालटाल से किसी भी यात्री को आगे बढ़ने की अनुमति नहीं दी गई। उन्होंने बताया कि दोनों मार्गों और गुफा मंदिर के कई स्थानों पर अभी भी बारिश हो रही है, जिससे कई जगहों पर सड़क फिसलन भरी हो गई है। खराब मौसम की स्थिति को ध्यान में रखते हुए अधिकारियों ने सुधार होने तक यात्रा स्थगित करने का फैसला किया है। बीते शुक्रवार को किसी भी तीर्थयात्री को दुर्गम के रास्ते सबसे छोटे बालटाल मार्ग से अमरनाथ गुफा मंदिर तक दर्शन के लिए पैदल और घोड़े से जाने की अनुमति नहीं दी गई थी। एक जुलाई से तीर्थयात्रा शुरू होने के बाद से गुफा मंदिर में दर्शन करने वाले यात्रियों की कुल संख्या शनिवार को 21401 तीर्थयात्रियों के दर्शन के बाद दो लाख से अधिक हो गई है।

भारत और फ्रांस के संबंध समय से परे हैं : मोदी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि भारत और फ्रांस के बीच संबंध समय से परे हैं। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के ट्वीट पर प्रतिक्रिया देते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि वह देश (फ्रांस) की अपनी यात्रा को हमेशा याद रखेंगे। ट्विटर पर एक वीडियो के साथ जारी संदेश में मैक्रों ने लिखा था, भारत के लोगों के लिए, विश्वास और दोस्ती। मोदी ने कहा, भारत और फ्रांस एक ऐसा बंधन जो समय से परे है, हमारे साझा मूल्यों में गूंजता है और हमारे सामूहिक सपनों को पूरा करता है। मैं फ्रांस की अपनी हालिया यात्रा को यादों में हमेशा संजोकर रखूंगा। धन्यवाद मेरे दोस्त, राष्ट्रपति मैक्रों।

अगले साल मार्च तक 70 प्रतिशत कर्मचारी कार्यालय से काम करने लगेंगे : एचसीएल

नई दिल्ली। एचसीएल टेक्नोलॉजीज को उम्मीद है कि चालू वित्त वर्ष के अंत तक उसके लगभग 70 प्रतिशत कर्मचारी दफ्तर से काम करने लगेंगे। सूचना प्रौद्योगिकी सेवा कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी सी विजय कुमार ने कहा कि कंपनी अनुकूल और जरूरतों के हिसाब से हाइब्रिड (घर से या कार्यालय पहुंचकर, दोनों तरीकों से) मॉडल जारी रखेगी। उन्होंने कहा कि फिलहाल एचसीएल टेक्नोलॉजीज में कार्यालय आने वाले कर्मियों की संख्या में धीरे-धीरे बढ़ोतरी हो रही है। कोविड-19 महामारी के बाद आईटी उद्योग में हाइब्रिड मॉडल की शुरुआत हुई थी। महामारी के बाद स्थिति सामान्य होने पर कई आईटी कंपनियां कर्मचारियों को कार्यालय आकर काम करने को कह रही हैं। कर्मचारियों को सप्ताह में कुछ दिन ही कार्यालय आने को कहा जा रहा है। पिछले कुछ माह में कार्यालय आने वाले कर्मचारियों की संख्या में बढ़ोतरी भी हुई है और कार्यालय स्थल भरे नजर आने लगे हैं। विजय कुमार ने पीटीआई-भाषा से कहा, हमारे पास जरूरत पर आधारित हाइब्रिड-प्रथम वर्चुअल ऑपरेटिंग मॉडल है। उम्मीद है कि लोग सप्ताह में तीन दिन कार्यालय आएंगे, और हमें कुछ सफलता मिली है।

संसद का मानसून सत्र हंगामेदार रहने के आसार

23 दिनों का यह सत्र 20 से 11 अगस्त तक चलेगा

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। संसद के 20 जुलाई से शुरू हो रहे मानसून सत्र के हंगामेदार रहने के आसार हैं। एक ओर जहां सत्ता पक्ष महत्वपूर्ण विधेयकों को पारित कराने का प्रयास करेगा, वहीं दूसरी ओर विपक्ष मणपुर हिंसा, रेल सुरक्षा, महंगाई और अडाणी मामले पर जेपीसी गठित करने की मांग सहित अन्य मुद्दों पर सरकार को घेरने की कोशिश करेगा। केंद्र की भाजपा नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) सरकार ने मानसून सत्र से पहले विभिन्न राजनीतिक दलों के सदन के नेताओं के बीच आम सहमति बनाने के लिये 19 जुलाई को एक सर्वदलीय बैठक बुलाई है। लोकसभा सचिवालय की बुलेटिन के अनुसार, संसद के मानसूत्र सत्र या 17वीं लोकसभा के 12वें सत्र के दौरान लिये जाने वाले सरकारी कार्यों की संभावित सूची में 21 नये विधेयकों को पेश व पारित करने के लिए सूचीबद्ध किया गया है।

इसमें दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सरकार संशोधन विधेयक 2023 भी शामिल है। यह विधेयक संबंधित अध्यादेश का स्थान लेने के लिए पेश किया जाएगा। सरकारी सूत्रों ने कहा कि सत्र में महत्वपूर्ण विधेयक पेश किये जाने हैं, ऐसे में सभी दलों को सत्र चलाने में सहयोग करना चाहिए क्योंकि सरकार नियम व प्रक्रिया के तहत किसी भी विषय पर चर्चा

कराने से पीछे नहीं हट रही है। मणपुर हिंसा, रेल सुरक्षा, संघीय ढांचे पर कथित आक्रमण, महंगाई, अडाणी मामले पर संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) गठित करने की मांग, महिला पहलवानों के उत्पीड़न पर चर्चा कराने सहित अन्य मुद्दों पर विपक्ष के हमलावर रुख को देखते हुए सत्र के हंगामेदार होने की संभावना है। कांग्रेस के नेता के. सुरेश ने कहा, हाल में पार्टी की संसदीय रणनीति समूह की बैठक हुई, जिसमें तय किया गया कि हम मणपुर हिंसा, रेल सुरक्षा, संघीय ढांचे पर आक्रमण, जीएसटी को पीएमएलए के दायरे में लाने और महंगाई पर चर्चा कराने की मांग करेंगे। संसद का मानसून सत्र बृहस्पतिवार से शुरू होगा। 23 दिनों का यह सत्र 11 अगस्त तक चलेगा। इस दौरान संसद के दोनों सदनों की कुल 17 बैठकें प्रस्तावित हैं।

चंद्रयान-3 का पहला ऑर्बिट-रेजिंग का सफर हुआ पूरा

इस प्रकार की प्रक्रिया चार बार और की जाएगी

प्रात : किरण

चेन्नई/एजेंसी। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अद्वितीय निपुणता और कुशलता से चंद्रयान-3 को चंद्रमा की कक्षा की तरफ ले जाने का पहला कदम (फर्स्ट ऑर्बिट रेजिंग मनूवर) रविवार को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया। इसरो ने अपने आधिकारिक ट्विटर अकाउंट पर चंद्रयान-3 को लेकर ताजा जानकारी दी। उसने कहा, चंद्रयान सामान्य स्थिति में है। फर्स्ट ऑर्बिट-रेज़िंग का काम पूरा हो गया है। अंतरिक्ष यान अब 41762 किमी 173 किमी कक्षा में है। इसरो के वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-3 को चंद्रमा की पहली कक्षा में बढ़ाने की प्रक्रिया आज सफलतापूर्वक पूरी की। इस प्रकार की प्रक्रिया चार बार और की जाएगी, जिसके बाद यह चंद्रमा की कक्षा में पहुंचेगा। इसरो ने कहा, अंतरिक्ष एजेंसी 31 जुलाई तक पृथ्वी से जुड़े चार और अर्थ बाउंड मनूवर करेगी जिसके बाद एक अगस्त को ट्रांस लूनर इंसर्शन होगा। मिशन चंद्रयान-3 का श्रीहरिकोटा के अंतरिक्षयान से शुक्रवार को प्रक्षेपण किया गया था। चंद्रयान-3 के शुक्रवार को लॉन्च के साथ ही भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का तीसरा मून मिशन शुरू हुआ। चंद्रयान-3 को ले जा रहे 642 टन वजनी और 43.5 मीटर ऊंचे रॉकेट एलवीएम3-एम4 ने श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से उड़ान भरी। चंद्रयान-3 के पृथ्वी की

कक्षा में पहुंचने के बाद लूनर ट्रांसफर ट्रेजेक्टरी में डाला गया। वैज्ञानिकों का अनुमान है कि यह अगले 42 दिनों में 3,84,000 किमी से अधिक की दूरी तय करते हुए चंद्रमा तक पहुंच जाएगा। इसरो के अध्यक्ष एस. सोमनाथ ने चंद्रयान-3 के प्रक्षेपण के बाद कहा था, एजेंसी 23 अगस्त को शाम पांच बजकर 47 मिनट पर चांद की सतह पर चंद्रयान-3 अंतरिक्ष यान का तकनीकी रूप से चुनौतीपूर्ण सॉफ्ट लैंडिंग की योजना बना रही है ह्व इसरो का चांद पर यान को सॉफ्ट लैंडिंग कराने यानी सुरक्षित तरीके से यान उतारने का यह मिशन अगर सफल हो जाता है तो भारत चुनिंदा देशों की सूची में शामिल हो जाएगा। अमेरिका, तत्कालीन सोवियत संघ और चीन ने ही यह उपलब्धि हासिल की है। चंद्रयान-3 के चंद्रा की सतह पर कदम रखते ही भारत ऐसी सफलता पाने वाला चौथा देश बन जायेगा।

पूर्व विधान पार्षद प्रो. विनोद कुमार चौधरी का निधन

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। वरिष्ठ समाज शास्त्री एवं पूर्व विधान पार्षद प्रोफेसर विनोद कुमार चौधरी का रविवार की सुबह निधन हो गया। वह 67 वर्ष के थे। चौधरी के अनुज एवं जदयू के विधायक विनय कुमार चौधरी ने बताया कि सुबह नित्य क्रिया के बाद उनके भाई की तबियत बिगड़ने पर उन्हें तत्काल स्थानीय आर बी मेमोरियल अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरो ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। शिक्षा और सामाजिक कार्यों में उनका बड़ा योगदान रहा। वे अपने पीछे पत्नी, दो बेटी समेत भरापुरा परिवार छोड़ गये हैं। श्री चौधरी अपने जीवन काल में कई राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया और संबोधित भी किया। इस बीच श्री चौधरी के निधन पर बिहार विधान सभा अध्यक्ष अवध विहारी चौधरी ने विधान परिषद के पूर्व सदस्य विनोद कुमार चौधरी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि श्री चौधरी एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं गरीबों की आवाज थे। उनके निधन से राजनीति एवं सामाजिक क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है। उधर, दरभंगा के सांसद गोपाल जी ठाकुर, बिहार के सूचना एवं जनसंपर्क सह जल संसाधन मंत्री संजय झा, विधायक संजय सरावगी, मिश्री लाल यादव, पूर्व विधायक रामनिवास प्रसाद, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ एस पी सिंह, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति शशि नाथ झा, पूर्व कुलसचिव डॉ मुस्ताक अहमद, सिंडिकेट सदस्य प्रोफेसर हरि नारायण सिंह समेत हजारों की संख्या में लोग ने उनके बलभद्रपुर आवास पहुँचकर शोक संवेदना व्यक्त किया और पुष्पांजलि अर्पित कर रहे हैं। श्री चौधरी का दाह संस्कार सोमवार की शाम विदेश से उनकी पुत्रियों के आने के पश्चात उनके पैतृक गांव हयाघाट प्रखंड के माखनपुर गांव में होगा।

मुख्यमंत्री ने जताया शोकः पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पूर्व विधान पार्षद विनोद कुमार चैधरी के निधन पर गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री ने अपने शोक संदेश में कहा कि वे एक कुशल राजनेता एवं समाजसेवी थे। उनके निधन से राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है। मुख्यमंत्री ने उनकी धर्मपत्नी और उनके भाई एवं जदयू विधायक विनय कुमार चौधरी से दूरभाष पर वार्ता कर उन्हें सांत्वना दी। मुख्यमंत्री ने दिवंगत आत्मा की चिर शान्ति तथा उनके परिजनों को दुःख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

बेंगलुरू बैठक में पहले से अधिक विपक्षी दल जुटेंगे : विजय

प्रात : किरण

पटना। 17-18 जुलाई को बेंगलुरु में विपक्षी दलों की दूसरी बैठक को लेकर एक बार फिर से सियासत गर्म हो गई है। इसी बीच जेडीयू ने बड़ा दावा कर दिया है। जेडीयू ने दावा किया है कि पटना में हुई विपक्षी दलों की पहली बैठक से अधिक दल बैंगलुरु में होने वाली बैठक में शामिल होने जा रहे हैं।

विपक्षी एकता की मुहिम को शुरू करने वाले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के करीबी मंत्री विजय चौधरी ने कहा है कि जिस तरह साथ चुनाव लड़ने पर सहमति बनी उसी तरह से नेतृत्व कौन करेगा इसका भी फैसला आसानी से हो जाएगा, बीजेपी को छटपटाने की जरुरत नहीं है। मंत्री विजय चौधरी ने दावा किया है कि पटना में हुई विपक्षी दल की बैठक में जितनी विपक्षी पार्टियां शामिल हुई थीं, उससे अधिक दल बैंगलुरु में होने वाली बैठक में शामिल होने जा रहे हैं। विपक्षी दलों के एकजुट होने से पूरे देश में बीजेपी के खिलाफ माहौल बना है। पटना की बैठक में जितनी पार्टियां थीं उससे अधिक पार्टियां आ रही हैं। विपक्षी एकजुटता की संपन्नता की कहानी यह बता रही है। जब विपक्ष की लगभग सभी पार्टियां

यह कह चुकी हैं कि बीजेपी को केंद्र की सत्ता से हटाने के लिए साथ मिलकर चुनाव लड़ेंगी। रही बात नेतृत्व की तो वह भी फैसला आसानी से हो जाएगा। विपक्ष का नेता कौन होगा इसको लेकर आखिर बीजेपी के लोगों को छटपटाहट क्यों हो रही है ?वहीं यूनिफॉर्म सिविल कोड के मुद्दे पर विजय चौधरी ने कहा है कि बिहार सरकार और महागठबंधन में शामिल लगभग सभी दलों का यह मानना है कि समान नागरिक संहिता लागू करने का अभी सही समय नहीं है। वउउ के लिए देश में अभी उपयुक्त माहौल नहीं हैं। श्री चौधरी ने कहा कि केंद्रीय विधि आयोग ने वउउ को लागू नहीं करने की जरूरत बतायी थी लेकिन अब जबरदस्ती इसे थोपने का प्रयास हो रहा है। बीजेपी धार्मिक ध्रुवीकरण चाहती है लेकिन जेडीयू इसके पक्ष में नहीं है।

कृषि विज्ञानी पशुपालन, मछली पालन में अनुसंधान पर अधिक ध्यान दें : तोमर

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने उत्पादन बढ़ाने और संपूर्ण कृषि क्षेत्र की वृद्धि के लिए रविवार को कृषि विज्ञानियों से पशु पालन एवं मछली पालन में अनुसंधान करने के लिए कहा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) के 95वें स्थापना दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से संबोधित करते हुए तोमर ने कहा कि भारत ज्यादातर फसलों के मामले में दुनियाभर में पहले या दूसरे स्थान पर है।

उन्होंने कहा कि इस उपलब्धि को हासिल करने में कृषि वैज्ञानिकों के साथ-साथ किसान समुदाय के प्रयासों और सरकारों

द्वारा की गई नीतिगत पहलों का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार ने कृषि आय बढ़ाने के अपने उद्देश्य के तहत पिछले नौ साल में कृषि क्षेत्र में प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि कृषि में बेहतर उत्पादकता और उत्पादन के लिए भी प्रयास किए गए हैं और गुणवत्ता में सुधार पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। तोमर ने कहा कि भारतीय कृषि उत्पादों को विश्व स्तर पर स्वीकार किया जा रहा है और इसलिए वार्षिक कृषि निर्यात 50 अरब डॉलर को पार कर गया है। उन्होंने परिषद से पांच साल बाद आईसीएआर की 100वीं वर्षगांठ के लिए लक्ष्य तय करने और उन्हें पूरा करने के लिए काम शुरू करने के लिए कहा। मंत्री ने कहा कि कृषि के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में फसल से ज्यादा योगदान पशुपालन और मछली पालन का है। उन्होंने कहा, इसलिए मुझे लगता है कि हमें पशुपालन और मत्स्य पालन में शोध पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

राजग में शामिल हुई ओम प्रकाश राजभर की पार्टी सुभासपा

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। आगामी लोकसभा चुनावों से पहले छोटे-छोटे दलों को साधने की कोशिश में जुटी भारतीय जनता पार्टी को रविवार को सफलता मिली। उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री और अन्य पिछड़ा वर्ग से ताल्लुक रखने वाले ओम प्रकाश राजभर के नेतृत्व वाली सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में शामिल हो गई। राजभर के राजधानी दिल्ली में भाजपा के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह से मिलने के बाद यह घोषणा की गई। शाह ने एक ट्वीट में कहा, ओम प्रकाश राजभर से दिल्ली में भेंट हुई। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन से जुड़ने का निर्णय लिया है। मैं राजग परिवार में उनका स्वागत करता हूं। इसके साथ ही शाह ने इस मुलाकात की एक तस्वीर भी साझा की। केंद्रीय गृह मंत्री ने कहा कि राजभर के आने से उत्तर प्रदेश में राजग मजबूत होगी और प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में गठबंधन द्वारा गरीबों व वंचितों के कल्याण के लिए किए जा रहे प्रयासों को और बल मिलेगा। राजभर ने एक ट्वीट में कहा, भाजपा और सुभासपा साथ आए। सामाजिक न्याय, देश की रक्षा-सुरक्षा, सुशासन और वंचितों, शोषितों, पिछड़ों, दलितों, महिलाओं, किसानों, नौजवानों तथा हर कमजोर वर्ग को सशक्त बनाने के लिए भारतीय जनता पार्टी और सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी मिलकर लड़ेंगी। उन्होंने कहा कि दिल्ली में शाह से भेंट हुई और प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व वाले राजग में शामिल होने का निर्णय लिया। राजभर ने उत्तर प्रदेश का पिछला विधानसभा चुनाव समाजवादी पार्टी (सपा) के साथ गठबंधन में लड़ा था, लेकिन उम्मीद के मुताबिक सफलता न मिलने के बाद वह सपा से अलग हो गए थे। उन्होंने पिछले साल राष्ट्रपति चुनाव में राजग उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू का समर्थन किया था। राजभर की पार्टी ने वर्ष 2017 का उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव भाजपा के साथ मिलकर लड़ा था।

श्रावणी मेला के अवसर पर 02 जोड़ी स्पेशल ट्रेनों का परिचालन

पटना। श्रावणी मेला के अवसर पर श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए रेलवे द्वारा समस्तीपुर और भागलपुर के बीच तथा दानापुर और जसीडीह के बीच 01-01 जोड़ी स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है जिनका विवरण निम्नानुसार हैः गाड़ी सं. 03244/03243 दानापुर-जसीडीह-दानापुर श्रावणी मेला स्पेशल (सप्ताह में तीन दिन): गाड़ी सं. 03244 दानापुर-जसीडीह श्रावणी मेला स्पेशल 17 जुलाई से 29 अगस्त तक सप्ताह के प्रत्येक रविवार, सोमवार एवं मंगलवार को दानापुर से 07.20 बजे खुलकर 07.40 बजे पटना, 08.00 बजे राजेन्द्रनगर, 08.13 बजे पटना साहिब, 08.25 बजे फतुहा, 08.34 बजे खुसरूपुर, 08.56 बजे बख्तियारपुर, 09.06 बजे अथमलगोला, 09.17 बजे बाढ़, 09.40 बजे मोकामा, 09.52 बजे हाथीदह, 10.06 बजे बड़हिया, 10.18 बजे मनकट्टा, 10.25 बजे लखीसराय, 10.35 बजे किउल, 11.00 बजे मननपुर, 11.18 बजे जमुई एवं 12.00 बजे झाझा रूकते हुए 12.55 बजे जसीडीह पहुंचेगी। गाड़ी सं. 05574/05573 समस्तीपुर-भागलपुर-समस्तीपुर श्रावणी मेला स्पेशल (सप्ताह में पांच दिन): गाड़ी सं. 05574 समस्तीपुर-भागलपुर श्रावणी मेला स्पेशल 17 जुलाई से 30 अगस्त तक सप्ताह के प्रत्येक सोमवार, मंगलवार, बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार को समस्तीपुर से 14.30 बजे खुलकर 15.00 बजे दलसिंहसराय, 15.18 बजे बछवारा, 15.45 बजे बरौनी, 16.20 बजे बेगुसराय, 16.40 बजे साहिबपुर कमाल, 17.00 बजे सब्दलपुर, 17.30 बजे मुंगेर, 18.49 बजे सुलतानगंज रुकते हुए 19.50 बजे भागलपुर पहुंचेगी।

फैसला इंजन की डिजाइन और उत्पादन के लिए बेंगलुरु में स्थापित होगी संयुक्त उद्यम कंपनी

फ्रांसीसी सफ्रान और एचएएल भारत में बनाएंगे नई पीढ़ी के हेलीकॉप्टर इंजन

नया संयुक्त उद्यम भारत-फ्रांस के बीच वर्तमान सहयोग के क्षेत्र को और विस्तार देगा

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। फ्रांसीसी कंपनी सफ्रान और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) ने बेंगलुरु में अपनी नई संयुक्त उद्यम कंपनी स्थापित करने का निर्णय लिया है। यहां से नई पीढ़ी के हेलीकॉप्टर इंजनों की डिजाइन, विकास, उत्पादन और बिक्री की जाएगी। कंपनी का पहला उद्देश्य भारतीय रक्षा मंत्रालय (एमओडी) के लिए नई पीढ़ी के 13 टन वाले भारतीय मल्टी-रोल हेलीकॉप्टर (आईएमआरएच) बनाना है। इसका नौसैनिक संस्करण डेक आधारित मल्टी-रोल हेलीकॉप्टर (डीबीएमआरएच) भी बनाया जाना है। यह फ्रांस के साथ भारत का पहला घरेलू इंजन डिजाइन और विनिर्माण संयुक्त उद्यम होगा। एचएएल और फ्रांसीसी कंपनी सफ्रान के बीच इस बारे में 08 जुलाई, 2022 को एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर और एयरो इंडिया-2023 के दौरान दोनों भागीदारों के बीच वर्क शेयर पर एक समझौता किया गया था। भारतीय और फ्रांसीसी एयरोस्पेस प्रमुख विशेष रूप से रक्षा प्रौद्योगिकियों में भारत सरकार के आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण का समर्थन कर रहे हैं। सफ्रान और एचएएल इस हेलीकॉप्टर इंजन के संयुक्त उद्यम को अपने मजबूत, संतुलित और बढ़ते संबंधों में एक स्वाभाविक कदम के रूप में देख रहे हैं।

सफ्रान हेलीकॉप्टर इंजन के सीईओ सेड्रिक गॉबेट ने कहा, हम भारतीय बाजार और भविष्य के निर्यात अवसरों के लिए इस नए टबोर्शाफ्ट इंजन संयुक्त उद्यम को तैयार करने के लिए एचएएल और भारत के साथ साझेदारी करके वास्तव में उत्साहित हैं। यह न केवल हमारी दोनों कंपनियों के बीच,

बल्कि भारत और फ्रांस के बीच लंबे समय से चले आ रहे संबंधों में एक महत्वपूर्ण मोड़ है। हम साथ मिलकर भारत में नए हेलीकॉप्टर इंजनों के डिजाइन और उत्पादन पर गर्व करेंगे। एचएएल के सीएमडी सीबी अनंतकृष्णन ने कहा, सफ्रान हेलीकॉप्टर इंजन कई दशकों से हमारा मूल्यवान भागीदार रहा है। हम दोनों ने 15 से अधिक प्रकार के विमानों और हेलीकॉप्टर इंजनों के निर्माण में एचएएल के अनुभव और टबोर्शाफ्ट इंजन डिजाइन करने में सफ्रान हेलीकॉप्टर इंजन की विशेषज्ञता का लाभ उठाते हुए एक नई यात्रा शुरू की है। इसका उद्देश्य आईएमआरएच और डीबीएमआरएच पर तत्काल ध्यान केंद्रित करते हुए भारत में टबोर्शाफ्ट इंजनों का सह-विकास और सह-उत्पादन करना है। यह साझेदारी आत्मनिर्भर भारत के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में भारतीय रक्षा विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र को शामिल करेगी। फ्रांसीसी कंपनी सफ्रान ने एक बयान में कहा कि एचएएल के साथ पहले से ही हेलीकॉप्टर पावर प्लांट पर कई सफल साझेदारियां हैं, जिसमें शक्ति इंजन भी शामिल है। एचएएल में निर्मित हेलीकॉप्टरों ध्रुव, रुद्र और लाइट कॉम्बैट हेलीकॉप्टर (एलसीएच प्रचंड) के लिए 500 से अधिक शक्ति इंजन का उत्पादन पहले ही किया जा चुका है। नया संयुक्त उद्यम वर्तमान सहयोग के क्षेत्र को और विस्तार देगा। इसके अलावा गोवा में स्थापित होने वाले एचईएमआरओ संयुक्त उद्यम के माध्यम से भारतीय सशस्त्र बलों की सेवा में टीएम333 और शक्ति इंजन के लिए एमआरओ (रखरखाव, मरम्मत और ओवरहाल) सेवाएं भी दी जाएंगी।

संक्षिप्त खबरें

लावारिस अवस्था में ट्रेन सेअंग्रेजी शराब बरामद

दानापुर। खगौल रेल थाना जीआरपी के द्वारा स्टेशन पर विशेष चेकिंग के दौरान प्लेटफार्म नंबर एक पर पश्चिमी यात्री सेड के पास ट्रेन श्रमजीवी एक्सप्रेस के पिछले जनरल बोगी से लावारिस अवस्था में अंग्रेजी शराब बरामद किया गया जीआरपी थानाध्यक्ष रणधीर कुमार ने बताया की अंग्रेजी शराब रॉयल स्टैग 15 बोतल एक पिट्ठू बैग से बरामद किया गया अज्ञात के विरुद्ध मामला दर्ज कर ली गई है।

दूसरी सोमवारी पर लाखों श्रद्धालुओं ने उठाया जल

फतुहा। सावन की दूसरी सोमवारी पर रविवार को ऐतिहासिक त्रिवेणी घाट, मस्ताना घाट, कटैया घाट सहित अन्य घाटों पर गंगा जल उठाने को भीड़ उमड़ पड़ी। जानकारी अनुसार नालंदा, जहानाबाद, गया, नवादा जिला सहित अन्य जगहों के श्रद्धालु भारी संख्या में फतुहा गंगा स्नान और जल उठाने के लिए पहुंचे। खासकर शहर के त्रिवेणी संगम घाट पर सबसे अधिक श्रद्धालु पहुंचते हैं जिससे मेला जैसा माहौल बन गया है। श्रद्धालुओं में खासकर युवा वर्ग अधिक संख्या में डाक बम बन कर तीर्थ स्थल बराबर, बैकटपुर सहित अन्य शिवालयों में जलाभिषेक को जाते हुए देखा गया। बोल बम के नारों की गूंज से वातावरण भक्तिमय हो गया। जानकारी के अनुसार इस बार सावन की शुरूआत 04 जुलाई से होने जा रही है. सावन 04 जुलाई से 31 अगस्त तक रहेंगे। यानी कि सावन का महीना इस बार 58 दिनों का रहेगा। यह संयोग लगभग 19 वर्षों बाद बना है। हिंदू पंचांग के अनुसार, इस बार अधिकमास के कारण सावन 2 महीने का पड़ रहा है।

जिसने दुख रूपी विष पिया, उसे ईश्वरीय सुख मिला

पटना सिटी। साधनधाम में श्रीमद् भागवत कथा में उमड़े श्रोता की भीड़ के बीच भागवत व्यास चंदन कृष्ण शास्त्री ने कथा कही। उन्होंने भगवान नरसिंह अवतार के बारे में उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि समुद्र मंथन में प्रथम विष निकला। उसी प्रकार इस संसार सागर में भी ईर्ष्या, क्रोध, लोभ, द्वेष, दुख रूपी विष है। उसे पीकर जो आगे बढ़ा, उसे ही परमात्मा रूपी अमृत मिलता है। साथ ही डांडिया रास का भी आयोजन किया गया। श्रोताओं ने भागवत रस का आनंद लिया। इसमें सुरेश अरोड़ा, मनीष अग्रवाल, राजकुमार तिवारी, अनंत अरोड़ा, ललित अरोड़ा, सरज कपूर, गौतम विजपुरिया, पंकज शुक्ला आदि सक्रिय रहे।

वार्ड 64 जदयू की कार्यकारिणी गठित

पटना सिटी। जदयू गायघाट सेक्टर के अंतर्गत वार्ड 64 में वार्ड कार्यकारणी की हुई। इसकी अध्यक्षता वार्ड अध्यक्ष मो शमीम अहमद एवं संचालन मुकेश ठाकुर ने किया। मुख्य अतिथि पटना महानगर अध्यक्ष आसिफ कमाल थे। इस अवसर वार्ड 64 के कमेटी के पदाधिकारियों का मनोनयन करते हुए महागर अध्यक्ष आसिफ कमाल के हाथों सभी पदाधिकारियों को मनोनयन पत्र दिया गया। कार्यक्रम में शामिल गण्यमान्य नेतागण ने पार्टी को बूथ स्तर तक मजबूत करने एवं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा चलाए जा रहे विकास योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने की बात कही। इस अवसर पर महानगर अध्यक्ष आसिफ कलाम, महानगर प्रवक्ता अनंत अरोड़ा, सेक्टर प्रभारी विक्की निषाद, व्यावसायिक जदयू प्रकोष्ठ के नेता मो अली, आफताब गुड्डू, इजहार अनवर, मो आदिल, प्रवीण चौधरी, रामप्रवेश सिंह, नैयर अंजुम, सरफराज, मो इरशाद, मो इम्तियाज, नौशाद अहमद, शमीम कुरैशी, मो इदरीश, एहतेशाम अहमद, नौशाद अली, फारीदुल हक इदि उपस्थित थे।

भाजपा महानगर अनु जाति पदा. का किया सम्मान

पटना सिटी (प्राकि)। भारतीय जनता पार्टी पटना महानगर अनुसूचित जाति मोर्चा की बैठक सीता स्वयंवर मैरिज गार्डन हॉल में हुई इसकी अध्यक्षता अनुसूचित जाति मोर्चा के महानगर अध्यक्ष श्याम सुंदर रजक ने की। बतौर मुख्य अतिथि विधायक अरुण कुमार सिन्हा एवं महानगर जिलाध्यक्ष अभिषेक चंद्रवंशी मौजूद थे। दोनों अतिथियों के द्वारा अनुसूचित जाति मोर्चा के सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया गया। बैठक में महामंत्री पुरुषोत्तम पासवान उर्फ फोटो रजक, कोषाध्यक्ष विजयानंद, उपाध्यक्ष शंकर चौधरी, शंभू दास, गुड्डू पासवान, प्रवक्ता शंकर चौधरी, मंत्री महेश पासवान, दिलीप चौधरी आदि ने भाग लिया। बैठक में संगठन विस्तारीकरण पर चर्चा हुई।

शिक्षक बहाली में डोमिसाइल नीति लागू करने की मांग को ले रोड जाम, प्रदर्शन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

शिक्षक नियुक्ति में डोमिसाइल नीति लागू किए जाने की मांग को लेकर जन अधिकार पार्टी रविवार को राज्य में विरोध प्रदर्शन कीऔररोड भी जाम किया। इसी कड़ी में रविवार को जन अधिकार पार्टी के सुप्रीमो और पूर्व सांसद पप्पू यादव के नेतृत्व में कार्यकताओं ने जीरो माइल पटना-गया मसौढ़ी मोड़ के पास फोरलेन सड़क को जाम कर विरोध प्रदर्शन किया। बिहार सरकार से राज्य में शिक्षक बहाली में डोमिसाइल नीति को लागू किए जाने की मांग की।

चक्का जाम को सम्बोधित करते हुए जाप सुप्रीमो पप्पू यादव ने कहा कि राज्य में शिक्षक बहाली में डोमिसाइल नीति को खत्म करना राज्य के युवाओं का साथ धोखा है। महागठबंधन सरकार को शिक्षक नियमावली में बदलाव कर शिक्षक बहाली में डोमिसाइल नीति को लागू किया जाना चाहिए। अगर यहां के युवाओं को अपने ही राज्य में नौकरी नहीं मिलेगी, तो वे कहां जाएंगे। इससे अपने राज्य के बेरोजगारों पर असर पड़ेगा। जो युवा शिक्षक बनने की उम्मीद लिए बैठे हैं, उन्हें इससे काफी परेशानी होगी। सरकार को अपने राज्य के बेरोजगार युवाओं के हित के बारे में भी सोचना चाहिए। जाप सुप्रीमो ने कहा कि डोमिसाइल नीति को हटाना बिहार के युवाओं के साथ विश्वासघात है। इससे बिहार के युवाओं के लिए अवसर की कमी हो जाएगी। यह बिहारी युवाओं का अपमान है। यह सरकार का एक आत्मघाती कदम है। उन्होंने कहा कि बिहार सरकार की गलत नीतियों के कारण युवाओं का पलायन हो रहा है।

केंद्र सरकार की गलत नीतियों के कारण देश भर में बेरोजगारों की संख्या में बेहताशा बढ़ोतरी हुई है। हम चाहते है कि शिक्षक नियुक्ति में डोमिसाइल नीति लागू हो। अगर जनाधिकारी पार्टी की मांग पूरी नहीं हुई, तो आगे भी आंदोलन किया जाएगा। जाप का एक-एक कार्यकर्ता डोमिसाइल नीति लागू करने के लिए गांव-गांव जाकर आंदोलन करेगा। प्रदेश अध्यक्ष राघवेन्द्र कुशवाहा ने बताया कि शिक्षक बहाली में डोमिसाइल नीति लागू किए जाने की मांग को लेकर जनाधिकार पार्टी 16 जुलाई को राज्यभर में सभी जिला में रोड परचक्का जाम विरोध प्रदर्शन कर रही है। सरकार को छात्रों की बात माननी पड़ेगी।

पटना जिला अध्यक्ष सचिदानन्द यादव और महानगर अध्यक्ष आदी मेहता के नेतृत्व में हो रहे प्रदर्शन में प्रदेश अध्यक्ष राघवेन्द्र कुशवाहा, राष्ट्रीय महासचिव व प्रवक्ता प्रेमचंद सिंह, राष्ट्रीय महासचिव राजेश रंजन पप्पू, भाई दिनेश, प्रधान महासचिव अभिजीत सिंह चौहान, जावेद खान, महेश यादव, ललन सिंह, विकास बंसी, रमेश राम, छात्र अध्यक्ष मनीष यादव, रौशन, युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष राजू दानवीर, श्याम सिंह चौहान, रौशन शर्मा, पुरुषोत्तम, मोनू आदि उपस्थित थे।

लाठीचार्ज में घायल कार्यकर्ताओं से मिले नंदकिशोर

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

भारतीय जनता पार्टी के द्वारा 13 जुलाई को पटना में प्रदर्शन किया गया था। इस दौरान महागठबंधन की नीतीश सरकार के द्वारा बर्बरतापूर्वक लाठीचार्ज किया गया। इस घटना में पटना साहिब विधानसभा क्षेत्र के अनेक कार्यकर्ता घायल हुए थे। ऐसे कार्यकताओं का कुशल-क्षेम जानने के लिए विधायक नंदकिशोर यादव क्रमशः सभी कार्यकताओं के घर गए। घायल कार्यकताओं में अशोक भारती, संजय चंद्रवंशी, पवन मेहता, अरशी अजीज, पवन सिंह, राजन सिन्हा, सत्यदेव पप्पू आदि थे। हालांकि घायल भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष संजीव यादव उसी स्थिति में अपने इलाज के लिए दिल्ली चले गए हैं। कुशलक्षेम पूछने वाले में भाजपा नमामि गंगे के प्रदेश संयोजक प्रभाकर मिश्र, चित्रगुप्त मंडल के महामंत्री गोपाल जायसवाल, दिव्यराज विनायक, निभा सिन्हा, गीता देवी, मंडल प्रभारी बद्री गुप्ता आदि भी साथ में थे। इस दौरान पूर्व मंत्री और विधायक नंदकिशोर यादव ने कहा कि शांतिपूर्ण प्रदर्शन पर जिस तरीके से लाठीचार्ज किया गया है वह इस बात का द्योतक है कि पहले से ही पुलिसकर्मियों को हिदायत दे दी गई थी और ऐसे लोगों को ही आगे में रखा गया था ताकि वह बर्बरता पूर्ण लाठी चार्ज करें और भाजपा के नेता कार्यकर्ता और समर्थक बुरी तरह घायल हो प्रदर्शन के दौरान अमूमन पुलिस डंडा पटक कर खदेड़ आती है ताकि भीड़ तितर-बितर हो जाए मगर जिस तरीके से विधि व्यवस्था संधारण के नाम पर भाजपा के नेताओं को पीटा गया है वह बेहद निंदनीय है। यही कार्यकर्ता आने वाले लोकसभा और विधानसभा चुनाव में महागठबंधन को धूल चटाने का काम बखूबी करेंगे।

शहर में हुआ सृष्टि लाइब्रेरी का हुआ शुभारंभ

फतुहा। शहर में हाइटेक लाइब्रेरी का क्रेज बढ़ता जा रहा है। इसी प्रकार छोटी लाइन, टेम्पू स्टैंड के पास रविवार को सृष्टि लाइब्रेरी का उद्घाटन समाजसेवी अंजू देवी ने किया। उद्घाटन के पहले विधिवत पूजा किया गया। सृष्टि लाइब्रेरी के संस्थापक हितेश कुमार ने बताया कि यह लाइब्रेरी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्रों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध होगा। लाइब्रेरी में हर प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए हाई स्पीड वाई-फाई, पार्किंग, अच्छी पुस्तकों के अलावा कई सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इस अवसर पर आशीष सर, चंदन कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे।

रसोइयों की समस्या को ले एसडीओ के समक्ष प्रदर्शन 28 को

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

बिहार राज्य विद्यालय रसोईया संघ, ऐक्टू के सिटी इकाई की बैठक मंगल तालाब स्थित भाकपा माले कार्यालय में हुई। इसकी अध्यक्षता गुड़िया देवी और संचालन सचिव राखी मेहता ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए संघ की महासचिव सरोज चौबे ने कहा कि बैठक में यह बात सामने आई कि रसोइयों से ऐसे काम करवाए जा रहे हैं, जो उनके दायरे में नहीं आता है। मध्य विद्यालय, अल्लाबक्शपुर की रसोइयों ने बताया कि बकरीद की छुट्टी नहीं दी गई।उनलोंगों से कचरा उठवाया गया। यहां तक कि पाखाना में पानी डलवाया जाता है। कसबा स्कूल में पोंछा लगवाया जाता है। रसोइयों को सुबह 8.30 बुलाया जाता है और अपराह्न चार बजे तक रखा जाता है, जबकि उन्हें पार्ट टाइम वर्कर कहा जाता है। उन्होंने सवाल किया कि महज 1,650 रुपए में रसोइयों से सरकार कितना काम करवाना चाहती है? साल में 10 महीने का मानदेय का भुगतान किया जाता है। उसमें से भी अनेक महीने का घोटाला कर लिया जाता है। इस तरह के दमन के खिलाफ 28 जुलाई को अनुमंडल पदाधिकारी के समक्ष प्रदर्शन किया जाएगा। बैठक में बिहार राज्य विद्यालय रसोइया संघ, ऐक्टू का 13 अगस्त को आयोजित होने वाले राज्य सम्मेलन की तैयारी पर भी चर्चा हुई। बैठक में प्रस्ताव पारित कर आशा हड़ताल का समर्थन किया गया। सरकार से मांग की गई कि उनकी मांगों को पूरी की जाए। बैठक में कोषाध्यक्ष सीमा देवी, निर्मला देवी, सविता देवी, टुन्नी देवी, रजिया खातून, सोनी खातून, नसीमा, चंद्रावती, अमीना, गुड़िया देवी, सीता देवी, बबली देवी, मीना देवी आदि ने भाग लिया।

बिना प्रशिक्षण रोजगार पाना आसान नहीं है : वीरेंद्र

संस्था को चार कंप्यूटर देंगे डॉ. विमल कारक

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

युवाओं में प्रशिक्षण के बिना रोजगार प्राप्त करना आसान नहीं है। आज के दौर में यह हमारे समाज की जरूरत है। यह बात मुख्य महाप्रबंधक बिहार मेडिकल सर्विसेज इंफ्रास्ट्रक्चर कारपोरेशन के मुख्य महाप्रबंधक वीरेंद्र कुमार ने कही। शाह अजीमबाद वेलफेयर एजुकेशनल एंड चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा मितन घाट के खानकाहे मउनएमइयआ आडिटोरियम में आयोजित किया गया था। मुख्य अतिथि सैय्यद शाह शमीम अहमद मुनएमी ने कहा कि संस्था द्वारा जो काम किया जा रहा है, उसकी जितनी तारीफ की जाए, कम है। कारण कि यह हर तबके के लोगों तक तालीम को पंहुचा रहा है। पीएमसीएच के पूर्व अधीक्षक डॉ बिमल कारक ने कहा कि उनकी ओर से इस संस्था को जो आवश्यकता होगी, करेंगे। उन्होंने संस्था को चार कंप्यूटर देने की घोषणा भी की। शिया वक्फ बोर्ड के पूर्व चेयरमैन इरशाद अली आजाद ने कहा कि महिलाओ को आत्मनिर्भर बनाने के लिए यह संस्था हर तरह से कार्य कर रही है। समाज को ऐसे संस्था की मदद करनी चाहिए। वे हर समय इस संस्था के लिए मदद को तैयार हैं, जो भी जिम्मेवारी संस्था उन्हें देगी, वे मदद को तैयार हैं। संस्था द्वारा ओसीएसएम अकादमी और करियर कंप्यूटर द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त 80 छात्र-छात्राओं को सर्टिफिकेट और मेडल से प्रदान किया गया। साथ ही संस्था द्वारा सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त 45 महिलाओं को भी सर्टिफिकेट और मेडल से दिया गया। कार्यक्रम की शुरूआत लब पे अआती है दुआ से की गई और शाह अजीम की तस्वीर पर पुष्प अर्पण से हुई। संस्था के सदस्यों के द्वारा अंग वस्त्र और मोमेंटो से अतिथियों का स्वागत किया गया। संचालन सचिव मो यूनुस ने और अध्यक्षता मो जावेद ने किया। कार्क्रम मे पूर्व पार्षद मुमताज जहां, मो नौशाद, मो फिरोज, समीर, परवीन आरा, शबनम, अंजुम, अफरीदी, सुधीर कुमार पटेल, उज्जवल रॉय, राजकिशोर चौरसिया, अकमल रजा, आदित्य कुमार, विश्वजीत कुमार, मो सोहैल आदि मौजूद रहे। धन्यवाद ज्ञापन अध्यक्ष मो अंजुम आलम ने किया।

शोषित समाधान केंद्र का 17वां फाउंडर्स डे मनाया गया

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों के द्वारा कई शैक्षिक व सांस्कृतिक मनोहारी कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए जिनमें शेक्सपियर का प्रसिद्द नाटक 'मर्चेंट ऑफ वेनिस', चन्द्रगुप्त की वीर यात्रा, माइम एक्ट, देशभक्ति डांस, गिव मी आयल इन माय लैंप इत्यादि के अलावे कुछ वैज्ञानिक प्रदर्शो को भी शामिल किया गया।

कार्यक्रम की शुरूआत मुख्य अतिथि के रूप में पधारे पारस हेल्थ के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. धरमिंदर नागर, विशिष्ट अतिथि के रूप में आये आर्यावर्त सहोदया के संस्थापक डॉ. सी. बी. सिंह, शोषित सेवा संघ के अध्यक्ष, श्री श्रीवर्धन सिन्हा, प्रख्यात सर्जन व शोषित सेवा संघ के ट्रस्टी, डॉ. ए.ए. हई, विद्यालय के निदेशक व पूर्व आईपीएस, श्री बी.सी. वर्मा व डॉ. स्निग्धा प्रसाद, शोषित सेवा संघ के ट्रस्टी, श्री परेश परासनिस, विद्यालय के प्राचार्य डॉ. हिमांशु पांडेय व अन्य गणमान्य अतिथियों आदि ने दीप प्रज्वलन के साथ की। मुझे खुशी है कि इस दिशा में शोषित सेवा संघ लड़कियों के लिए भी एक विद्यालय खोलने के दिशा में कदम बढ़ा चुका है। विशिष्ट अतिथि एवं प्रसिद्द शिक्षाविद डा. सी. बी. सिंह ने कहा कि श्री जे के सिन्हा साहब द्वारा स्थापित यह विद्यालय समाजकल्याण का अप्रतिम उदाहरण है, इस विद्यालय के विद्यार्थियों की सफलता और इसके माध्यम से मुसहर समुदाय में जो युंगांतकारी परिवर्तन हुआ है वह निसंदेह उनकी दूरदर्शिता का परिचायक है। कार्यक्रम का समापन सभी आगंतुक अतिथियों, अभिभावकों, प्राचार्यों, उपस्थित मीडिया कर्मियों , विद्यालय परिवार के होनहार छात्रों, विद्वान शिक्षकों व परिश्रमी विद्यालय कर्मियों को धन्यवाद् ज्ञापन के साथ विद्यालय के प्राचार्य डा. हिमांशु कुमार पांडेय द्वारा किया गया।

मोदी सरकार के नौ साल, देश बेहाल 'कार्यक्रम के तहत धरना एवं पोल-खोल' कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। जीरोमाईल गोलम्बर अवस्थित राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की मूर्ति पर बेगूसराय जिला कांग्रेस अध्यक्ष अभय कुमार सिंह सार्जन, बिहार प्रदेश युवा कांग्रेस के अध्यक्ष शिवप्रकाश गरीब दास, जिला कांग्रेस कार्यक्रम क्रियान्वयन कमिटि के संयोजक रामविलास सिंह, जिला कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता चुनचुन राय, नारायण सिंह, नंदकिशोर सिंह, संजय कुमार, शिवशंकर पोद्दार सहित सैकड़ों कांग्रेसजनों के द्वारा माल्यार्पण किया गया और उसके बाद आदर्श दिनकर ग्राम सिमरिया में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह की मूर्ति के सामने "मोदी सरकार के नौ साल, देश बेहाल" कार्यक्रम के तहत धरना एवं "पोल-खोल" कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष अभय कुमार सिंह सार्जन ने कहा कि मोदी सरकार अपने नौ साल के शासन में देश को कंगाल बना दिया है। देश में विकास की गाड़ी रूक गयी है।चारों तरफ भय, भूख, भ्रष्टाचार और अराजकता की स्थिति पैदा हो गयी है। देश पर विदेशी कर्ज एक लाख करोड़ बढ़ गया है।उन्होंने उपस्थित लोंगो से 2024 में मोदी सरकार को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया। युवा कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष शिवप्रकाश गरीबदास ने कहा कि मोदी सरकार के नौ साल जुमलेबाजी और छलावा का रहा। अध्यक्षता करते हुए कार्यक्रम क्रियान्वयन समिति के संयोजक रामविलास सिंह ने कहा कि ऐसा कोई सगा नही, जिसे मोदी सरकार ने ठगा नही। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार के नौ साल के शासन में गरीब और गरीब हुआ, अमीर और अमीर हुआ। जिला कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता चुनचुन राय ने कहा कि मोदी सरकार के नौ साल के शासन में महंगाई और बेरोजगारी चरम पर पहुँचा।किसानों, मजदूरों की हालत बदतर हुई। सामाजिक सौहार्द पूरी तरह से ध्वस्त हो गया।महिलाओं, दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों पर अत्याचार बढ़े, देश का लोकतांत्रिक ढ़ांचा तार-तार हो गया।

भारतीय सूढी उत्थान संगठन पटना ने की एक बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

पटना सिटी :भारतीय सूढी उत्थान संगठन पटना बिहार सूढी जाति को अति पिछड़ा में शामिल किया जाने को लेकर वार्ड 54 में संजय कुमार के आवास पर एक बैठक रखी गई। जिसकी अध्यक्षता राजकिशोर ने की सूढी समाज के बच्चे के लिए पढ़ाई-लिखाई बहुत ही महत्वपूर्ण है। अध्यक्ष विनोद शौण्डिक ने कहा सूढी समाज को अति पिछड़ा वर्ग में शामिल नहीं करना सरकार की नियत में खोट को दशार्ता है और हर बैठक में आने वाले दिनों अति पिछड़ा वर्ग में लाकर समाज को उज्वल भविष्य हो सके ऐसा हमलोग का लगातार जीतोड़ प्रयास है। महासचिव दिलीप कुमार ने बिहार सरकार से मांग कर अपनी बात को लेकर हर संभव प्रयास जारी रहेगा कई मुद्दों पर बातचीत जारी रहा। समाज के लोग डॉ अविनाश प्रसाद, राकेश महेंद्र, संजय , मनोज , महेंद्रु से अरुण , शेषनाथ ,राकेश ,रंजीत ,सरोज , राजू , सोनू , अशोक , संतोष कुमार ,अवधेश कुमार ,मोती ,दिलीप , रत्नेश ,कई वर्षों सभी समाज के दूर-दूर से लोग आए और इस काम को सहारनीय का स्वागत की ।

संदिग्ध अवस्था में युवक की लाश बरामद

प्रात :किरण संवाददाता

दानापुर खगौल थाना क्षेत्र के अंतर्गत। सोमवार की सुबह आर। ओ बी के नीचे से संदिग्ध अवस्था में युवक की लाश बरामद की गई है। युवक की लाश को देखने के लिए आसपास के लोगो की भीड़ उमड़ पड़ी। मृतक युवक की पहचान बड़ी बदलपुरा खगौल निवासी उमेश सिंह के पुत्र19 वर्षीय गोपाल के रूप में किया गया। इस संबंध मे मृतक की मां कुसुम देवी ने खगौल थाना मे अपना बयान देते हुए कहा कि 14 जुलाई को दिन के 12 बजे कुष्ठ आश्रम का रहने वाला एक लड़का हमारे पुत्र को घर से बुलाकर ले गया था। जब वह देर रात तक घर पर वापस नहीं लौटा तो हम लोग खोजबीन शुरू कर दिए काफी खोजबीन करने के बाद भी उसका कुछ पता नहीं चला। जब हम लोगों ने अपने पुत्र के बारे मे घर के बगल में रहने वाला एक युवक अब्दुल से पूछताछ की तो और उसे पैसे की लालच देकर 2 सौ रुपए अब्दुल के हाथ में दिया, तब अब्दुल ने बताया कि मेरा पुत्र गोपाल की लाश रेलवे टी आर डी ऑफिस के बगल के झाड़ी मे फेंका हुआ है। जब हम लोग अपने परिवार के साथ अब्दुल के बताए हुए जगह पर पहुंचे तो पाया कि पुत्र गोपाल की लाश उसी जगह पर मीला। मृतक की मां ने बताया कि मेरे पुत्र को कुछ दिन पहले एक युवक पीट रहा था और बोल रहा था कि तुमने मेरी बकरी चुराने की कोशिश की है अगर आपकी बार ऐसा कुछ किया तो मैं तुम्हें जान से मार दूंगा। झाड़ी में से जब मेरी पुत्र की लाश निकाली गई उसके गर्दन पर कई जगह चाकू मारे हुए थे एवं उसके शरीर को आग से जलाने की कोशिश की गई है। इस संबंध में खगौल थाना प्रभारी फुल देव चौधरी ने बताया कि मृतक की लाश काफी फूली हुई है। पुलिस लाश को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम करवाते हुए मृतक के परिजनों को सौंप दिया है। वहीं पुलिस हत्यारों की तलाश में छापेमारी कर रही है। जब तक पोस्टमार्टम रिपोर्ट नहीं आ जाता हैं बताना मुश्किल है कि मृतक की हत्या कैसे की गई है।

एनएच जाम करने से वाहन चालक हुए परेशान

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। जन अधिकार पार्टी के द्वारा शिक्षक बहाली प्रक्रिया में डोमिसाइल नीति लागू किए जाने को लेकर सड़क जाम कर विरोध प्रदर्शन रविवार को किया गया था। एनएच 30 के पटना-मसौढ़ी मोड़ के पास जन अधिकार पार्टी के नेताओं और कार्यकताओं ने रोड पर आगजनी की।

इस दौरान जाप सुप्रीमो पप्पू यादव ने लोगों को संबोधित भी किया। स्थिति यह रही कि एनएच 30 के पूरब और पश्चिम की ओर वाहनों का लंबा जाम लगा रहा। यही नहीं पटना-मसौड़ी रोड की ओर जाने वाले और उधर से आने वाले वाहनों का भी दबाव रहा। इस कारण से उस और भी वाहन लाइन से खड़ा था। जाम के कारण बस पड़ाव से समय से बस नहीं खुल पा रही थी। इसके पीछे कारण रोड का जाम होना भी था जब पार्टी के द्वारा सड़क जाम हटा लिया गया इसके करीब 2 घंटे के बाद यातायात सामान्य हो पाया इस दौरान लोग बेहाल दिखे स्थिति यह रही कि एनएच30 से कटकर वाहन अगम कुआं आरोपी से होते हुए ओल्ड बायपास पकड़कर आगे निकले इस कारण से पुरानी बाईपास में भी वाहनों का दबाव देखा गया जाम में फंसे खासकर बस और फोर व्हीलर सवार बिहाल दिखे तो अपने गंतव्य तक जाने में हो रही देरी से भी वह बेचैन दिख रहे थे।

व्यापार मंडल व्यापारी गेस्ट हाउस का करेगा शुभारंभ

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। पटना सिटी एक ऐतिहासिक, धार्मिक व व्यापारिक नगरी है। यहां प्रतिदिन बाहर से हजारों व्यापारी किराना, प्लास्टिक, सौंदर्य प्रसाधन के सामान आदि खरीदने आते हैं। लेकिन उनके ठहराव या रात्रि विश्राम का कोई प्रमुख साधन नहीं रहने के कारण खासा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उन्हें पटना के निम्न स्तरीय होटलों में शरण लेनी पड़ती है। पटना सिटी व्यापार मंडल व्यापारियों के हित के लिए व्यापार मंडल द्वारा मच्छरहट्टा में निर्मित शौचालय के उपरि मंजिल पर सस्ते दर में व्यापारी गेस्ट हाउस का शुभारंभ करने का निर्णयलिया है। मंडल की कार्यसमिति की बैठक में यह निर्णय लिया गया, जिसकी अध्यक्षता प्रदीप सिंह यादव तथा संचालन महासचिव अवधेश कुमार सिन्हा ने किया।

बैठक में इसके लिए अमित वर्मा व मनीष रोशन को संयुक्त रूप से प्रबंधक नियुक्त किया गया है तथा इसकी निगरानी के लिए शारदानंद प्रसाद के संयोजकत्व में पांच सदस्यीय समिति का भी गठन किया गया है, जिसमें सरदार गुरुचरण सिंह आशिक, राजकुमार शर्मा, निशांत सिन्हा तथा विवेक कुमार शामिल हैं ' बैठक में दिलीप कुमार, उदय राय, असगर अली आदि उपस्थित थे।

महिला से लूटपाट के चार घंटे बाद दो अपराधी गिरफ्तार

प्रात :किरण संवाददाता

पटना सिटी। अगमकुआं थाना की पुलिस ने महिला से लूटपाट करने वाले गिरोह के दो सदस्यों को गिरफ्तार किया है। लूट के चार घंटे के अंदर दो अपराधियों को गिरफ्तार कर लूटा गया सामान और हथियार भी बरामद किया गया है। थानाध्यक्ष सुधीर कुमार ने बताया कि सुल्तानगंज थाना क्षेत्र की निवासी महिला प्रज्ञा प्राणा से हथियार दिखा डरा कर कुम्हरार आरओबी के पास मोबाइल और अन्य सामान लूट लिया गया। सूचना मिलने के बाद थानाध्यक्ष के नेतृत्व में टीम गठित कर छापेमारी शुरू की गई। सूचना के सत्यापन के बाद इसी थाना क्षेत्र के कुम्हरार के पाकड़ तल का रहने वाला रिक्की कुमार और राजा कुमार उर्फ ढनढन को गिरफ्तार किया गया। इन दोनों के पास से देसी पिस्तौल, लूटा गया एक आईफोन, एक चार्जर, दो एटीएम, पैन कार्ड, आधार कार्ड, पर्स और एक ईयर बैंड मिला है। छापेमारी दल में दारोगा कुमारी उषा सिन्हा, राम सहोदर व सौरभ कुमार के साथ सिपाही दीपक कुमार, अजीत कुमार, संजीव कुमार, दीपक शामिल थे।

महागठबंधन व एनडीए की बैठक से पहले सियासी बयानबाजी जोरो पर

मैदान में उतरने से पहले हीं भाजपा हार मान चुकी है : गगल

पटना। राजद प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने कहा है कि विपक्षी एकता से डरी हुई भाजपा मैदान में उतरने से पहले हीं हार मान चुकी है। उसी का परिणाम है कि जिस मृतप्राय हो चुकी एनडीए की बैठक पिछले नौ वर्षों में एक बार भी नहीं हुई उसकी अब तथाकथित बैठक होने वाली है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि भाजपा नेतृत्व के तानाशाही, अलोकतांत्रिक और देश विरोधी रवैए के कारण जिस एनडीए के सभी पूर्व प्रमुख सहयोगी साथ छोड़ चुके हैं वहीं भाजपा अब वैसे दलों की भी चिरौरी करते नजर आ रही है जिनका जनाधार मात्र कुछ विधानसभा क्षेत्रों तक हीं सीमित है। इसमें ऐसे दल भी हैं जिसके विधायक हेट स्पीच के मामले में जेल में बंद हैं और भाजपा जिनके पिता जी पर माफियागिरी का आरोप लगाती रही है। राजद प्रवक्ता ने कहा कि पटना में गत 23 जून को हुए गैर भाजपा दलों के शीर्ष नेताओं की बैठक की ऐतिहासिक सफलता और आगामी 18 जुलाई को बंगलोर में होने वाली बैठक के बढ़ते दायरे से भाजपा काफी परेशान हो गई है। और यही वजह है कि जिसके राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा साहब कुछ दिन पहले तक क्षेत्रीय दलों को समाप्त कर देने की घोषणा कर रहे थे आज छोटे - छोटे दलों के दरवाजे खट-खटा रहे हैं। उन्हें तरह - तरह के प्रलोभन दिए जा रहे हैं। राजद प्रवक्ता ने कहा कि संविधान और लोकतंत्र के साथ हीं देश की एकता और सामाजिक समरसता पर मंडरा रहे खतरे को भांपकर राजद के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और उपमुख्यमंत्री तेजस्वी के द्वारा बिहार में जो पहल किया गया उसका व्यापक असर आज राष्ट्रीय स्तर पर देखने को मिल रहा है। बंगलोर में होने वाली बैठक में शामिल होने वाले दलों की संख्या दो दर्जन पहुंच गई है। जिसमें देश के अधिकांश दिग्गज नेता भाग लेने जा रहे हैं। उसी दिन से केन्द्र की भाजपा सरकार की उलटी गिनती शुरू हो जाएगी।

बिहार के फामूर्ले पर ही महागठबंधन की जीत होगी : रणबीर

पटना। लोकसभा चुनाव के लिए विपक्षी दलों की एकता के बारे में जदयू के पूर्व विधान पार्षद डॉ रणबीर नंदन ने कहा है कि बिहार में महागठबंधन की बैठक सम्पन्न होने के बाद दूसरी बैठक बेंगलुरु में होने जा रही है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अथक प्रयास कर सभी विपक्षी दलों को जोड़ने का कार्य किया। विपक्षी दलों को एक प्लेटफॉर्म पर लाने का कार्य किया, वह अतुलनीय है। और महागठबंधन की दूसरी बैठक निश्चित रूप से पूरे भारत में यह मैसेज देगी, कि यदि भाजपा के खिलाफ सम्मिलित विपक्ष का एक प्रत्याशी लड़ाया जाएगा तो देश में महागठबंधन की सरकार बनने से कोई रोक नहीं सकता। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने बिहार जैसे बीमारू राज्य को अपनी इच्छाशक्ति, दूरदर्शिता और विकासवादी सोच के जरिए सबसे तेज विकास दर वाले राज्यों की सूची में ला दिया है। डॉ नंदन ने कहा कि 2024 में महागठबंधन में विपक्षी दलों की एकजुटता निश्चित तौर पर केंद्र की सत्ता में बदलाव ला देगी। 2014 में भी अगर सभी दलों ने एकजुटता दिखाई होती, तो भाजपा सत्ता तक पहुंचती ही नहीं। 2014 के एनडीए में जदयू शामिल नहीं था, जिसका नतीजा था कि एनडीए को जीत तो 31 सीटों पर मिली थी लेकिन वोट सिर्फ 39 फीसदी ही मिला था। जबकि विपक्ष में अलग अलग चुनाव लड़ने वाले दलों को जीत सिर्फ 9 सीटों पर मिली थी लेकिन वोट का प्रतिशत भाजपा और एनडीए के मुकाबले कहीं अधिक था। 2019 में श्री नीतीश कुमार के करिश्मे के कारण एनडीए का वोट शेयर 54 फीसदी से अधिक था, जिसके कारण नरेंद्र मोदी को सत्ता की कुर्सी मिली थी। डॉ नंदन ने कहा कि बिहार की राजनीति समाजवाद और विकासवाद की राजनीति है।

विपक्षी दलों में विश्वास कायम करने के लिए हुआ लाठीचार्ज : मनोज

पटना। भाजपा के पूर्व विधायक सह प्रवक्ता मनोज शर्मा ने कहा कि विपक्षी दलों के बीच में अपनी विश्वसनीयता को कायम करने के लिए भाजपा पर लाठीचार्ज किया गया है। कहा कि जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भाजपा के जहानाबाद महामंत्री स्वर्गीय विजय कुमार सिंह की मौत के बाद प्रशासन को क्लीन चिट देने में जुट गए, ललन सिंह पूरी तरह से प्रशासनिक भाषा बोल रहे हैं और प्रशासन को बचाने के लिए तरह-तरह के हथकंडे अपना रहे हैं। चुकी, ललन सिंह ना तो जेपी आंदोलन की उपज है और ना ही किसी बड़े आंदोलन में वह शामिल हुए तो, उन्हें इस बात का दर्द है ही नहीं कि कार्यकर्ता किस तरह से पार्टी से जुड़े रहते हैं और कार्यकर्ता किस तरह से आंदोलन करते हैं। जिस तरह से जदयू नेताओं ने भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओं पर आरोप लगाया है वह सरासर बेबुनियाद है। कहीं भी भाजपा के नेता और कार्यकर्ता उग्र नहीं हुए हैं। लाठीचार्ज करना पूरी तरह से सरकार की सुनियोजित साजिश थी। प्रशासन को पहले से ही यह निर्देश दिया गया था और प्रशासन ने जो मनगढ़ंत बातें कही है वह पूरी तरह से झूठ का पुलिंदा है। ना तो मिर्ची स्प्रे का सबूत मिला है ना ही भाजपा नेताओं ने कोई रोड़ा पत्थर चलाया है। किसी भी तरह से भाजपा के नेता और कार्यकर्ता उग्र नहीं थे। कहा कि महागठबंधन की सरकार जिस तरह से दमनकारी नीतियों पर चल रही है उन्हें याद करना चाहिए कि जिस तरह से पंजाब-हरियाणा के किसानों ने दिल्ली के बॉर्डर इलाकों को अपने आंदोलन से सील कर दिया था। उन्होंने 2 साल तक इस आंदोलन को जारी रखा था। सरकार ने कभी भी उन पर लाठी नहीं चलाया, सरकार की तरफ से कभी भी उन्हें चोट नहीं दी गई। यह होता है लोकतंत्र और लोकतंत्र में रहने वाली जनता की भावनाओं का कद्र करना।

भाजपा के अच्छे दिन अब समाप्त होने वाले हैं : राजीव

पटना। आगामी लोस चुनाव में सत्ता परिवर्तन होने का दावा करते हुए जदयू के राष्ट्रीय महासचिव व प्रवक्ता ने आज कहा है कि आगामी लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी दलों की एकजुटता ने भाजपा को अंदर से दहला दिया है। इसी बौखलाहट को छिपाने के लिए इनके आक्रामक दिखने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इनकी अंदरूनी उठापटक सारे किये कराए पर पानी फेर देती है। वास्तव में झूठ और दुष्प्रचार के तेल से जल रहा इनका राजनीतिक दीया अब अंतिम सांसे ले रहा है। भाजपा भी जानती है कि उनके अच्छे दिन अब समाप्त होने वाले हैं। जनता की अदालत में वह एक्सपोज हो चुके हैं। भाजपा के 400 सीट जीतने के दावे को खोखली हवाबाजी बताते हुए उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता जानते है कि आगामी लोकसभा में जनता उनका बोरिया-बिस्तर बांधने वाली है। इसीलिए वह अभी से जीत का दावा कर अपनी खस्ता हालत को छिपाने का प्रयास कर रहे हैं। भाजपा नेताओं को यह जान लेना चाहिए कि उनकी जुमलेबाजी का जनता पर कोई असर नहीं होने वाला। इस बार इनके लिए 400 सीटें जीतना तो दूर की बात है इनके लिए 100 सीटों तक पहुंचना भी मुश्किल हो जाएगा। वास्तव में यह लोग लंबे लंबे दावे कर और झूठे आरोप लगाकर अपनी झेंप मिटाने में लगे हैं। यह अपने डर को जनता से छिपाने और उन्हें बरगलाने का इनका प्रयास भर है, जो कभी पूरा नहीं होने वाला है। राष्ट्रीय महासचिव ने कहा कि संभावित हार के डर से भाजपा में विद्रोह की स्थिति बनी हुई है, इनके सभी सांसद यह जान चुके हैं कि इस बार बिहार में उनका सूपड़ा साफ होने वाला है। हर कोई इसका दोष दूसरे के सर पर डाल रहा है। आगामी चुनाव से पहले यदि इनमे एक बड़ी टूट हो जाए तो किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की तारीफ करते हुए उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पूरे विपक्ष को एकजुट कर के यह दिखा दिया है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक उनकी लोकप्रियता और स्वीकार्यता कितनी अधिक है। उनकी मेहनत आगे भी रंग लाएगी और उनके प्रयासों से जनता द्वारा भाजपा मुक्त भारत का देखा जा रहा सपना पूरा हो जाएगा।

समान आचार संहिता को पूरे देश में लागू होना चाहिए : भाजपा

पटना। बिहार भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रेम रंजन पटेल ने कहा कि समान आचार संहिता को पूरे देश में लागू होना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी साफ बोले हैं कि बीजेपी वोट बैंक की राजनीति नहीं करती है। समान आचार संहिता देश के हित में है। भाजपा प्रवक्ता ने कहा कि बिहार में इसका विरोध महागठबंधन के नेता धर्म विशेष के लोगों को खुश करने के लिए कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि समान आचार संहिता लागू होने से देश के हर एक नागरिक पर एक जैसा कानून लागू होगा, चाहे वह किसी भी धर्म, संप्रदाय और जाति के लोग होंगे। इससे सबको फायदा है। शादी, तलाक, गोद लेने और उत्तराधिकारी स्थापित करने जैसे जमीन जायदाद के मुद्दे में एक जैसा कानून लागू करना ही समान आचार संहिता का उद्देश्य है। भारत में आपराधिक कानून हर एक नागरिक के लिए सामान है, जबकि नागरिक कानून देश में मौजूद अलग-अलग धर्म और वर्गों के द्वारा उनके धर्मों के अनुसार पर्सनल कानून फॉलो किए जाते हैं। हिन्दु धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिख धर्म के द्वारा 1956 से ही हिंदू कोड बिल को फॉलो किया जाता है, जिसे संविधान में मान्यता दी गई है। उन्होंने कहा कि देश के संविधान में अनुच्छेद 44 में भी समान नागरिक संहिता का वर्णन मिलता है। उसमें यह कहा गया है कि अगर राज्य चाहे तो समान नागरिक संहिता को लागू कर सकता है। समान नागरिक संहिता का मुख्य उद्देश्य सभी धर्मों को समान रूप से मान्यता देना है और विभिन्न धर्मों के बीच व्यापक भेदभाव और पक्षपात को खत्म करना है। लेकिन नीतीश कुमार एक विशेष धर्म के लोगों को खुश करने के लिए समान आचार संहिता को बिहार में लागू करने से इंकार कर रहे हैं और इसे लेकर ओछी राजनीति कर रहे हैं।

बिहार में यूसीसी लागू नहीं करने का सरकार का फैसला सराहनीय : माले

पटना। भाकपा-माले राज्य सचिव कुणाल ने कहा है कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा राज्य में यूसीसी लागू नहीं करने का फैसला सराहनीय है। राज्य में एनआइए की गैरकानूनी गतिविधियों पर भी रोक लगाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि लोकसभा चुनाव के ठीक पहले भाजपा यूसीसी के जरिए देश में एक बार फिर सांप्रदायिक उन्माद फैलाने की प्रयास में है। केंद्र सरकार ने प्रस्तावित यूसीसी के स्वरूप और विषय-वस्तु के बारे में अबतक कोई ठोस प्रस्ताव भी नहीं दिया है लेकिन संघ-भाजपा का प्रचारतंत्र मुस्लिम समुदाय को बदनाम करने में जुट गया है। यूसीसी का जितना विरोध मुस्लिम समुदाय की ओर से हो रहा है, उससे कई ज्यादा गुना ज्यादा विरोध मेघालय और नागालैंड जैसे पूर्वोत्तर के राज्यों और पूरे देश के आदिवासी समुदायों द्वारा किया जा रहा है। यूसीसी का एजेंडा, मुसलमानों का खलनायकीकरण करने और समाज को सांप्रदायिक आधार पर बांटने की व्यापक परियोजना का हिस्सा है। लव जिहाद के विषाक्त मिथक को प्रसारित और प्रचारित किया जा रहा है तथा मुस्लिम आबादी, हिंदुओं की आबादी से ज्यादा हो जाएगी के निराधार और बेतुके नैरेटिव का उपयोग कर यूसीसी को स्वीकार्य बनाने की कोशिशें हो रही हैं। ऐसे में हमारा दायित्व बनता है कि सरकार के इस कुत्सित षड़यंत्र को सफल नहीं होने दिया जाए. आज देश की जनता बेरोजगारी और जीवनयापन के बढ़ते खर्च से परेशान है। यूसीसी का मुद्दा छेड़कर भाजपा इन प्रश्नों पर चर्चा से बचना चाहती है। भारत को आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक राज्य बनाने के लक्ष्य की राह के हर रोड़े को दूर करने का प्रयास करना चाहिए और सामाजिक दमन और हिंसा पर आधारित मनु की संहिता को देश पर लादने के हर प्रयास का विरोध करना चाहिए। हम सब लैंगिक न्याय और समानता के पक्षधर हैं, लेकिन यूसीसी के बहाने सांप्रदायिक ध्रुवीकरण और मुसलमानों को खलनायक के रूप में प्रस्तुत करने की राजनीति के हम पूरी तरह खिलाफ हैं। माले राज्य सचिव ने यह भी कहा कि बिहार में तो भाजपा एनाआइए के जरिए लगातर मुस्लिम समुदाय में आतंक की स्थिति पैदा किए हुए है. फुलवारीशरीफ से लेकर दरभंगा तक हर कहीं, एनआइए का आतंक जारी है। हम बिहार सरकार से मांग करते हैं कि वह एनआइए की गैरकानूनी गतिविधियों पर भी रोक लगाने के लिए ठोस कदम उठाए।

पूराने साथी को खोना जदयू के लिये अपूरणीय क्षति : उमेश

पटना। पार्टी के पूर्व विधान पार्षद एवं बेनीपुर के विधायक सह पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अजय कुमार चौधरी के बड़े भाई विनोद कुमार चैधरी के आकस्मिक निधन पर जदयू ने गहरी शोक-संवेदना व्यक्त किया हैं। पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि विनोद चैधरी समता पार्टी काल से पार्टी के प्रति पूरी निष्ठा के साथ समर्पित रहे है। पार्टी के लिये उनका योगदान अविस्मरणीय है। अथाह दुख के इस घड़ी में ईश्वर उनकी आत्मा को शांति और उनके परिवार को संबल प्रदान करें। उन्हें मेरी विनम्र श्रद्धांजलि। शोक-संवेदन व्यक्त करने में बिहार विधान परिषद के मुख्य सचेतक संजय कुमार सिंह गांधी जी, पार्टी के राष्ट्रीय सचिव सह विधान पार्षद रविन्द्र प्रसाद सिंह, ललन कुमार सर्राफ, नीरज कुमार, मुख्यालय प्रभारी अरूण कुमार सिंह, चंदन कुमार सिंह, वासुदेव कुशवाहा, सुनील कुमार सुशील, मनीष कुमार एवं श्री रणविजय कुमार, पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता सह पूर्व विधायक मंजीत सिंह, वीरेन्द्र सिंह दांगी आदि प्रमुख हैं।

डोमिसाइल नीति को खत्म करना राज्य के युवाओं के साथ धोखा : पप्पू

पटना। शिक्षक नियुक्ति में डोमिसाइल नीति लागू किये जाने की मांग को लेकर जनाधिकार पार्टी आज राज्यभर में विरोध प्रदर्शन कर रही है। इसी कड़ी में आज रविवार को जनाधिकार पार्टी के सुप्रीमो और पूर्व सांसद पप्पू यादव के नेतृत्व में जनाधिकार पार्टी के कार्यकताओं ने जीरो माइल गया मोड़ के पास फोरलेन सड़क को जाम कर जमकर विरोध प्रदर्शन कर बिहार सरकार से राज्य में शिक्षक बहाली में डोमिसाइल नीति को लागू किये जाने की मांग की। चक्का जाम को सम्बोधित करते हुए जाप सुप्रीमो पप्पू यादव ने कहा कि राज्य में शिक्षक बहाली में डोमिसाइल नीति को खत्म करना राज्य के युवाओं का साथ धोखा है। महागठबंधन सरकार को शिक्षक नियमावली में बदलाव कर शिक्षक बहाली में डोमिसाइल नीति को लागू करना चाहिए। अगर यहां के युवाओं को अगर राज्य में ही नौकरी नहीं मिलेगी तो वे कहां जायेंगे। इससे अपने राज्य के बेरोजगारों पर असर पड़ेगा। जो युवा शिक्षक बनने की उम्मीद लिए बैठे है। उन्हें इससे काफी परेशानी होगी। सरकार को अपने राज्य के बेरोजगार युवाओं के हित के बारे में भी सोचना चाहिये। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार की गलत नीतियों के कारण देश भर में बेरोजगारों की संख्या में बेहताशा बढ़ोतरी हुई हैं। हम चाहते है कि शिक्षक नियुक्ति में डोमिसाइल नीति लागू हो। अगर जनाधिकारी पार्टी की मांग पूरी नहीं हुई तो आगे भी आंदोलन किया जाएगा। प्रदेश अध्यक्ष राघवेन्द्र कुशवाहा, पटना जिला अध्यक्ष सचिदानन्द यादव और महानगर अध्यक्ष आदि मेहता के नेतृत्व में हो रहे प्रदर्शन में, राष्ट्रीय महासचिव व प्रवक्ता प्रेमचन्द सिंह, राष्ट्रीय महासचिव राजेश रंजन पप्पू, युवा प्रकोष्ठ अध्यक्ष राजू दानवीर सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

अतिपिछड़ा वर्ग के विकास के लिए लोजपा रा प्रतिबद्ध : सत्यानंद

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

लोजपा रा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह सांसद चिराग पासवान के नेतृत्व में अतिपिछड़ा वर्ग के शैक्षणिक, आर्थिक, समाजिक और राजनैतिक विकास के लिए पार्टी संघर्ष करेंगी। रविवार को लोजपा रा के राज्य मुख्यालय में आयोजित अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के राज्य समिति की बैठक में यह फैसला लिया गया। बैठक को संबोधित करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. सत्यानंद शर्मा, युवा लोजपा के राष्ट्रीय महासचिव अनिल कुमार पासवान, अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय प्रधान महासचिव संजीव कानू, प्रदेश उपाध्यक्ष रामभरोस शर्मा ने कहा कि अतिपिछड़ा समाज निर्णायक संघर्ष करेंगा और सत्ता प्राप्त करेंगा। चिराग पासवान को 2025 में मुख्यमंत्री बनायेगा। चिराग पासवान ने अतिपिछड़ों के लिए जो कार्य-योजना तैयार किया है उससे अतिपिछड़ों को सत्ता और संपत्ति प्राप्त होगा। बैठक में सर्वसम्मत से मनोज कुमार को प्रदेश का प्रभारी अध्यक्ष चुना गया। उन्हें संगठन की ओर से चांदी का मुकुट पहना कर ताजपोशी किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एससी/एसटी के प्रदेश अध्यक्ष परशुराम पासवान और संचालन अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय महासचिव मो अफरोज आलम ने किया। कार्यक्रम में अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय महासचिव ललन शाह, पार्टी के प्रधान महासचिव संजय पासवान, अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश उपाध्यक्ष नन्द किशोर शर्मा, परमानंद शर्मा, बाल कृष्ण शाह, मनोज चंद्रवंशी, अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव अमरदीप जयसवाल संबोधित किया। उक्त आशय की जानकारी अतिपिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश प्रवक्ता रमेश कुमार ने दिया।

रिश्तों की असलियत का पोस्टमार्टम है हिन्दी नाटक सच कहूं तो !

जननायक नाट्य महोत्सव का दूसरा दिन

पटना। बिहार की लोकप्रिय संस्थान क्रिएशन द्वारा संस्कृति मंत्रलय के सहयोग से और संस्कार भारती और रॉक एन रॉल के संयुक्त तत्त्वाधान में तीन दिवसीय जननायक नाट्य महोत्सव के दूसरे दिन युवा रंगमंच रांची द्वारा अगथा क्रिस्टी द्वारा लिखित नाटक सच कहूं तो का मंचन देश के लोकप्रिय नाट्य निर्देशक अजय मलकानी के निर्देशन में सम्पन्न हुआ। आज नाट्य मंचन के पूर्व प्रेक्षागृह में सर्वश्री पंकज कुमार, और जितेन्द्र चौरसिया मौजूद थे। उन्हें संस्थान की ओर स्मृति चिह्न दिया गया। नाटक शुरू होता है- एक कत्ल से। कत्ल होता है मिस सिरीन वाडिया का। इस जूर्म के शक पर गिरफ्तार होता है नितिन जाधव---- और शुरू होता है कोर्ट रूम ड्रामा सच कहूं तो। अपराध, रहस्य और रोमांच की विश्व प्रसिद्ध लेखिका क्रिस्टी की दी विटनेस फॉर प्रॅजेक्यूशन का हिन्दी रूपांतरण है सच कहूं तो। सच क्या है? दोषी कौन है? इसी की तपतीश होती है। सबूत, गवाह और जिरह के जरिये। पक्ष और विपक्ष वकीलों का भिड़न्त शक को यकीन में और यकीन को भ्रम में बदलता रहता है। असल मुजरिम की तलाश में रिश्तों की असलियत सामने आने लगती है, और अंत में जब सच सामने आता है तब सब भौचक्क हो जाते हैं। धनवाद बुजुर्ग और मिस वाडिया की मौत, साजिश है या इतेफाकन हादसा? यहां कथासार मौन रहेगा, लेकिन, ह्यसच कहूं तो नाटक मुखर होकर खुल्लम खुल्ला, साफ-साफ सच बताएगा, इतना तय है? प्रदर्शन को विनोदी रोमांचक बनाने के लिए संगीत और कहीं-कहीं चरित्रें के विपरीत चित्रण किये गये हैं। मंच विन्यास सरल और सपाट रखा गया है ताकि अभिनेताओं को ज्यादा मौका दिया जा सके।

समाज को बांटकर सत्ता में बने रहना भाजपा का एकमात्र एजेंडा : उमेश

पटना। जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने सहरसा के सर्किट हाउस में पत्रकारों से बातचीत के क्रम में बताया कि देश आज बेहद ही नाजुक मोड़ पर खड़ा है। सिर्फ अपने राजनीतिक हितों की परिपूर्ति के लिए भाजपा संवैधानिक मूल्यों का मजाक बना रही है। संविधान में प्रदत्त मौलिक अधिकारों से आम नागरिकों को वंचित रखने की साजिश रची जा रही है। हिटलर के रास्ते पर चल रही भाजपा ने भारत के लोकतंत्र को लहूलुहान करने का काम किया है। आम जनता बेरोजगारी और महंगाई सहित अनेकों प्रकार की बुनियादी समस्याओं से बदहाल है मगर भाजपा के लोग जनहित के मुद्दों पर बात नहीं करना चाहते हैं, समाज को बांटकर सत्ता में बने रहने के लिए नफरत और उनमाद फैलाना ही इनका एकमात्र उद्देश्य है। श्री कुशवाहा ने कहा कि जनविरोधी नीतियों पर चल रही भाजपा को सबक सिखाने के लिए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी की अगुवाई में विपक्षी पार्टियों की महाबैठक बीते 23 जून को पटना में आयोजित की गई थी। इस महाबैठक में देशभर के विपक्षी पार्टियों ने एक स्वर में भाजपा मुक्त भारत बनाने का संकल्प लिया है लिहाजा भाजपा इस महाबैठक से पूरी तरह की डरी और घबराई हुई है। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि हमारे नेता नीतीश कुमार का विपक्षी एकजुटता का धुरी बनना हम सभी के गौरव का विषय है और आज जिस तरह के हालात हमारे देश में बने हुए हैं, ऐसे हालात में जदयू के कार्यकताओं की भूमिका महत्वपूर्ण होने वाली है। हमनें तय किया है कि हम एकजुट होकर 2024 में फिरकापरस्त और संविधान विरोधी ताकतों को परास्त करेंगे। पत्रकारों द्वारा पूछे गए एक सवाल का जवाब देते हुए प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि हमारी पार्टी किसी विशेष जाति या धर्म की पार्टी नहीं है, हम समाज के सभी वर्गों को एकसूत्र में बांधकर साथ चलने में विश्वास रखते हैं और सभी समाज के लोगों को हमारी पार्टी में एक बराबर सम्मान दिया जाता है।

रामाशंकर सहनी का निधन अपूरणीय क्षति : लालू

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद, पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी, उपमुख्यमंत्री श्री तेजस्वी प्रसाद यादव, वन पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री तेज प्रताप यादव, राज्यसभा सांसद डॉ मीसा भारती ने समाजवादी आंदोलन के नेता और दरभंगा महानगर के अध्यक्ष रामाशंकर साहनी के आकस्मिक निधन पर गहरी शोक संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि इनके निधन से समाजवादी आंदोलन और राजद परिवार को अपूरणीय क्षति हुई है। ये अपने कार्यों के प्रति काफी कर्मठ एवं ईमानदार थे। ईश्वर शोकाकुल परिवार को दुख सहने की शक्ति प्रदान करे। प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद ने बताया कि इनके निधन का समाचार सुनते ही सम्मान में राजद का झंडा आधा झुका दिया गया। इनके निधन पर राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगदानन्द सिंह, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उदय नारायण चौधरी, राष्ट्रीय प्रधान महासचिव अब्दुल बारी सिद्दिकी, राष्ट्रीय महासचिव देवेन्द्र प्रसाद यादव, भोला यादव, श्याम रजक, लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण मंत्री ललित यादव, उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेठ, सांसद फैयाज अहमद, प्रदेश उपाध्यक्ष वृषिण पटेल, शिवचन्द्र राम, प्रदेश के प्रधान महासचिव रणविजय साहू, प्रदेश राजद के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह यादव, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, ऋषि मिश्रा, पूर्व विधायक श्री रामाशीष यादव, महासचिव मो फैयाज आलम कमाल अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अरविंद कुमार साहनी सहित राजद के अन्य नेताओं ने निधन पर गहरी शोक संवेदना प्रकट करते हुए कहा कि इनके निधन से राज्य ने 74 आंदोलन का एक मजबूत स्तंभ को खो दिया, इनकी कमी हमेशा महसूस की जाएगी। ज्ञात हो कि इनका निधन हृदय गति रुक जाने से हुआ ये वर्तमान में राष्ट्रीय जनता दल दरभंगा महानगर के अध्यक्ष थे।

पूर्व एमएलसी के निधन पर सभापति ने जताया शोक

पटना। बिहार विधान परिषद के सभापति देवेश चंद्र ठाकुर ने बिहार विधान परिषद् के पूर्व सदस्य विनोद कुमार चौधरी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। सभापति ने अपने शोक संदेश में कहा कि प्रोफेसर चौधरी एक वरिष्ठ समाजशास्त्री और कुशल राजनेता थे।मिथिला एवं मैथिली के विकास के लिए हमेशा सक्रिय रहे। उनके निधन से राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है। दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की एवं शोक संतप्त परिजनों के प्रति संवेदना व्यक्त की है।

गया-पटना मेमू पैसेंजर स्पेशल के समय सारणी में बदलाव

पटना। गया और पटना के मध्य चलने वाली गाड़ी सं. 03340 गया-पटना मेमू पैसेंजर स्पेशल के समय सारणी में संशोधन किया जा रहा है। दिनांक 17.07.2023 से यह स्पेशल गया से 15.00 बजे के बजाए 15.30 बजे खुलकर पटना जं. 17.55 बजे के बजाए 18.10 बजे पहुंचेगी। दिनांक 17.07.2023 से 03340 गया-पटना मेमू पैसेंजर स्पेशल गया से 15.30 बजे खुलकर 15.42 बजे चाकंद, 15.47 बजे ओर हाल्ट, 15.54 बजे बेला, 15.59 बजे बराबर हाल्ट, 16.03 बजे नेर हाल्ट, 16.09 बजे वाणावर-कोटेश्वरनाथ धाम, 16.13 बजे मखदुमपुर गया, 16.19 बजे टेहटा, 16.23 बजे मीराबीघा हाल्ट, 16.27 बजे नियाजीपुर हाल्ट, 16.32 बजे मई हाल्ट, 16.37 बजे जहानाबाद कोर्ट, 16.53 बजे जहानाबाद, 16.58 बजे कड़ौना हाल्ट, 17.04 बजे नदौल, 17.08 बजे तिनेरी हाल्ट, 17.13 बजे तारेगना, 17.22 बजे नदवां, 17.26 बजे नीमा हाल्ट, 17.31 बजे पोठही, 17.36 बजे जटडुमरी हाल्ट, 17.40 बजे पुनपुन, 17.44 बजे पुनपुन घाट, 17.48 बजे रामगोविंद सिंह महुली हाल्ट, 17.54 बजे परसा बाजार रुकते हुए पटना जं. 18.10 बजे पहुंचेगी।

कवि घनश्याम की शायरी में जमाने का दर्द भी और दवा भी

डा जगदीश पाण्डेय की जयंती पर गजल संग्रह खुशबू-खुशबू रात गजल है का हुआ लोकार्पण

- कवि प्रेम किरण को दिया गया स्मृति सम्मान, आयोजित हुई कवि-संगोष्ठी

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

स्मृति शेष कवि घनश्याम छंद पर अधिकार रखने वाले एक गम्भीर और संवेदनशील शायर थे। उनकी शायरी में जमाने का दर्द भी था और उसकी दवा भी थी। उनका भाव-पक्ष भी श्रेष्ठ था और कला-पक्ष भी। उनकी काव्य-प्रतिभा का लाभ हिन्दी जगत को मिलना आरंभ ही हुआ था कि विधाता ने उन्हें हमसे छीन लिया। साहित्य-जगत को उनसे बड़ी उम्मीदें थीं। उक्त बातें रविवार को बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष डा जगदीश पाण्डेय की जयंती पर कवि घनश्याम के गजल-संग्रह खुशबू-खुशबू रात गजल है का लोकार्पण करते हुए, सम्मेलन अध्यक्ष डा अनिल सुलभ ने कही। डा जगदीश पाण्डेय को स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि पराभव के गर्त में जा चुके साहित्य सम्मेलन के उद्धार में उनका बड़ा ही योगदान था। वे साहित्य समेत सभी सारस्वत सरोकारों से गहरे जुड़े हुए एक कोमल भावनाओं से युक्त उदार व्यक्ति थे। साहित्य और साहित्यकारों के पक्ष में सदल-बल खड़े रहने वाले पाण्डेय जी सदैव स्मरण किए जाते रहेंगे। समारोह का उद्घाटन करते हुए पटना उच्च न्यायालय की अवकाश प्राप्त न्यायाधीश और चाणक्य राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय की कुलपति न्यायमूर्ति मृदुला मिश्र ने कहा कि साहित्य और साहित्यकारों के प्रोत्साहन के लिए बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के योगदान को कभी भुलाया नही जा सकता। मुख्य अतिथि और पटना उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति हेमन्त कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि कवि घनश्याम मंचों के अत्यंत महत्वपूर्ण कवि थे।

पुस्तक पर अपना विचार रखते हुए वरिष्ठ साहित्यकार भगवती प्रसाद द्विवेदी ने कहा कि यह संग्रह का एक ऐसा दर्पण है, जिसमें हर पाठक अपना चेहरा देख सकता है। सम्मेलन के प्रधानमंत्री डा शिववंश पाण्डेय ने विस्तारपूर्वक सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यदि मुझे सम्मेलन का इतिहास लिखने का अवसर मिल सका तो मैं इसे पाँच काल-खंडों में बाँट कर मूल्यांकन करूँगा, जिनमे एक खंड जगदीश पाण्डेय का अवदान काल होगा और दूसरा वर्तमान का उन्नयन-काल। सम्मेलन के उपाध्यक्ष डा शंकर प्रसाद, डा मधु वर्मा, डा कल्याणी कुसुम सिंह, कवि घनश्याम के पुत्र एकलव्य केसरी, उनकी विधवा उषा किरण, आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आयोजित कवि-सम्मेलन

संक्षिप्त खबरें

शिक्षक और शिक्षिकाओं का चहक प्रशिक्षण का हुआ समापन

बखरी, बेगूसराय। प्रखंड अंतर्गत बीआरसी बखरी में दो दिनों से चल रहे चहक प्रशिक्षण का शनिवार को विधिवत समापन हो गया। चहक प्रशिक्षण कक्षा एक के शिक्षिक/शिक्षिका के उन्मुखिकरण के लिए मास्टर ट्रेनर मो फैयाज अहमद तथा दिलीप कुमार के द्वारा प्रखंड स्तर पर दिया गया। प्रत्येक विद्यालय से कक्षा एक के पूर्णकालिक शिक्षक/शिक्षिका को अपने अपने विद्यालय में 17 जुलाई से लगातार तीन महीने तक चहक गतिविधि करना है। अहमद ने बताया कि स्कूल रेडिनेस मॉड्यूल के तहत चहक का एक दिवसीय गैर आवासीय प्रशिक्षण निदेशक प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा विभाग, बिहार पटना एवं जिला कार्यक्रम पदाधिकारी प्रारंभिक शिक्षा एवं सर्व शिक्षा अभियान बेगूसराय तथा प्रखंड पदाधिकारी बखरी के आदेश के आलोक में सुनिश्चित किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य है कि कक्षा एक के बच्चों का भाषा विकास, शारीरिक विकास, बौद्धिक विकास, रचनात्मक विकास, सृजनात्मक विकास, सामाजिक और व्यावहारिक विकास का ज्ञान पूर्णरूपेण हो सके। प्रशिक्षण में नाजिया फरहीन, वंदना कुमारी, संजीव रजक, अजलम, ममता कुमारी, नौशाद आलम, प्रियंका कुमारी, रूबी कुमारी, बौये लाल, इम्तियाज अहमद आदि शामिल थे।

जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों में मारपीट

मधुबनी खजौली थाना क्षेत्र के खजौली पंचायत के वार्ड -1 गांव खजौली में जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षो में मारपीट के दौरान खजौली गांव निवासी आंगनवाड़ी सेविका रेखा राम उनके पति विनोद राम उनकी पुत्री सुगंधा कुमारी चांदनी कुमारी को उनके पटीदार मुनेश्वर राम अजय कुमार राम बिंदेश्वर राम लालबाबू राम द्वारा लाठी डंडा एव पैट से मारपीट कर घायल कर दिया गया. वही मारपीट में सभी घायलों व्यक्ति को स्थानीय लोगो की मदद से सीएचसी खजौली में भर्ती कराया गया.जहाँ सीएचसी में डियूटी पर तैनात सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा. ज्योतींद्र नारायण ने सभी घायल को प्राथमिक उपचार किया. आंगनवाड़ी सेविका रेखा राम ने सीएचसी में इलाज के दौरान बताया कि मेरे पटीदार मुनेश्वर राम एव उनके परिवार की सदस्यों द्वारा मेरा जमीन में लगाया गया बॉस की जाफरी को तोड़ने पर मना करने पर सभी लोग मारपीट कर घायल कर दिया गया.वही विपक्षी पार्टी मुनेश्वर राम उनकी पुत्री गुड़िया देवी और उनका पुत्र सतीश राम का भी इलाज सीएचसी में चल रहा है. सीएचसी प्रभारी डा. जोतीन्द्र नारायण ने बताया कि भर्ती तीनो मरीज का इलाज किया गया है .इस बाबत थानाध्यक्ष सुरेंद्र पासवान ने कहा कि मारपीट की जानकारी प्राप्त हुआ है. आवेदन प्राप्त होने पर कानूनी करवाई की जाएगी।

चकित्सा पदाधिकारी एंव दंत चिकित्सक के सहारे 24 घंटे सीएचसी की जा रही है संचालन

मधुबनी सीएचसी खजौली में चिकित्सक की अभाव में सीएचसी की ओपीडी इमरजेंसी लेबर रूम एव अन्य कार्यो में भारी दिक्कत का सामना करना पड़ता है .इस समस्या को लेकर सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा. जोतीन्द्र नारायण ने बताया कि सीएचसी में प्रतिनियुक्ति तीन चिकित्सक एम.बी.बी.एस. चिकित्सक डा. निखिल कुमार,आयुष चिकित्सक डा. रवि चौधरी, डा. विकास कुमार को स्तानातंरण जिला सिविल सर्जन कार्यालय द्वारा विभिन्न सीएचसी करने के बाद उनके स्थान पर एक भी चिकित्सक पदस्थापित नही करने से सिर्फ एक सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी एव एक दंत चिकित्सक के सहारे 24 घंटे सीएचसी संचालन की जा रही है. उन्होंने कहा कि इन दो चिकित्सक के सहारे सीएचसी संचालन नही हो सकती है.उन्होंने कहा कि बरसात की मौसम में मरीजों की संख्या में ज्यादा बढोत्तरी होने से एक डॉक्टर को सातों दिन 24 घंटे डियूटी करना संम्भव नही है. उन्होंने कहा कि जिला सिविल सर्जन महोदय को चिकित्सक अभाव की त्राहिमाम पत्र भेजकर अविलंब चिकित्सक मुहैया कराने की मांग की है.यदि जिला सिविल सर्जन द्वारा चिकित्सक की समस्या अविलंब दूर नही करते है तो कभी भी सीएचसी बंद होने की कगार पर पहुँच सकता है।

जागरूकता अभियान चलाएगी भाकपा माले : भूषण सिंह

स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों को लेकर 31 जुलाई को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर दिया जायेगा धरना

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर भाकपा माले प्रखंड कमिटी की बैठक में खाद बिज बिजली बास-आवास स्वास्थ्य व शिक्षा क्षेत्रों से जुड़े समस्याएं का समाधान हेतु जागरुकता अभियान 15 अगस्त तक चलाएगी। साथ ही सरकारी सभी अस्पतालों के स्वास्थ्य सेवा में सुधार करने प्राईवेट डॉक्टरों के सेवा शुल्क दो सौ रुपया निर्धारित करने अवैध स्वास्थ्य संस्थानों पर कार्रवाई करने की मांग को लेकर 31 जुलाई को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर धरना दिया जायेगा। जनसमस्याओं मुद्दों को लेकर भाकपा- माले प्रखण्ड कमिटी रक आवश्यक बैठक बस्ती पंचायत स्थित राजपूताना टोला में आयोजित किया गया। बैठक में सदस्यता नवीकरण नए सदस्यों की भर्ती पार्टी शाखा और लोकल कमिटी की गठन करने और किसानों के हितों में खाद - बिज नियमित मुहैया कराने सरकारी एवं प्राईवेट स्कूलो का व्यवस्था में सुधार लाने बिजली की समस्याएं में सुधार लाने विना स्मार्ट व्यवस्था के ही संवेदक के द्वारा जबरन स्मार्ट बिजली मिटर लगाने पर रोक लगाने पचार्धारियों को दखल कब्जा दिलाने भूमि चोर व भू-माफिया के आतंक पर रोक लगाने और सरकारी उप स्वास्थ्य केंद्र सहित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र व अनुमंडल अस्पताल को नियमित चालू करने दवा और डाक्टरों का उपस्थिति सुनिश्चित करने के साथ-साथ प्राईवेट नर्सिंग होम क्लिनिक एवं स्वास्थ्य संस्थानों के संचालकों के द्वारा किए जा रहे आर्थिक शोषण पर रोक लगाने को लेकर पंद्रह अगस्त तक जागरूकता अभियान के तहत प्रचार प्रसार ग्रामीण क्षेत्रों में जनता की बैठक नुक्कड़ सभा करने का निर्णय लिया गया। बैठक को संबोधित करते हुए प्रखंड सचिव भूषण सिंह ने कहा कि स्वास्थ्य विभागों के जनविरोधी नीतियों के कारण अवैध स्वास्थ्य संस्थानों को फलने-फूलने का मौका मिला है तो दूसरी ओर प्राईवेट डॉक्टरों के द्वारा जनसेवा के बदले आम लोगों को शोषण करते हैं सेवा शुल्क 600 रूपया समय अवधि मात्र 15 दिन ही है और रात्री तथा आपातकालीन शुल्क समय व रोगी के अनुसार लिया जाता है इस के अलावा सर्जरी एवं स्वास्थ्य संबंधित जांच शुल्क सरकार के निर्धारित शुल्क से अधिक लिया जाता है। इस शोषणवादी जनविरोधी नीतियों का भाकपा माले तीव्र निंदा करती है और प्रखंड के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों के सभी स्वास्थ्य उप केन्द्रों को चालू करने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र एवं अनुमंडल अस्पताल जयनगर में नियमित डाक्टरों का उपस्थिति और दवा कि व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा अवैध प्राईवेट नर्सिंग होम तथा स्वास्थ्य संस्थानों पर कार्रवाई करने और प्राईवेट डाक्टरों के सेवा शुल्क दो सौ रुपैया व समय सीमा एक महीना निर्धारित करने अन्य जांच शुल्क सरकार के नियमानुसार निर्धारित करने तथा वर्षों से एक ही स्थान पर कार्यरत स्वास्थ्य कर्मचारियों को स्थानांतरण करने की मांग को लेकर 31 जुलाई को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र जयनगर के समक्ष धरना देने का आव्हान किया गया है। बैठक को मुस्तफा महेश्वर पासवान तस्लीम विजय राय गुड्डू गुप्ता फुलो देवी युनुस शिवो देवी महेंद्री देवी ने सम्बोधित किया। बैठक पार्टी के कार्यकताओं ने भाग लिया।

विधायक के पहल पर अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ केंद्र का अगले कुछ दिनों में होगा शुभारंभ

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी खजौली प्रखंड़ क्षेत्र के रसीदपुर पंचायत में विधायक अरुण शंकर प्रसाद के पहल पर कुछ ही दिनों में अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ केंद्र(एपीएचसी) शुभ आरंम्भ होने जा रहा है. विधायक श्री प्रसाद ने कहा कि खजौली सीएचसी केंद्र के अधीनस्थ प्रखंड़ का एक मात्र अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ केंद्र रसीदपुर में खोला जा रहा है.उन्होंने कहा कि इस अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ केंद्र की भवन लगभग 15 वर्ष पूर्व तैयार होने के बाबजूद भी इस स्वास्थ भवन में न तो एक भी चिकित्सक एव एक भी नर्स को पदस्थापित नही होने से अतिरिक्त स्वास्थ केंद्र की भवन जीर्ण - शीर्ण अवस्था मे है.तथा विगत वर्षों से स्वास्थ विभाग द्वारा चिकित्सक एव नर्स की पदस्थापना नही लिए है.विधायक अरुण शंकर प्रसाद ने कहा कि चार किलामीटर दूर रसीदपुर से खजौली सीएचसी पड़ने से आमजनता को इमरजेंसी ईलाज के लिए जाने में भारी दिक्कत का सामना करना पड़ता है. वही विधायक अरुण शंकर प्रसाद ने कहा कि जीर्ण शीर्ण अवस्था भवन को अविलंब ठीक कराकर चिकित्सा बहाल करनी की मांग की है.वही सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा. जोतीन्द्र नारायण ने कहा कि विधायक अरुण शंकर प्रसाद द्वारा विधान सभा सदन मे अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ केंद्र चालू करने की मांग के आलोक में मेरे द्वारा लिखित पत्र जिला सिविल सर्जन को सौंपा दिया गया।

सात दिवसीय प्रतियोगिता के पहले दिन लिखित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता शुरू

प्रात : किरण संवाददाता

बखरी, बेगूसराय। शैक्षणिक धरोहर श्री विश्व बंधु पुस्तकालय, बखरी के 67वें वार्षिकोत्सव के पर आयोजित सात दिवसीय कार्यक्रम के पहले दिन लिखित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जयशंकर जायसवाल ने की। कार्यक्रम का उद्घाटन संरक्षण समिति संयोजक आनंद चंद्र झा, बैद्यनाथ प्रसाद केशरी एवं रामचंद्र केशरी ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए आनंद चंद्र झा ने कहा कि छात्र -छात्राएं ही हमारे कल के भविष्य हैं। प्रतियोगिता परीक्षा आत्मज्ञान और आत्मबल को बढ़ाता है।रामचंद्र केशरी ने कहा कि असफलता के कारण परीक्षा से कभी मुँह मोड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि असफलता ही सफलता का मार्गप्रशस्त करता है। कार्यक्रम संचालन के क्रम में सचिव पवन सुमन ने बताया कि वार्षिकोत्सव के इस सात दिवसीय आयोजन में लगभग 700 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं।जिसमें बच्चों के बौद्धिक विकास वर्धन हेतु लिखित क्वीज, मौखिक क्वीज, चित्रांकन, भाषण, बैलून और मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है। पहले दिन 150 छात्र-छात्राओं ने अपनी सहभागिता निभाई। आयोजन में प्रतिनिधि संतोष कुमार गुड्डू, विशेष समिति सदस्य गणेश पोद्दार भारती, सुनील अग्रवाल, शरतचंद्र ठाकुर, कार्यसमिति सदस्य मनीष कुमार, कुंदन कुमार, पूर्व अध्यक्ष सीताराम केशरी, शिक्षक प्रमोद पंडित, अजय कुमार, पुस्तकाध्यक्ष अम्बेश चौधरी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

सिलेंडर से भरी मालवाहक पिकअप वाहन को अज्ञात चोरों ने कर ली चोरी

प्रात : किरण संवाद बरहट(जमुई)

बरहट थाना क्षेत्र के पाडों गांव स्थित इंडियन गैस एजेंसी के बाहर खड़ी सिलेंडर से भरी पिकअप मालवाहक वाहन को अज्ञात चोरों ने चोरी कर ली।सिलेंडर से भरी वाहन चोरी होने की घटना की जानकारी एजेंसी के मालिक ने बरहट थाना पुलिस को दी।मामले की जानकारी मिलते ही बरहट थाना पुलिस मामले की छानबीन में जुट में गई।साथ ही आसपास में लगे सीसीटीवी फुटेज को भी खंगाला जा रहा है।एजेंसी के डिस्ट्रीब्यूटर विकास कुमार मंडल ने बताया कि शनिवार की रात अज्ञात चार चोरों द्वारा एजेंसी के सामने लगी 60 सिलेंडर से भरी पिकअप को रात को 2 बजे चोरी कर लिया गया।जिसका फुटेज एजेंसी में लगे सीसीटीवी कैमरा में साफ-साफ दिख रहा है।रविवार की सुबह घटना की जानकारी मिलने के बाद जब वो एजेंसी पहुचे तो सीसीटीवी फुटेज से पता चला कि गैस सिलेंडर से भरी पिकअप वाहन को चार लोगों द्वारा चोरी कर लिया गया।आसपास के ग्रामीणों से पूछताछ करने पर जब कुछ पता नहीं चला तो इसकी सूचना बरहट थाने पुलिस को दी।घटना के बाद रविवार की सुबह बरहट थाना के एसआई मनोज कुमार दल बल के साथ मामले की जानकारी ली।बरहट थानाध्यक्ष एके आजाद ने बताया कि पीड़ित द्वारा दिए आवेदन के अनुसार मामले की जांच की जा रही है।आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज को भी खंगाला जा रहा है। जल्द ही चोर को गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

नरसिंह होम की छापेमारी से अवैध संचालकों में मची हड़कंप

धावादल का नेतृत्व कर रहे खजौली के सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी स्थानीय खजौली बाजार में अवैध रूप से चल रहे अल्ट्रासाउंड क्लिनिक एव नरसिंह होम पर शिकंजा कसने को लेकर जिला पदाधिकारी मधुबनी के निर्गत पत्र के आलोक में सीएचसी खजौली के प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा. जोतीन्द्र नारायण द्वारा धावादल का गठन किया गया है.इस गठित धावादल में शामिल सीएचसी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डा. जोतीन्द्र नारायण,डा. साहिद एकवाल, स्वास्थ कर्मी अरविंद कुमार मिश्रा एव बीएमसी कालीचरण झा द्वारा रेलवे लाईन से पूरव दिशा में डा. सतीश गोईत के क्लिनिक के बगल में मिसू अल्ट्रासाउंड क्लिनिक पर छपामारी करने पर अवैध अल्ट्रासाउंड क्लिनिक संचालक छापामारी की भनक लगते ही अल्ट्रासाउंड क्लिनिक की बोर्ड को उतारकर क्लिनिक को बंद कर फरार हो गया.वही संतु महतो चौक से पूरव लचका के पास अवैध रूप से चला रहे नरसिंह होम की छापेमारी के दौरान नरसिंह होम संचालक नरसिंह होम बंद करके फरार हो गया. वही छापामारी की भनक लगते ही खजौली बाजार में अवैध रूप से चला रहे अल्ट्रासाउंड क्लिनिक नरसिंह होम संचालकों में हड़कंप मच गयी. वही जांच धावादल के पदाधिकारी डा. जोतीन्द्र नारायण ने बताया कि अवैध रूप से एक मात्र ही मिसू अल्ट्रासाउंड क्लिनिक सहित तीन नरसिंह होम की संचालन हो रही है. उन्होंने कहा कि खजौली बाजार में बजरंग पैथोलिजिस्ट घर एव मौर्या जांच घर वैध पाया गया है. शेष सभी जांच घर अवैध रूप से चोरी छिपे चला रहे है. उन अवैध जांच पर धावादल द्वारा छापेमारी कर उक्त जांच घर को सील करके उन पर कानूनी करवाई की जाएगी।

मोहम्मद नुरूल होदा राष्ट्रीय उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान 2023 से सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

आदापुर। शनिवार को जनदृष्टि, व्यवस्था सुधार मिशन के द्वारा बदांयू, उत्तरप्रदेश के प्रभाशंकर स्काउट भवन में आयोजित संतपाल सिंह राठौड़ स्मृति राष्ट्रीय उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान समारोह-सह-शैक्षिक संगोष्ठी में आदापुर प्रखंड स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय बसतपुर के वरीय शिक्षक मोहम्मद नुरूल होदा को राष्ट्रीय उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान 2023 से सम्मानित किया गया। उन्हें कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व कमिश्नर दिनेश कुमार सिंह एवं संयुक्त निदेशक युवा कल्याण विभाग भारत सरकार डॉक्टर दिनेश यादव के हाथों सम्मान स्वरूप मोमेंटो एवं प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। इस सम्मान समारोह में भारत के 24 राज्यों के 125 नवाचारी शिक्षकों को शिक्षा के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। शिक्षक संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए मोहम्मद होदा ने कहा कि शिक्षक ही भारत को बनाएंगे विश्व गुरु। उन्होंने पुरानी शिक्षण पद्धति के बजाय नई शिक्षण तकनीकों को अपनाने की अपील की। इस समारोह में मोहम्मद होदा सहित सात शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में बिहार, उत्तरप्रदेश, झारखंड, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात सहित 24 राज्यों के शिक्षकों ने भाग लेकर शिक्षा के क्षेत्र में अपने नवाचारों को साझा किया। मोहम्मद होदा को सम्मानित किये जाने पर उन्हें बधाईयां मिल रही हैं। बधाई देने वालों में वैष्णवी मिश्रा, अरविंद पाण्डेय, अतिकुर रहमान, मेवालाल राम, मोहम्मद रिजवानुल्लाह, पुष्पा प्रसाद, मनोज कुमार, मो. जयाउद्दीन आदि शामिल हैं।

गिद्धौर में कांवरिया राहत व स्वास्थ्य शिविर तक नही पहूंच रहे कांवरिया यात्री

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर : गिद्धौर में स्वास्थ्य विभाग व स्थानीय प्रशासन द्वारा बनाये गये कांवरिया राहत व स्वास्थ्य शिविर तक कांवरिया यात्री पहूंच ही नही पा रहे है। जबकि उक्त राहत शिविर गिद्धौर झाझा एनएच 333 के किनारे अवस्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय बंझुलिया के परिसर में बने एक कमरे में बनाया गया है। जहां राहत व स्वस्थ्य शिविर के नाम पर कमरे के बरामदे पर एक टेबल व चार पांच कुर्सियां व ओआरएस का पैकेट आपको लटका मिलेगा व कावंरिया राहत व स्वाथ्य शिविर में ड्यूटी पर तैनात कर्मी हर हमेशा आपको कमरे में आराम फरमाते मिलेंगे। जिसकी वजह से बनझुलिया में खुला यह राहत शिविर कैंप सिर्फ कागजी खानापूर्ति बनकर रह गया है। जबकि जिला प्रशासन व स्वास्थ्य विभाग का दावा है कि जिले भर में कांवरिया राहत व स्वास्थ्य शिविर खोला गया है। शिविर में अन्य प्रदेशों से आने जाने वाले कांवरिया यात्री को हर सुविधा उपलब्ध कराया जा रहा है। पर गिद्धौर के उत्क्रमित मध्य विद्यालय बनझुलिया के प्रांगण में खुला यह कावंरिया राहत सह स्वास्थ्य शिविर पर आपको हर हमेशा सन्नाटा पसरा ही देखने को मिलेगा। इधर कांवरिया राहत शिविर को गिद्धौर के दिग्विजय सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रबंधन की देख में आयोजित किया जा रहा है। विद्यालय परिसर में बने एक कमरे के बाहर एक छोटा सा बैनर टांग कोरम पूरा कर लिया गया है जो कांवरिया यात्रियों को हर सुविधा मुहैया कराने का दावा कर रहा है। कांवरिया यात्री हरेराम सिंह, रोहित सिंह, मदन यादव, सुखदेव कुमार, मोहन दास, मधुसूदन राम, अमर सिंह, कपिलदेव सिंह, रौशन यादव, मुकेश यादव, रोहित यादव सहित दर्जनों कांवरिया यात्रियों ने बताया कि झाझा पार करने के बाद बस पर सवार कुछ कांवरिया की तबियत बिगड़ने लगी, गिद्धौर पहूंचने पर हमलोगों को कही भी कांवरिया राहत शिविर का कैंप नजर नही आया। जिसकी वजह से हम लोग बानाडीह गांव के पास रुक कर स्थानीय ग्रामीणों के सहयोग से गर्भू स्थान पर बने चबूतरे का सहारा ले आराम कर रहे हैं। स्थानीय लोगों द्वारा ही हम कांवरिया यात्रियों को दवा पानी उपलब्ध कराया गया। बताते चलें कि गिद्धौर झाझा एनएच 333 के किनारे बनझुलिया गांव के समीप राहत शिविर कैंप से गुजरने वाले कांवरिया वाहन चालकों को राहत सह स्वास्थ्य शिविर का सूचक बोर्ड नही होने के कारण कांवरिया यात्री इन दिनों सड़क किनारे बने चबूतरे व अन्य जगहों में बैठकर अपनी थकान मिटाने को विवश हैं।

मुहर्रम को आपसी भाईचारे व सौहार्द पूर्ण वातावरण मे मनाने की अपील

प्रात : किरण संवाददाता

अलीगंज। चंद्रदीप थाना परिसर मे रविवार को मुहर्रम पर्व को लेकर शान्ति समिति की बैठक आयोजित किया गया। बैठक की अध्यक्षता थानाधयक्ष अब्दुल हलीम ने किया।ग्रामीणो व जनप्रतिनिधियो को संबोधित करते हुए थानाधयक्ष ने अपील करते हुए कहा कि यह मुहर्रम पर्व आपसी समन्वय स्थापित कर आपसी भाई चारे के साथ मनाये।उन्होने सभी लोगो पर्व को आपसी शान्तिपूर्ण वातावरण मे संपन्न कराने को लेकर एक दुसरे को सहयोग करने की अपील किया। उन्होने कहा कि यह थाना क्षेत्र सब दिन एकता व शान्ति पूर्ण वातावरण के जाना जाता है। मूझे आशा ही नही बल्कि पूर्ण विश्वास है कि इस बार दोनो संप्रदाय आपसी समन्वय स्थापित कर त्योहार को मनाएंगे। पुराने परंपरा को कायम रखना है। वही सामाजिक कार्यकर्ता नरेश शर्मा ने कहा कि सब दिन चंद्रदीप थाना दोनो संप्रदाय के बीच आपसी भाई चारे व शान्तिपूर्ण का परिचय देकर आपसी समन्वय का संदेश देती रही है। और जो पुराने परंपरागत आपसी समन्वय है वह कायम रहेगी। थानाधयक्ष ने कहा कि त्योहार के दौरान पुलिस गश्त तेज रहेगी। क्षेत्र मे सादे लिवास मे तैनात रहेगी। उचचको पर पुलिस की पैनी नजर रहेगी।ऐसे मे अगर किसी प्रकार की अफवाह मिले तो पुलिस को तुरंत सूचना दे।बैठक मे लोगो ने भी अन्य समस्याओ पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया। मौके पर धमौल थानाधयक्ष बैधनाथ प्रसाद, अवर निरीक्षक आदित्य रंजन,सामाजिक कार्यकर्ता चंद्रशेखर आजाद,नरेश मिसञी,मो शमीम मलिक,मो नौशाद,राणा रामनरेश सिंह,मूखिया जनार्दन यादव,मो मंगरू मिया,मो नईम, मुखिया प्रतिनिधि मो श्मशाद,शंभुशरण यादव,मनोज यादव,रौशन मिया,मो कुर्बान के अलावे दोनो संप्रदाय के अलावे जनप्रतिनिधि व ग्रामीण मौजूद थे।

लखय गांव में बालक को सांप ने काटा, झाड़फूंक के चक्कर में बालक की हुई मौत

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई बरहट थाना क्षेत्र के लखय गांव में रविवार की अहले सुबह सोए अवस्था में विषैले सांप ने एक बालक को काट लिया।उसके बाद परिजन के द्वारा बालक को झाड़-फूंक के लिए ले जाया गया झाड़-फूंक के दौरान बालक की तबीयत और बिगड़ गई उसके बाद उसे इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया जहां डॉक्टर ने बालक को मृत घोषित कर दिया।मृतक बालक की पहच लखय गांव निवासी दिलीप यादव के पुत्र अंकुश कुमार के रूप में हुई है।।।। बताया जाता है कि बालक घर में सोया हुआ था इसी दौरान सांप ने बालक को काट लिया उसके बाद बालक के द्वारा इसकी जानकारी परिजनों को दी गई लेकिन परिजन इलाज के बजाय उसे झाड़-फूंक के लिए लेकर चले गए।जहां झाड़-फूंक के दौरान ही बालक की तबियत बिगड़ी और सदर अस्पताल लाने के क्रम में मौत हो गई।

जयनगर पुलिस ने 157 कार्टून भारी मात्रा में शराब और तीन मोटरसाइकिल को जब्त किया

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर थाना पुलिस को शराब मामले में करवाई करते हुए बड़ी सफलता मिली हैं। पुलिस के द्वारा भारी मात्रा में शराब समेत तीन मोटरसाइकिल को जब्त किया।पुलिस के द्वारा शराब मामले में कई गई करवाई को लेकर परीवीक्ष्यमान पुलिस उपाधीक्षक सह थाना अध्यक्ष आशुतोष रंजन ने बातया की गुप्त सूचना मिली कि नेपाल से भारी मात्रा में शराब तस्करों द्वारा थाना क्षेत्र के ग्राम बैरा गुमानी टोल में भारी मात्रा में तस्करी का शराब का खेप लाकर जमा किये हुए है। जिसे कही अन्यत्र जगह जगहों पर तस्करी करना है। अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के निर्देशण में परिवीक्ष्यमान पुलिस उपाधीक्षक सह थानाध्यक्ष जयनगर अशुतोष रंजन के नेतृत्व में त्वरीत कार्रवाई करते हुए छापेमारी टीम का गठन कर ग्राम बैरा गुमानी टोल स्थित मलह टोली में पुआल से छुपाकर रखे हुए भारी मात्रा में शराब की खेप को बरामद किया गया। साथ शराब ढुलाई में प्रयुक्त होने वाली तीन मोटरसाइकिल भी जब्त किया गया। शराब समेत वाहनों को जब्त कर आगे की करवाई हेतू थाना लाया गया। जब्त शराब में कई प्लस्टिक की बड़ी बोरियों में रखे कुल 157 कार्टुन में 4710 बोतल प्रत्येक 300 एम.एल. का कुल 1413 लीटर गौरभ सौफी नेपाली देशी शराब एंव तीन बाईक हैं। शराब तस्कर मोटर साईकिल एंव शराब को छोड़ कर भाग निकले। मामला दर्ज कर आगे की करवाई की जा रही हैं। मामले में फरार आरोपी अशोक सहनी बैरा मलह टोली गुमानी टोल थाना जयनगर एंव चार पाँच अज्ञात हैं। अज्ञात अन्य शराब तस्करों की पहचान की जा रही हैं। आरोपियों की गिरफ्तारी हेतु छापेमारी की जा रही हैं। छापामारी दल में परिवीक्ष्यमान पुलिस उपाधीक्षक सह थाना अध्यक्ष अशुतोष रंजन, पु.अ.नि. धीरेन्द्र कुमार सिंह पैंथर पुलिस बल के दिलीप कुमार , चुनचुन राम , चंदन कुमार , प्रवीण कुमार समेत अन्य पुलिस बल शामिल है। अभियान के तहत आगे भी करवाई जारी रहेगा। वही करवाई से शराब तस्करों में हड़कंप मचा हुआ है।

बखरी प्रखंड में खराब राशन वितरण से लाभुकों में नाराजगी

प्रात : किरण संवाददाता

बखरी, बेगूसराय। बखरी प्रखंड के राटन पंचायत में जनवितरण बिक्रेता रेणु देवी एवं अरविंद पासवान के यहां वितरण किये जा रहे उसना चावल में डष्ट मिला हुआ है। पूरा चावल गंदा है और खुदी मिला हुआ है, जो खाने योग नहीं है। जिससे लाभुक राशन लेने से इंकार कर रहा है। वहीं जनवितरण विक्रेता का कहना है कि हम लोग को ऊपर से जैसा चावल उपलब्ध करायेगा, वहीं चावल देगें। स्थानीय जनप्रतिनिधियों की उदासीनता के कारण लोगों को खराब राशन उठाना पड़ रहा है। पूर्व पंसस पंकज पासवान, सोनेलाल पासवान, रामशोभीत पासवान, बिमला देवी, निलम देवी, अनिता देवी, बिजेंद्र पासवान, संजय शर्मा, मंजूर आलम आदि ने अनुमंडल पदाधिकारी से मांग की कि अविलंब बखरी प्रखंड क्षेत्र में जिस भी डीलरों के पास खराब राशन दिया गया है, उसे बदल कर अच्छा राशन दिया जाय।

जमुई के एक गांव में डायन का आरोप लगाकर पड़ोसियों ने एक ही परिवार के 4 लोगों को पीटकर किया घायल

प्रात : किरण संवाददाता

प्रातः किरण सहयोगी संवाददाता जमुई थाना क्षेत्र के एक गांव में रविवार को डायन का आरोप लगाकर दबंग पडोसियो ने एक ही परिवार के चार लोगों को बेरहमी से पीटकर घायल कर दिया।सभी घायलों को इलाज के लिए परिजन के द्वारा सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया।जहां डॉक्टर के द्वारा सभी घायलों का इलाज किया जा रहा है।घायल ने बताया कि उनके पडोसी गरीब मांझी, रमेश मांझी, विकास कुमार और महेश सहित महिला पर डायन का आरोप लगाकर गाली-गालौज किया जाने लगा।जब गाली गालौज का विरोध किया गया तो सभी लोगों के द्वारा लाठी-डंडा व लोहे के रड से मारकर घायल कर दिया गया।वहीं घटना की जानकारी टाउन थाना की पुलिस को दी गई है।पुलिस घटना की जांच में जुटी हुई है।

संक्षिप्त खबरें

चोरी के बाइक के साथ एक गिरफ्तार

थावे। चोरी की बाइक के साथ पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान एक युवक को गिरफ्तार कर लिया। बताया जाता है कि एसआई पिंटू कुमार पुलिस बल के साथ बिहार सिनेमा हॉल के पास वाहन जांच कर रहे थे। उसी दौरान सेमरा के तरफ से बाइक चलाते हुए एक युवक आया और पुलिस को देखकर भागने का प्रयास किया। जिसे पुलिस बल द्वारा पकड़ लिया गया। युवक से बाइक का कागजात मांगने पर कोई साक्ष्य प्रस्तुत नही किया। जिसे पुलिस मौके पर ही गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान बताया कि यह बाइक चोरी का है। जिसे मैं चलाता हुँ। थानाध्यक्ष शशि रंजन कुमार ने बताया कि गिरफ्तार युवक कुचायकोट थाना के मरियारा फार्म के अनिल कुमार बताया जाता है। उससे पूछताछ के बाद बाइक चोरी के आरोप में उसे रविवार को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

मोमोज खाने से युवक की मौत मामले में पिता ने दो पर कराई प्राथमिकी

थावे। थावे थाना क्षेत्र के सिहोरवा गांव के युवक की मोमोज खाने से हुयी मौत के बाद मृतक के पिता ने थाने में दो लोंगो के विरुद्ध प्राथमिकी कराई है। विशुन मांझी ने अपने फर्द बयान में आरोप लगाया है कि मेरा पुत्र विपिन कुमार पासवान 13 जुलाई को हर दिन की भांति आठ बजे सीवान जिले के बड़हरिया थाना के ज्ञानी मोड़ पर दीनबंधु भगत के मोबाइल दुकान पर काम करने गया था। सात बजे अपने घर पर सुनील पासवान ने फोन किया कि बिपिन के साथ कुछ घटना घटी है। तब हम सभी लोग सपरिवार के साथ ज्ञानी मोड़ मोमो बेचने वाले दुकान पर पहुचे तो विपिन भी मोमो खा रहा था। कुछ समय बाद वह गिर गया। इलाज के लिए बड़हरिया डॉक्टर के पास ले गए। जहाँ डॉक्टर द्वारा जांच कर मृत घोषित कर दिया गया। जिसको लेकर मृतक विपिन के पिता विशुन मांझी ने थाने में सीवान जिले के बड़हरिया थाना के मुसहरी गांव के अवध किशोर राम और बच्चा सिंह के विरुद्ध प्राथमिकी कराई है। इसके साथ ही उन्होंने आरोप लगाया है कि शंका है कि अवध किशोर और बच्चा सिंह द्वारा मोमोज में जहरीला पदार्थ खिलाया गया है। जिसके कारण मेरे पुत्र की मृत्यु हो गईं है। थानाध्यक्ष शशि रंजन कुमार ने बताया कि मामले की जांच पडताल की जा रही है।

दरियापुर मुखिया संघ का चुनाव संपन्न

छपरा। दरियापुर प्रखण्ड क्षेत्र के पंचायत सरकार भवन बेला में मुखिया संघ की बैठक का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता मुखिया उपेंद्र सिंह ने की। बैठक में मुखिया संघ के पुनर्गठन को लेकर सभी सदस्यों के बीच चर्चा की गई। जिसके उपरांत पूर्व के कार्यकारिणी को भंग करते हुए फिर से चुनाव कराने का निर्णय लिया गया। जिसमें सभी सदस्यों के द्वारा सर्वसम्मति से सज्जनपुर मटिहान के युवा मुखिया चंद्रशेखर सिंह को मुखिया संघ का अध्यक्ष मनोनित किया गया।

डोमिसाइल नीति लागु करने के लिए जाप का राज्यव्यापी रोड जाम कार्यक्रम

छपरा। बनियापुर में जन अधिकार पार्टी के सुप्रीमो राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव जी के नेतृत्व मे शिक्षक भर्ती सहित बिहार के सभी प्रतियोगी परीक्षा मे डोमिसाइल नीति लागु करने आदि मागो के समर्थन मे राज्यब्यपी सड़क जाम का रूआयोजन किया गया है। इस क्रम मे जन अधिकार पार्टी छपरा जिले के एनएच-331 आईजेड छपरा से मलमलिया की वो जाता है उस रोड पर चक्का जाम किया गया है। जिस कार्यक्रम मे जनाधिकार पार्टी के कार्यक्रम मे जिले भर मे हजारो की संख्या मे शामिल होकर चक्का जाम कार्यक्रम मे शामिल होकर अपने प्रमुख मांगे शिक्षक भर्ती सभी प्रतियोगि परीक्षाओ मे डोमिसाई नीति लागु करने था।किसानो की समस्याओ सहित किसानो के लिए खाद की उपलबंधता सुनिश्चित करने की मांग किया मौके पर जिलाध्यक्ष दिलीप राय मसरख के अध्यक्ष मिथलेस राय बनियपुर अध्यक्ष मंटू राय विजय यादव उदय यादव जितेंद्र राय बीरु सिंह साहेब यादव सहित अन्य पार्टी के कार्यकर्ता शामिल थे।

सेवानिवृत्ति पर कार्यक्रम आयोजित कर दी गई विदाई

मांझी। रविवार को स्थानीय प्रखंड के सम्वेदना प्रोजेक्ट बालिका इंटर कॉलेज, दाऊदपूर, के प्रांगण में विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती मधुलिका श्रीवास्तव के सेवानिवृत्त होने के बाद विदाई सह सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य प्रभात कुमार सिंह, तथा संचालन प्रमोद कुमार सिंह ने किया तथा कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व प्राचार्य शुभनारायण सिंह, रघुनाथ प्रसाद, एवं बिहार माध्यमिक शिक्षक संघ के मूल्यांकन पारिषद सचिव कुमार अर्णज, जिला सचिव विद्यासागर विद्यार्थि एवं संयुक्त सचिव प्रकाश कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। विद्यालय के प्राचार्य श्री प्रभात कुमार सिंह एवं सभी शिक्षकों ने सभी अतिथियों का स्वागत अंगवस्त्र एवं फूल माला पहनाकर किया।

उचकागांव में 17 से 31 तक टीवी मरीजों की खोज के लिए चलेगा अभियान

प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी ने जनप्रतिनिधियों के साथ की बैठक

उचकागांव प्रात : किरण संवाददाता

उचकागांव प्रखंड मुख्यालय स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र उचकागांव में टीवी मरीजों के खोजी अभियान की तैयारी को लेकर शनिवार की शाम प्रखंड स्वास्थ्य प्रभारी डॉ ओपी लाल की अध्यक्षता में मुखिया जनप्रतिनिधियों व पदाधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। इस दौरान कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रखंड स्वास्थ्य प्रभारी डॉ ओपी लाल व स्वास्थ्य प्रबंधक मनोज कुमार ने कहां की 2025 तक टीवी बीमारी से भारत को मुक्त करने का लक्ष्य रखा गया है। यह तभी संभव है जब प्रखंड क्षेत्र के सभी पंचायतों के जनप्रतिनिधि व आम नागरिक सजग रहते हुए मरीजों की पहचान कराने में स्वास्थ्य विभाग का सहयोग करें। उन्होंने कहा कि प्रखंड के सभी पंचायतों में 17 जुलाई से 31 जुलाई तक डोर टू डोर टीवी मरीजों की पहचान के लिए खोजी अभियान चलाया जाएगा। यदि किसी व्यक्ति को बुखार, खांसी आदि की शिकायत मिलती है तो वे ऐसे मरीजों की सूचना प्रखंड स्वास्थ्य विभाग को देंगे। ऐसे मरीजों की कीट के माध्यम से टीवी बीमारी के बारे में जांच की जाएगी। सरकार के द्वारा एक हजार की आबादी पर 50 संदिग्ध मरीजों की जांच के लिए प्रखंड स्तर पर किट उपलब्ध कराई गई है। टीवी मरीज के पहचान होने के बाद स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से छह महीने की दवा की निशुल्क कोर्स चलाई जाएगी। यदि पंचायत क्षेत्र का कोई टीवी का मरीज प्राइवेट क्लीनिक से भी दवा करते हैं तो उसकी भी जानकारी स्वास्थ्य विभाग को मिलेगी तो ऐसे मरीजों को भी निशुल्क दवा उपलब्ध कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रखंड क्षेत्र में 27 व मीरगंज नगर क्षेत्र में सात टीवी के मामले पूर्व से ही स्वास्थ्य विभाग द्वारा चिन्हित किया गया है। जिनकी दवा की कोर्स स्वास्थ्य विभाग के द्वारा चलाई जा रही है। ऐसे मरीजों की पहचान होने पर पंचायत क्षेत्र के कोई जनप्रतिनिधि अथवा सक्षम व्यक्ति गोद लेते हुए उन्हें प्रति मरीज छह माह की पौष्टिक आहार भी उपलब्ध करा सकते हैं। मरीजों को पौष्टिक आहार मिलने से बीमारी रहने के बावजूद भी टीवी की बीमारी मरीज में हावी नहीं होती है। उन्होंने कहा कि जिस पंचायत में दो या दो से कम टीवी के मामले सामने आएंगे। उस पंचायत को टीवी मुक्त पंचायत घोषित करते हुए सम्मानित किया जाएगा। मौके पर प्रखंड प्रमुख विश्वजीत यादव, बीडीओ मनोज कुमार पंडित, बीपीआरओ आदित्य अंशु, मुखिया प्रमोद सिंह, अमरेंद्र कुमार सिंह सहित काफी संख्या में लोग उपस्थित थे।

हथुआ में होगा साहित्य, समाज व पत्रकारिता पर एक दिवसीय सेमिनार

हथुआ प्रात : किरण सवांददाता

भारतीय राजनीति परिपेक्ष्य में साहित्य, समाज व पत्रकारिता का क्या योगदान है इसको लेकर सितम्बर में एक दिवसीय कार्यक्रम होगा। जिसमें देश विदेश के पत्रकार, साहित्यकार व समाजसेवक शामिल होंगे। उक्त निर्णय बिहार प्रेस मेंस यूनियन के हथुआ अनुमंडल इकाई की बैठक में सदस्यों ने लिया। हथुआ अवस्थित संध्या होटल एवं बैंक्वेट में यूनियन के अध्यक्ष बागेश्वरी नाथ तिवारी की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में सर्वसम्मति से कार्यक्रम तय किया गया। एक दिवसीय कार्यक्रम सितम्बर में करने का निर्णय लिया गया। जिसमें समाज के हर वर्ग के लोग शामिल होंगे। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए पूर्व से निबंधन करवाना होगा। प्रथम सत्र में विद्वानों द्वारा साहित्य, समाज और पत्रकारिता पर अपना विचार व्यक्त करेंगे। दूसरे सत्र में समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वालों को सम्मानित किया जाएगा। बैठक में कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आयोजन समिति गठित करने का निर्णय लिया गया। कार्यक्रम की रूपरेखा तय करने के लिए आयोजित समिति गठित की जाएगी। बैठक में सदस्यों ने स्मारिका प्रकाशन पर भी बल दिया। बैठक के सम्बन्ध में संघ के महासचिव डॉ सत्य प्रकाश ने बताया कि आगामी 24 सितम्बर को साहित्य, समाज व पत्रकारिता पर कार्यक्रम आयोजित की जाएगी। जिसमें पत्रकार, साहित्यकार व समाज के प्रबुद्ध वर्ग शामिल होंगे। कार्यक्रम की रूप रेखा तय करने के लिए एक टीम गठित की गई है जो कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग करेगा। बैठक में यह भी निर्णय लिया गया कि समाज के प्रबुद्ध वर्ग अपना आलेख स्मारिका के लिए 10 सितम्बर तक दे सकते है। जिसका प्रकाशन यूनियन के तरफ से करते हुए कार्यक्रम में इसका लोकार्पण किया जाएगा। कार्यक्रम में भाग लेने के लिए देश के नामी गिरामी साहित्यकारों, पत्रकारों व सामाजिक स्तर पर जुड़े लोगों को सूचीबद्ध किया जा रहा है। इस मौके पर पत्रकार दिनेश मिश्र, सोमेश्वर तिवारी, अरुण कुमार सिंह, नंद जी प्रसाद, जनार्दन ओझा निराला, अजय कुमार पाण्डेय, शंकर जी अहीर, प्रिंस उपाध्याय, सुनील कुमार मिश्र, संजय राय आदि थे।

धार्मिक कार्यक्रम व जुलूस के लिए डीजे व आर्केस्ट्रा करने पर लगेगा जुर्माना

उचकागांव प्रात : किरण संवाददाता

उचकागांव थाना परिसर में पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर रविवार के दिन थानाध्यक्ष सुभाष कुमार सिंह ने डीजे व आर्केस्ट्रा संचालकों के साथ बैठक आयोजित की। जिसमें थाना क्षेत्र के कई डीजे व आर्केस्ट्रा संचालक शामिल हुए। बैठक को संबोधित करते हुए थानाध्यक्ष सुभाष कुमार सिंह ने कहा कि धार्मिक कार्यक्रमों व जुलूस में प्रशासन ने डीजे बजाने व आर्केस्ट्रा संचालक पर पूरी तरीके से रोक लगा दी है। जिसको ध्यान में रखते हुए सभी डीजे व आर्केस्ट्रा संचालकों को थाना क्षेत्र या जिले के किसी भी धार्मिक कार्यक्रम व धार्मिक जुलूस के लिए साटा करने पर रोक लगाने का निर्देश दिया जा रहा है। निर्देश के बावजूद भी यदि डीजे व आर्केस्ट्रा संचालकों ने धार्मिक कार्यक्रम व धार्मिक जुलूस में डीजे का साटा किया अथवा ऐसे कार्यक्रमों में पकड़े पाए गए तो प्रशासन डीजे को जप्त करते हुए डीजे व आर्केस्ट्रा संचालकों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करेगी। वहीं संबंधित डीजे या आर्केस्ट्रा संचालक से या संचालक की संपत्ति जब्त करते हुए पांच लाख रुपए तक की जुमार्ने की राशि वसूल की जाएगी। इस दौरान डीजे व आर्केस्ट्रा संचालकों से लिखित शपथ भी कराई गई।

बिना हेलमेट पहने मीरगंज थाना से चिता दल हुआ रवाना

हथुआ प्रात : किरण संवाददाता

यदि आपके पास वाहन जांच के दौरान हेलमेट नहीं है तो पुलिस तुरन्त जुरबाना लगा देती है। लेकिन यदि पुलिस बिना हेलमेट पहने सड़क पर अपनी बहन दौड़ा रही हो तो उसपर कौन जुरबना लगाएगा। यह बड़ी बात है। ऐसा ही माजरा मीरगंज थाना से रवाना हुए चिता दल के साथ हुआ। मीरगंज थानाध्यक्ष विशाल आनंद की देखरेख में लोगों की सुरक्षा के ख्याल से एक पुलिस दल का गठन किया गया। जिसका नाम चिता दल रखा गया है। मोटरसाइकिल पर सवार चिता दल पूरे मीरगंज शहर के चैक चैराहे, गली, बाजार में गस्त लगाएगी। जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों की सुरक्षा होगी। थानाध्यक्ष ने इस दल को रवाना किया। मोटरसाइकिल पर सवार किसी भी पुलिस कर्मी के पास हेलमेट नहीं था। ना ही किसी ने पहनना अपना कर्तव्य समझा। जब पुलिस अपनी मोटरसाइकिल पर सवार होकर एक साथ सड़क पर निकली तो लोग देखकर हैरान हो गए। लोग पुलिस को बिना हेलमेट पहने वाहन चलाने पर मन ही मन सवाल भी खड़ा किया कि जब पुलिस बाइक जांच करती है तो पहले हेलमेट नहीं पहनने पर चालान काटती है। लेकिन जब पुलिस ही बाइक चलाते समय हेलमेट नहीं पहने तो इसका कौन चालान काटेगा। इसपर लोगों ने मन ही मन पुलिस को कानून की धज्जियां उडाने वाला कहा। इस सम्बन्ध में थानाध्यक्ष से संपर्क नहीं हो सका। ऐसे में देखे पुलिस के वरीय अधिकारी बिना हेलमेट पहने बाइक चलाते पुलिस कर्मियों पर करवाई करती है या नहीं। यह समय ही बताएगा। लेकिन पुलिस इन सब मामलों में कानून की धज्जियां उड़ाती नजर आ रही है। इसका वीडियो खूब वायरल हो रहा है।

बैकुंठपुर में शुरू हुआ कंपोजिट सिलेंडर का वितरण

गोपालगंज प्रात : किरण संवाददाता

गोपालगंज जिले में रेवतीथ गांव स्थित प्रियम इंडेन गैस एजेंसी में पहली बार कंपोजिट सिलेंडर का वितरण कार्यक्रम प्रारंभ हुआ है। विदित हो कि देश के महानगरों में कंपोजिट सिलेंडर का वितरण पिछले दो सालों से चल रहा है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन रविवार को गैस एजेंसी के संचालक अभिजीत कुमार सिंह उर्फ समीर बाबू ने किया। बताया कि वर्तमान में यह सिलेंडर दस किलोग्राम में उपलब्ध है। इसकी कीमत 862 रुपए निश्चित की गई है। जबकि सिलेंडर की सुरक्षा जमा राशि 35 सौ रुपए है। श्री सिंह ने आगे बताया कि स्टील सिलेंडरों की तुलना में इस सिलेंडर के कई फायदे हैं। इसका हल्का वजन होगा, संभालने में आसान, गैस की स्तर का दिखाई देगा तथा फर्श पर कोई दाग का ना होना सबसे बड़ी खासियत है। इससे फर्श पर जंग नहीं लगता है। प्रियम गैस एजेंसी के प्रोपराइटर समीर बाबू ने बताया कि मौजूदा ग्राहक स्टील सिलेंडर के बदले कंपोजिट सिलेंडर भी ले सकते हैं।

बाबा साहब के विचारों पर चलकर ही बनेगा उनके सपनों का भारत: प्रेमशंकर

प्रात : किरण संवाददाता

गोपालगंज। जिले के बैकुंठपुर प्रखंड के बांसघाट मंसुरिया पंचायत स्थित क्षेत्रीय विधायक के गांव हरेंद्र राम के दरवाजे पर बाबा साहब भीमराव अंबेडकर परिचर्चा का आयोजन राष्ट्रीय जनता दल कार्यकताओं के द्वारा रविवार को आयोजित की गयी। पार्टी द्वारा निर्देशित दलित बस्ती में आयोजित अंबेडकर परिचर्चा की अध्यक्षता पार्टी के पंचायत अध्यक्ष जटा राय ने की। आयोजित परिचर्चा बैठक में बाबा साहब के विचारधाराओं पर प्रकाश डालते हुए गांव के लोगों को इससे अवगत कराया गया। बाबा साहब के विचारों को पार्टी द्वारा चलाए जा रहे परिचर्चा में बड़ी संख्या में महिला-पुरुषों की भीड़ जुटी। जिसमें बाबा साहब के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए प्रखंड अध्यक्ष मोइनुल हक मीनू एवं प्रखंड प्रभारी मोतीलाल पंडित की देखरेख तथा विधायक प्रेम शंकर प्रसाद की उपस्थिति में बाबा साहब के सोंचों व जमीनी विचारों से अवगत कराया गया। बाबा साहब के विचारों को पार्टी द्वारा चलाए जा रहे परिचर्या में विधायक प्रेम शंकर प्रसाद ने कहा कि मौजूदा समय में युगदृष्टा, दलित समाज की मुक्ति के प्रणेता बाबा साहब का विचार अत्यंत प्रासंगिक है। पार्टी के प्रखंड अध्यक्ष श्री मीनू ने कहा कि बाबा साहेब के विचार दर्शन से हीं उनके सपनों के भारत को साकार किया जा सकता है। बैकुंठपुर के संगठन प्रभारी मोतीलाल पंडित ने बताया कि भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के विचारों का अनुकरण आज के समाज के लिए अति आवश्यक है। बताया कि बाबा साहब के मूल्यों व आदर्शो को हमें आत्मसात करना चाहिए। मौके पर पार्टी कार्यकर्ता हरेंद्र राम, रितेश कुमार, किताबुद्दीन, राजेंद्र महतो, नूर आलम व फिरोज आलम आदि थे।

फुलवरिया में नए बीडीओ ने योगदान करते ही कर्मियों को दी कई दिशा-निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

फुलवरिया। फुलवरिया प्रखंड कार्यालय में बीडीओ के पद पर शनिवार को नये प्रखंड विकास पदाधिकारी सुश्री पूजा कुमारी ने योगदान कर लिया है। योगदान लेने के साथ ही बीडीओ ने सभी प्रखंड व अंचल कर्मियों के साथ एक विशेष बैठक कर उन्हें सलाह दिया कि अगर सरकार का काम करना है तो सभी लोग अपने पुराने रवैया में बदलाव लाये नहीं तो कार्रवाई के शिकार हो सकते है। बीडीओ ने बताई कि हम सबका पहली प्राथमिकता होगी कि सरकार का काम हो।

उन्होंने आम जनता से अपील किया कि अपने काम के लिए वे खुद मिले किसी भी विचैलियों की आवश्यकता नहीं है। योगदान के बाद बीडीओ ने आरटीपीएस कार्यालय सहित अन्य दफ्तरों का मुआयना किया। जहां उपस्थित कर्मियों को दिशा निर्देश देते हुए कही कि सरकार का काम समय से हो, जिससे आवेदकों को किसी प्रकार की परेशानी नहीं हो सकें। योगदान के बाद बीडीओ ने सभी कर्मियों से उनके काम की जानकारी भी लिया। यहां बता दें कि बीडीओ सुश्री पूजा कुमारी ने निवर्तमान बीडीओ अजीत कुमार रोशन से प्रभार लिया। स्थानांतरण के बाद बीडीओ श्री रौशन प्रभार देने के बाद अपने गंतव्य स्थान के लिए निकल गए। बीडीओ श्री रौशन प्रखंड मुख्यालय में अपनी तीन साल की उपस्थिति में ऐसे कई कार्य किए हैं, जो आजीवन जीवंत रहेगा। जैसे बथुआ बाजार स्थित सहयोगी उच्च विद्यालय सह इंटर कॉलेज के परिसर में पुस्तकालय होना, निर्वाचन के कार्य में जिले में अव्वल होना सहित अन्य कार्यो में श्री रोशन फुलवरिया के लोगों में याद रहेंगे।

निःशुल्क टेस्ट सीरीज का आयोजन

छपरा। शहर के राजेन्द्र सरोवर के प्रांगण में प्रतियोगिता परीक्षा के तैयारी करने वाले छात्रों के लिए निःशुल्क टेस्ट सीरीज का आयोजन शहर के साधनापुरी स्थित मैथमेटिक्स हब संस्था द्वारा किया गया। इस संस्था के संचालक राहुल शर्मा ने कहा कि सरकारी नौकरी के लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी के लिए जो बच्चे आर्थिक रूप से संपन्न नही होते या पारिवारिक परेशानियों के कारण कोचिंग के लिए बड़े शहरों में नही जा पाते या अपने शहर से बाहर नहीं जा पाते हैं एवं उचित अवसर का लाभ नही ले पाते है, ऐसे बच्चों को एक बेहतर अवसर देने के लिए विभिन्न परीक्षाओं के लिए निःशुल्क इस टेस्ट सीरीज का आयोजन प्रत्येक रविवार को किया जाता है, जिसमे बैंक , बिहार पुलिस, आर्मी, आदि की तैयारी करने वाले सैकड़ो परीक्षार्थी भाग लेते है। इस दौरान अमरेंद्र सिंह, रूबी कुमारी, नीरज कुमार, विशाल कुमार आदि उपस्थित थे।

सीओ व बीडीओ पद का लिया प्रभार

उचकागांव प्रात : किरण संवाददाता

उचकागांव प्रखंड मुख्यालय पहुंचकर नवागत शिव रामेश्वर राम ने प्रखंड के सीओ और बीडीओ के पद का प्रभार ग्रहण किया। इसके पूर्व नवागत सीओ रामेश्वर राम के आगमन पर प्रखंड प्रमुख विश्वजीत यादव सहित कई जनप्रतिनिधियों एवं पदाधिकारियों ने उन्हें फूल माला पहनाकर सम्मानित कर स्वागत किया। स्वागत के पश्चात प्रखंड के निवर्तमान सीओ रवीश कुमार और बीडीओ मनोज कुमार पंडित ने बारी-बारी से उन्हें अपने पद का प्रभार ग्रहण किया। बीडीओ मनोज कुमार पंडित में नवागत बीडीओ कुमार प्रशांत के स्थानांतरण के पश्चात अभी तक उचकागांव नहीं पहुंच पाने के कारण उचकागांव बीडीओ के पद का प्रभार नवागत सीओ रामेश्वर राम को सौंप दिया। प्रभार की सभी औपचारिकताएं पूरी करने के पश्चात निवर्तमान बीडीओ मनोज कुमार पंडित और सीओ रवीश कुमार अपने नव पदस्थापित क्रमशः पश्चिमी चंपारण के भीतहां और पूर्वी चंपारण के पकड़ी दयाल प्रखंड में अपना पदभार ग्रहण करने के लिए रवाना हो गए। सीओ पद का प्रभार ग्रहण करने के पश्चात नवागत सीओ रामेश्वरम राम ने कहा कि अपने कार्यकाल में अंचल क्षेत्र के जमीनी विवाद के मामलों को ज्यादा से ज्यादा निपटाने का प्रयास किया जाएगा। वहीं दाखिल खारिज के मामले में भी तेजी लाई जाएगी।

सांसद व जिला पदाधिकारियों ने किया रेलवे ओवरब्रिज का अनावरण

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। रेलवे प्रशासन द्वारा महाराजगंज-मशरख रेल खण्ड पर सागर सुल्तानपुर हाल्ट-मशरख स्टेशन के मध्य किमी सं-39/1-2 पर स्थित रेलवे क्रासिंग संख्या 14 सी पर लगने वाले ट्रैफिक जाम के निवारण एवं ट्रेनों के सुगम परिचालन हेतु सड़क उपरिगामी पुल का उद्घाटन रविवार को महाराजगंज-मशरख रेल खण्ड पर मशरख के चैनपुर बंगरा के रेलवे ओवरब्रिज पर आयोजित कार्यक्रम में सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल द्वारा फलक अनावरण कर किया गया। इस अवसर पर आयोजित उदघाटन समारोह में माननीय सांसद श्री जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने अपने सम्बोधन में मशरख के चैनपुर बंगरा में रेलवे ओवर ब्रिज निर्माण करने लिए रेल प्रशासन का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा इसके पूर्व रेलवे क्रासिंग संख्या 14 सी जो की नेशनल हाई-वे सं 227। जो गोपालगंज से छपरा एवं सीवान से पटना आने-जाने वाले लगभग 15000 सड़क वाहनों को लम्बे जाम में फंसना पड़ता था। मशरख के इस नवनिर्मित रेलवे ओवर ब्रिज के खुल जाने से मशरख सहित आस-पास क्षेत्र के निवासियों को सुविधा होगी बल्कि मशरख से गुजरने वाले लाखों लोगों को भी अब सीवान,छपरा,गोपालगंज एवं महराजगंज से आने-जाने में बहुत सुविधा होगी।

विशेष रूप से मशरख एवं महराजगंज ग्रामीण अंचल से इलाज,शिक्षा एवं व्यापार के लिए उक्त महानगरों में जाने वाले सड़क यात्रियों को इसका पूरा लाभ मिलेगा। इसके साथ उन्होंने बताया कि वैसे तो उपरिगामी पूल के निर्माण में होने वाला व्यय में केन्द्र एवं राज्य का बराबर योगदान किया जाता है। किन्तु इस उपरि गामी पूल के निर्माण में कुल व्यय 35 करोड़ पूर्ण रूप से केन्द्र सरकार द्वारा दिया गया है। इसके लिए मैं माननीय रेलमंत्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूं,जिन्होंने ने मेरे अनुरोध पर अल्प समय मे इस परियोजना को मूर्त किया जिसके सकारात्मक परिणाम भविष्य में परिलक्षित होंगे। इसके पूर्व वाराणसी मंडल के मुख्य परियोजना प्रबंधक श्री कौशलेश सिंह ने महाराजगंज के माननीय सांसद श्री जनार्दन सिंह सिग्रीवाल को अपने बहुमूल्य समय में से इस कार्यक्रम के लिए समय निकालने के लिए आभार प्रकट करते हुए स्वागत किया

इसके साथ ही माननीय अतिथियों का स्वागत करते हुए उन्होंने बताया की जनता की माँग एवं महाराजगंज के सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल के प्रयासों के परिणाम स्वरूप रेलवे प्रशासन द्वारा जनता की सुविधा हेतु महाराजगंज-मसरख रेल खण्ड पर किमी सं-39ध1-2 एवं नेशनल हाई वे 227। की रेलवे क्रासिंग संख्या 14 सी पर लगने वाले जाम से निजात पाने हेतु रेलवे ओवर ब्रिज का निर्माण किया है। उन्होंने बताया की इस रेलवे ओवर ब्रिज के निर्माण से महाराजगंज समेत आस-पास की जनता को भी सीवान ,छपरा, गोपालगंज एवं पटना तक सड़क यात्रा में समय की बचत होगी और सड़क यात्रियों को बहुत सुविधा होगी।

इसके साथ ही महाराजगंज-मसरख रेल खण्ड पर चलने वाली गाड़ियों के परिचालन समयपालन में सुधार होगा जो प्रायः गेट जाम के कारण गेट सिगनल लाल होने के कारण विलम्बित होतीं थीं। इस ब्रिज के खुल जाने से क्षेत्रीय जनता के साथ-साथ रेलवे को भी गाड़ियों के समयबद्ध परिचालन में सुविधा होगी साथ ही संरक्षा बढ़ेगी और फटक पर दुर्घटना की सम्भावना समाप्त हो गयी हैं।

अतिपिछड़ा आरक्षण बचाओ संघर्ष महामोर्चा का बैठक में प्रखण्ड स्तरीय कमेटी गठित

छपरा। बनियापुर में अति पिछड़ा आरक्षण बचाओ संघर्ष महामोर्चा का प्रखण्ड स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया। जिसमे दर्जनों राज्य व जिला स्तर के गणमान्य प्रबुद्ध लोगो ने शामिल होकर कार्यक्रम मे पक्ष रखे। प्रखण्ड मुख्यालय के समीप परसा में नागेंद्र साह मुखिया जी के नवनिर्मित विवाह भवन के प्रांगण में अतिपिछड़ा समाज का बैठक आयोजित किया गया। कार्यक्रम मौजूद पूर्व मुखिया सह इस संगठन प्रदेश महासचिव श्री श्रवण कुमार ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि मुख्य यह समाज स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व से ही आज तक भी आर्थिक सामाजिक व राजनितिक रूप पिछड़ा हुआ है। पिछड़ेपन का आलम यह है कि राष्ट्र के पैमाने पर अभी कोई भी नेता नही है। यदि किसी किसी पार्टी में एक आध नेता हैं लेकिन पार्टी गाइड लाइन के बैन होने के कारण वे अपनी आवाज नही उठा पाते। जबकि हमारी आबादी कुल आबादी का 42: हैं ऐसी स्थिति में अतिपिछड़ा एक हो का स्लोगन दिया।

नामजद पांच अभियुक्तो को पुलिस ने गिरफ्तार कर भेजा जेल

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। अमनौर थाना क्षेत्र के नट बस्ती के चारो तरफ जेसीवी लगाकर खोदे जा रहे बांध के विरोध में हुई मारपीट, जहा दो समुदाय के बीच खूब चली लाठी डांटे,जिससे आधा दर्जन से अधिक लोग घायल हुए है। मारपीट को लेकर दोनों समूह में तनाव की स्थिति बनी हुई थी। घटना के बाद से गांव में भारी संख्या में पुलिस बल तैनाती की गई है। घटना शनिवार की है। थाना अध्यक्ष अमरेंद्र कुमार ने बताया कि मारपीट की घटना को लेकर दोनों तरफ से शिकायत दर्ज कराई गई है। प्रथम पक्ष से गंगा पुर गांव के महेंद्र नट की पत्नी कुसुम देवी ने 25 लोगो को अभ्युक्त बनाई है वही द्वितीय पक्ष से दीपक सिंह की पत्नी मुन्नी देवी ने प्राथमिकी दर्ज कराते हुए 18 लोगो के बिरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराई है। इस मामले में पुलिस त्वरित करवाई करते हुए छापेमारी कर पांच अभियुक्तो को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। गिरफ्तार अभ्युक्तो में रणधीर कुमार सिंह पिता तारकेश्वर सिंह, सोनू कुमार पिता टून टुन राउत, निकाश कुमार पिता चुन चुन राउत,नवनीत कुमार सिंह पिता प्रेम नाथ सिंह चारो मधुबनी गांव निवासी है वही विवेक कुमार पिता दीपक सिंह गंगा पुर गांव निवासी बताया जाता है।पुलिस के अनुसार मुन्नी देवी का आरोप है कि बस्ती के चारो तरफ रास्ता घेर कर जेसीबी से दस फिट गढ़ा खुदवाया जा रहा था,कई झोपड़ी को तोर दिया गया।मना करने पर जान से मारने की नीयत से अचानक लाठी डांटे की वर्षा कर दिया,जिससे महिला पुरुष बच्चे को मारपीट कर घायल कर दिया गया। हमलोग गरीब असहाय है,गांव से भगाना चाहते है। वही दूसरा पक्ष मुन्नी देवी का आरोप है कि मेरे जमीन को कब्जा कर रहे थे। मना करने पर सभी लाठी डंडे से मारपीट कर घायल करने का आरोप लगाया गया है।

पटना तक रेल सेवा की मांग पूरी नही होता देख दिघवारावासी 5 अगस्त को करेंगे आमरण अनशन

प्रात : किरण संवाददाता

छपरा। दिघवारा प्रखंड में सिवान समस्तीपुर इंटरसिटी सवारी गाड़ी के पुनः परिचालन एवं छपराध्सिवान से पटना जंक्शन तक कार्यालय समय पर दो जोड़ी मेमू सवारी गाड़ी के परिचालन की मांग को लेकर रविवार को जनकल्याण समिति के सदस्यों ने दिघवारा स्टेशन अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा। इसके पूर्व स्थानीय दिघवारा धर्मशाला में जनकल्याण समिति की बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें उक्त दोनों महत्वपूर्ण मांगो के समर्थन में लगातार लोकतांत्रिक तरीके से प्रयास करने एवं पत्राचार के माध्यम से रेलमंत्री सहित रेलवे के सभी वरीय पदाधिकारियों को ज्ञापन सौंपने के बाद भी ट्रेन नही चलने की स्थिति में बाध्य होकर आगामी 5 अगस्त को दिघवारा स्टेशन परिसर में एक दिवसीय अनशन करने का निर्णय लिया गया। वहीं अपनी मांगो के समर्थन में समिति के सदस्यों द्वारा हस्ताक्षर अभियान चलाने का भी निर्णय लिया गया। बैठक के उपरांत जनकल्याण समिति के सदस्यों ने शेरपुर दिघवारा सिक्सलेन पुल की जद में आ रहे पौराणिक बाबा गुप्तेश्वरनाथ मंदिर टूटने की खबरों का संज्ञान लेते हुए मंदिर परिस

सम्पादकीय

यू सी सी : निगाहें कहीं हैं, निशाना कहीं

इन दिनों देश में यू सी सी अर्थात यूनिफॉर्म सिविल कोड को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर बहस जारी है। यह बहस ऐसे समय में छिड़ी है जबकि लगभग 9 महीने बाद देश में आम लोकसभा चुनाव की घोषणा की जानी है। यू सी सी भारतीय जनता पार्टी के उन्हीं तीन प्रमुख चुनावी वादों में से एक है जिन्हें भाजपा ने एक दूरगामी रणनीति के तहत अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में 1996 में पहली बार राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार बनते समय ठंडे बस्ते में डाल दिया था। और न्यूनतम सांझा कार्यक्रम के आधार पर एक गैर कांग्रेसी राजग सरकार का गठन किया था। परन्तु 2019 के लोकसभा चुनावों में जैसे ही भारतीय जनता पार्टी अपने पूर्ण बहुमत पर पहुंची और 303 सीटों पर जीत हासिल की तथा भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन ने 353 सीटें जीतीं वैसे ही भाजपा अपने उन मूल मुद्दों को पूरा करने में जुट गयी। इनमें पहला अयोध्या मंदिर निर्माण मुद्दा तो अदालती फैसले के आधार पर निर्णायक नतीजे पर पहुँच गया जबकि 5 अगस्त 2019 को कश्मीर से धारा 370 हटाकर भाजपा ने अपना दूसरा मूल मुद्दा भी हल कर लिया। और अब जबकि विभिन्न राज्यों व केंद्र के चुनाव निकट भविष्य में होने वाले हैं भाजपा ने अपने तीसरे यानी समान नागरिक संहिता के मुद्दे को हवा देनी शुरू कर दी है। वैसे भी समान नागरिक संहिता केंद्र की मौजूदा सत्ताधारी भाजपा के लिए जनसंघ के समय से ही प्राथमिकता वाला एजेंडा रहा है। और भाजपा सत्ता में आने पर यूसीसी को लागू करने का वादा करने वाली पहली पार्टी थी और यह मुद्दा उसके 2019 के लोकसभा चुनाव घोषणा पत्र का प्रमुख हिस्सा भी था। अब यहां पहला प्रश्न यह है कि जिस समान नागरिक संहिता यानी कॉमन सिविल कोड की बात भाजपा दशकों से करती आ रही है उसमें और जिस समान नागरिक संहिता यानी यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) की चर्चा इनदिनों छिड़ी है इनमें अंतर क्या है? मोटे तौर पर समान नागरिक संहिता यानी कॉमन सिविल कोड का आशय पूरे देश के सभी नागरिकों के लिये एक जैसा कानून लागू करना है। यानी समान नागरिक संहिता का अर्थ होता है भारत में रहने वाले प्रत्येक नागरिक के लिए एक समान कानून होना। चाहे वह किसी भी धर्म,वर्ग,समुदाय या जाति का क्यों न हो। समान नागरिक संहिता लागू होने से सभी धर्मों का एक कानून होगा। शादी, तलाक, गोद लेने और जमीन-जायदाद के बंटवारे में सभी धर्मों के लिए एक ही कानून लागू होगा। जबकि समान नागरिक संहिता अर्थात यूनिफॉर्म सिविल कोड का अर्थ देश में रहने वाले किसी भी वर्ग व समुदाय विशेष के लोगों के लिये उनके वर्ग समुदाय के अनुसार एक जैसे कानून लागू करना। कहा जा रहा है कि यूसीसी का तात्पर्य देश के सभी नागरिकों के लिए एक समान कानून होना है जो धर्म पर आधारित नहीं है। परन्तु इसकी वास्तविक व विस्तृत परिभाषा क्या होगी यह तभी पता चल सकेगा जब इसका पूरा ड्राफ़्ट सामने आयेगा। गोया बावजूद इसके कि इसका ड्राफ़्ट अभी तक तैयार होने की कोई सूचना नहीं है फिर भी उम्मीद है कि इसमें वर्ग के अनुसार एक वर्ग एक समुदाय या एक सम्प्रदाय के लिये अलग अलग कानून होने की संभावना है। इसलिये यूनिफॉर्म सिविल कोड विषय को लेकर छिड़ी इस बहस में शोर और विवाद तो बहुत हैं परन्तु सी सी सी या यू सी सी के अंतर को लेकर अभी भी अनेक भ्रांतियां भी बनी हुई हैं।

राष्ट्रीय विधि आयोग ने देश की संस्थाओं व आम नागरिकों से गत 14 जून को इस विषय पर सुझाव मांगे थे। पिछले दिनों आयोग की ओर से मांगे गए सुझाव की समय-सीमा बढ़ा दी गई है। अब 28 जुलाई तक समान नागरिक संहिता को लेकर भारतीय नागरिक अपने सुझाव आयोग की वेबसाइट पर दे सकेंगे। विधि आयोग की विज्ञप्ति के अनुसार समान नागरिक संहिता विषय पर जनता की जबरदस्त प्रतिक्रिया प्राप्त होने के बाद इस तिथि को बढ़ा दिया गया है। इसके लिए समय बढ़ाने को लेकर भी विभिन्न क्षेत्रों से अनुरोध मिल रहे थे। ऐसे में आयोग ने संबंधित हितधारकों से विचार और सुझाव प्राप्त करने के लिए समय सीमा को दो सप्ताह और बढ़ाने का निर्णय लिया है। परन्तु विधि आयोग द्वारा ऑनलाइन मांगे जा रहे इन सुझावों में एक पेंच यह भी है कि देश की आधी से अधिक आबादी को शायद अभी तक यह भी पता नहीं होगा कि यू सी सी है क्या और देश में इस समय यू सी सी नामक किसी विषय को लेकर कोई बहस छिड़ी हुई है। और जिन्हें मालूम भी है वे अपनी रोजी रोटी कमाने में इतना व्यस्त हैं कि उन्हें इस बहस में पड़ने या सुझाव देने की फुर्सत ही नहीं। हाँ एक विशेष पूर्वाग्रही वर्ग ऐसा जरूर है जो वाट्स ऐप और दूसरे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर दिन रात सक्रिय है और वह बाकायदा वीडिओ बनाकर लोगों को यह बता रहा है कि किस तरह विधि आयोग की वेबसाइट पर जाकर यह लिखा जाये कि वे यू सी सी का समर्थन करते हैं। प्रचारित तो यह किया जा रहा है कि यू सी सी मुस्लिम विरोध में लाया जा रहा है। मुस्लिम समुदाय के लोगों में इसे लेकर बेचैनी भी दिखाई दे रही है। परन्तु यह प्रचार भी निराधार है। नगालैंड, मेघालय, पंजाब व तमिलनाडु के लोगों ने और झारखण्ड व मध्य प्रदेश के दर्जनों आदिवासी संगठनों ने विधि आयोग के सामने यूनिफॉर्म सिविल कोड के विचार को वापस लेने की मांग की है। इन आदिवासी संगठनों का मानना है कि यूसीसी के कारण आदिवासियों की पहचान खतरे में पड़ जाएगी। हमारे देश में ही हिमाचल प्रदेश व उत्तराखंड में भी कई आदिवासी समाजों में व दक्षिण भारत तथा उत्तर पूर्व की कई जनजातियों में बहुपतित्व प्रथा अभी भी जारी है। हिमाचल के किन्नौर के लोगों का मानना है कि यह प्रथा महाभारत के समय से चली आ रही है। इसके एक ही परिवार के सभी भाइयों द्वारा एक ही महिला से विवाह किया जाता है। इसके पीछे कारण यह बताया जाता है कि वनवास के दौरान जब पांडवों का अज्ञातवास था, तब पांडव द्रौपदी के साथ यहां छिपे हुए थे।

पंचायत चुनाव में भी बंगाल में इतनी हिंसा!

बलबीर पुंज

स्वतंत्र भारत में चुनाव के समय थोड़ी-बहुत मात्रा में हिंसा की खबरें आती रही है। किंतु प.बंगाल के साथ केरल- चुनाव और सामान्य दिनों में राजनीतिक रक्तपात, दूसरे विचार के प्रति असहिष्णुता और विरोधियों को शत्रु मानने संबंधित चिंतन के मामले में सर्वाधिक दागदार है। यह स्थिति तब है, जब इन दोनों प्रदेशों का अपने प्रतिष्ठित इतिहास के साथ भारत का गौरव और संगीत, नृत्य, त्योहार, भोजन आदि के लिए प्रसिद्ध रहा हैं। पश्चिम बंगाल के पंचायत चुनाव में हिंसा और परिणाम के बारे में जो आंशका थी, वही हुआ। आठ जुलाई को 73 हजार से अधिक सीटों (ग्राम पंचायत, जिला परिषद और पंचायत समिति) पर हुए चुनाव में सत्तारुढ़ तृणमूल कांग्रेस ने प्रचंड विजय प्राप्त की, तो मुख्य विपक्षी दल भाजपा, बहुत पीछे, दूसरे स्थान पर रही। परंतु इन नतीजों से अधिक चर्चा, निर्वाचन प्रक्रिया के दौरान हुई भीषण हिंसा है। राजनीतिक कार्यकताओं के बीच हंसिक झड़प, गोलीबारी, बमबाजी और आगजनी में आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार- 20 लोग मारे गए हैं। मृतकों की संख्या इससे अधिक हो सकती है।

अराजकता और मतपेटियों को खुलेआम लूटने की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल है। यह विकराल स्थिति तब दिखी, जब चुनाव के लिए 25 राज्यों से केंद्रीय सशस्त्र पुलिसबल (सीएपीएफ) और राज्य सशस्त्र पुलिस के 59,000 जवान तैनात थे। यक्ष प्रश्न यही है कि भारी मात्रा में सुरक्षाबलों की उपस्थिति और पहले से हिंसा की आशंका होने के बाद भी, खूनखराबे पर लगाम क्यों नहीं लग पाई? उपरोक्त प्रश्न का एक उत्तर- 9 जुलाई को सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के उपमहानिरीक्षक सुरजीत सिंह गुलेरिया के वक्तव्य में मिल जाता है। उनके अनुसार, जिन स्थानों पर सुरक्षाबलों को तैनात किया गया था, वहां किसी के हताहत होने की सूचना नहीं मिली और वहां चुनाव सुचारू रूप से संपन्न हुए। हमें संवेदनशील, अति-संवेदनशील मतदान केंद्रों की सूची नहीं मिली, जो सुरक्षाबलों की तैनाती के लिए सहायक हो। हमने राज्य चुनाव आयोग (सीईसी) को इस बारे में लिखा था, लेकिन आवश्यक जानकारी नहीं मिली। उन्होंने यह भी कहा, बीएसएफ ने बार-बार सीईसी से उन बूथों की जानकारी मांगी थी, जो संवेदनशील हैं, परंतु राज्य चुनाव आयोग ने केवल संवेनशील बूथों की संख्या बताई। अब वे संवेनशील बूथ कहां थे, इसका कोई उल्लेख नहीं किया। बंगाल में इस प्रकार की चुनावी हिंसा कोई पहली बार नहीं है। इसका एक लंबा और दुखद इतिहास है। स्वतंत्र भारत में चुनाव के समय थोड़ी-बहुत मात्रा में हिंसा की खबरें आती रही है। किंतु प.बंगाल के साथ केरल- चुनाव और सामान्य दिनों में राजनीतिक रक्तपात, दूसरे विचार के प्रति असहिष्णुता और विरोधियों को शत्रु मानने संबंधित चिंतन के मामले में सर्वाधिक दागदार है। यह स्थिति तब है, जब इन दोनों प्रदेशों का अपने प्रतिष्ठित इतिहास के साथ भारत का गौरव और संगीत, नृत्य, त्योहार, भोजन आदि के लिए प्रसिद्ध रहा हैं। केरल, जहां भारत के महान वैदिक दार्शनिकों में एक- आदि शंकराचार्य की जन्मस्थली है।

सत्तापक्ष-विपक्ष की राजनीति और रणनीति

यह सवाल अब एक पहेली बनती जा रही है। इस संदर्भ में बयानबाजी, भाषण, बैठक और घटनाएँ एक रोचक दौर में आ चुकी हैं। हाल ही में प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में कहा कि अगर जनता एनसीपी, सपा, राजद, डीएमके जैसे परिवारवादी पार्टियों को वोट करेगी तो इन दलों के प्रमुख नेताओं के पुत्र-पुत्रियों को इसका राजनीतिक लाभ मिलेगा। इतना ही नहीं उन्होंने कॉंग्रेस सहित भाजपा के खिलाफ लामबंद सभी विपक्षी दलों को भ्रष्ट बताया और उनपर लगभग बीस लाख करोड़ भ्रष्टाचार करने का आरोप भी मढ़ दिया। हालाँकि उनके द्वारा यह पहला अवसर नहीं था जब भाजपा के प्रमुख नेताओं ने विपक्षी दलों को परिवारवादी और भ्रष्टाचारी बताया हो। ऐसा प्रतीत होता है कि इस चुनाव में भाजपा ने परिवारवाद और भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाने के अलावा कोई विकल्प नही है। इसके अतिरिक्त एक पुराना सवाल भी दुहराया जा रहा है कि नरेंद्र मोदी के खिलाफ विपक्ष की तरफ प्रधानमंत्री का उम्मीदवार कौन होगा?

डॉ नवल किशोर
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

पक्ष-विपक्ष के बीच राजनीति और रणनीति बहुत तेज गति से एक दिलचस्प चुनावी रण की तरफ बढ़ रहा है। आगामी लोकसभा चुनाव 2024 में मोदी मैजिक बरकरार रहेगा या विपक्षी एकजुटता बाजी मार जाएगी। यह सवाल अब एक पहेली बनती जा रही है। इस संदर्भ में बयानबाजी, भाषण, बैठक और घटनाएँ एक रोचक दौर में आ चुकी हैं। हाल ही में प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में कहा कि अगर जनता एनसीपी, सपा, राजद, डीएमके जैसे परिवारवादी पार्टियों को वोट करेगी तो इन दलों के प्रमुख नेताओं के पुत्र-पुत्रियों को इसका राजनीतिक लाभ मिलेगा। इतना ही नहीं उन्होंने कॉंग्रेस सहित भाजपा के खिलाफ लामबंद सभी विपक्षी दलों को भ्रष्ट बताया और उनपर लगभग बीस लाख करोड़ भ्रष्टाचार करने का आरोप भी मढ़ दिया। हालाँकि उनके द्वारा यह पहला अवसर नहीं था जब भाजपा के प्रमुख नेताओं ने विपक्षी दलों को परिवारवादी और भ्रष्टाचारी बताया हो। ऐसा प्रतीत होता है कि इस चुनाव में भाजपा ने परिवारवाद और भ्रष्टाचार को मुद्दा बनाने के अलावा कोई विकल्प नही है। इसके अतिरिक्त एक पुराना सवाल भी दुहराया जा रहा है कि नरेंद्र मोदी के खिलाफ विपक्ष की तरफ प्रधानमंत्री का उम्मीदवार कौन होगा? इस तीन बिंदुओं पर विपक्षी दलों को लगातार घेरने की कोशिश भाजपा कर रही है। दरअसल भाजपा को बिखरी हुई विपक्ष में अपनी निश्चित जीत संभावना दिखती है। यही कारण है कि विपक्षी एकजुटता को खंडित करने की जोरदार कोशिश कर रही है।

बीते वर्ष अगस्त में नीतीश कुमार ने भाजपा से नाता तोड़ महागठबंधन के समर्थन से बिहार में एक सत्ता परिवर्तन किया। मुख्यमंत्री का शपथ ग्रहण के पश्चात नीतीश कुमार ने खुलेआम घोषणा किया कि वे भाजपा के खिलाफ देश स्तर पर सभी विपक्षी दलों को एकजुट करने की कोशिश करेंगे ताकि मोदी सरकार को हराया जा सके। इसी निश्चय को सफलीभूत करने के लिए नीतीश-तेजस्वी ने अनेक विपक्षी दल के नेताओं से मिलकर एकजुटता का प्रयास किया जिसके परिणामस्वरूप 23 जून 2023 को पहली विपक्षी बैठक पटना में हुई। पंद्रह दलों के अध्यक्ष और नेताओं ने एकजुट होकर मोदी सरकार को आगामी लोकसभा में हराने की प्रतिबद्धता दोहरायी। पिछली संसद सत्र के दौरान अड़ानी प्रकरण पर जेपीसी माँग हो या राहुल गाँधी के सदस्यता रद्द का सवाल हो, दोनों मुद्दे पर इस प्रकार की एकजुटता दिखी थी। भाजपा की मोचार्बंदी के बिंदु पर एनसीपी (शरद पवार), शिव सेना(उद्धव), डीएमके, टीएमसी, झामूमो, राजद, जदयू, सपा और वाम दल समूह जैसे पार्टियों के बीच सहमति लगभग बन चुकी है। आगामी बैठकों में एक लोकसभा सीट-एक उम्मीदवार के फामूर्ले पर चुनावी रणनीति भी तैयार होंगी। मोदी बनाम विपक्षी चेहरे के बजाय जन सरोकार के मुद्दे ही चुनाव अभियान के केंद्र में होंगे और उन मुद्दों को रेखांकित भी की जायेगी। इस मुहिम में कॉंग्रेस ने राज्य स्तर पर बड़ा दिल दिखाने का मन बना चुकी है। पूर्ववर्ती सरकार यूपीए-कऔर वढअ-क्क्रमें कॉंग्रेस की तरफ से ऐसी बानगी और वैचारिक सहमति दिख चुकी है जब वाम दल समूह और क्षेत्रीय दलों के साथ मिलकर सत्ता चलाई। उस गठबंधन का बिखराव और उनके दस साल शासन के हिसाब ने ही भाजपा को सत्ता दिलायी थी।

वर्तमान मोदी सरकार के दस वर्ष पूरे होने वाले हैं और ऐसे में कामकाज का आकलन स्वाभाविक है। गठबंधन के दृष्टिकोण से महाराष्ट्र में शिवसेना, पंजाब में अकाली दल और बिहार में जदयू जैसे तीन राज्य-स्तर पर मजबूत घटक दल भाजपा का साथ छोड़े ही नहीं बल्कि मुखर विरोधी बन चुके हैं। टीएमसी जैसे भाजपा के पूर्व सहयोगी दलें भी मोदी सरकार का खुलकर मुखालफत कर रहे हैं। ओड़िसा में बीजू जनता दल और आंध्र प्रदेश में वाईएसआर जैसी पार्टियाँ जो मुद्दों के आधार पर सरकार के साथ खड़ी रही है वह भी गठबंधन में आने तैयार नहीं दिख रही हैं। उतर-पूर्व में मणिपुर में गृहयुद्ध जैसी स्तिथि भी भाजपा द्वारा प्रचारित डबल इंजन सरकार की विफलता ही मानी जाएगी। ऐसी राजनीतिक परिस्तिथि में भाजपा दोहरी संकट से गुजर रही है। पहली संकट, कोई नई राजनीतिक दल फि लहाल भाजपा के साथ आने को तैयार नहीं दिख रही है। इसके निदान के तौर पर भाजपा ने महाराष्ट्र में दो दलों के टूटे से बनी दल के प्रमुख को उप मुख्यमंत्री का पद देकर सहयोगी बनाया है। इन दलों का जनसमर्थन-परीक्षण आगामी लोकसभा के चुनाव में होनी है। फि लहाल यह कहना मुश्किल है कि इस प्रयोग से भाजपा को कितना फायदा हुआ है। दूसरी संकट, नरेंद्र मोदी का चेहरा जो भाजपा के लगातार दूसरी जीत दिलाने में सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक अस्त्र-शस्त्र रहा है। वर्ष 2014 के बाद राज्यों के चुनाव में भाजपा ने नरेंद्र मोदी के चेहरे का भरपूर इस्तेमाल किया और यही उसके राज्य-वार विस्तार का प्रमुख कारण भी है। हाल में संपन्न कर्नाटक विधानसभा चुनाव 2023 में प्रयास के बावजूद भी मिली हार से भाजपा विचलित है जबकि इससे पहले भी बिहार, बंगाल, दिल्ली, उड़ीसा, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, केरल, राजस्थान, मध्य प्रदेश, छतीसगढ़ सहित दर्जनों चुनाव हार चुकी है।

मोदी सरकार को हराना नामुमकिन है, अब ये धारणा एक स्वाभाविक ढलान पर है। इसके तीन प्रमुख कारण है जिसमें पहला भ्रष्टाचार ही है। भाजपा की नजर में कोई दल या उसके नेता तभी तक भ्रष्टाचारी या दागी है जब तक वह विरोधी खेमे है। जैसे ही वह भाजपा में शामिल हो जाता है उनपर लगे सभी आरोप ठंडे बस्ते में चले जाते है। एक तरफ भाजपा विपक्ष को भ्रष्टाचारियों का गठबंधन साबित करने में लगी है। वही विपक्ष भी भाजपा को उन तथाकथित भ्रष्टाचारियों के लिए वाशिंग मशीन बता है जो दबाव में या बागी बनकर विपक्ष से भाजपा के साथ चली जाती है। इसलिए विपक्षी एकजुटता के खिलाफ भ्रष्टाचार का नैरेटिव वांछित प्रभावकारी नहीं डाल पा रहा है। दूसरा, विपक्षी दलों को तोड़ने या डराने के लिए ईडी/आईटी/सीबीआई जैसी जाँच एजेंसियों का दुरुपयोग एक स्थापित प्रचलन बन गया है। जनविमर्श में इनके द्वारा अग्रेषित छापों का मतलब सिर्फ.टीवी में ब्रेकिंग न्यूज और समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठ की खबर बन कर रह गया है। तीसरा, जन सरोकार के मुद्दे पर दस साल का हिसाब देना भी भाजपा के लिए चुनौती है। समय-समय पर किए गए वायदों का आकलन, बेरोजगारी, अर्थव्यवस्था, केंद्र-राज्य संबंध और भाजपा द्वारा प्रदर्शित राजनीति व शासन का समेकित विवेचन वर्ष होगा। इन मुद्दों को विपक्षी गठबंधन अपने चुनाव अभियान में शामिल कर मोदी सरकार को घेरेगी वही भाजपा अपने प्रचारतंत्र से जवाब देगी। ये देखना दिलचस्प होगा कि जनमानस को कौन ज्यादा प्रभावित कर पाता है। एक तरफ जो डर जाए वो मोदी नही नैरेटिव वही दूसरी डर से लड़ने को तैयार विपक्षी दलों की बैठक 17-18 जुलाई 2023 को बैंगलुरु में होने जा रही है। इन बैठकों के माध्यम से बनती विपक्षी एकजुटता आगामी लोकसभा चुनाव 2024 को कितना प्रभावित करेगा, ये देखना बेहद दिलचस्प होगा।

महिलाएँ : समाज की वास्तविक वास्तुकार

हमारा समाज कहता है, पृथ्वी पर सबसे मूल्यवान वस्तु स्त्रियाँ हैं। आइए इस धरती पर हर महिला को सलाम करें। ह्यमहिलाएं समाज की वास्तविक वास्तुकार हैं, वे जो चाहें वह बना सकती हैं। एक महिला क्या चाहती है?-समय, देखभाल और बिना शर्त प्यार, आदि। इस धरती पर प्रत्येक महिला गरिमा, संस्कृति और सम्मान का प्रतीक है। नारी के बिना यह संसार सूना और अंधा है। महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। निजी जीवन में महिला की भागीदारी काफी प्रभावशाली है। कई समाज घरों और समुदायों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज करते हैं। महिलाओं के अवैतनिक श्रम को अक्सर न तो महत्व दिया जाता है और न ही जीडीपी में शामिल किया जाता है, जो अक्सर अनदेखा और गैर-मान्यता प्राप्त रहता है। अब यह पहचानने का समय आ गया है कि उनकी भूमिका और योगदान कितने महत्वपूर्ण हैं। आइए सुनिश्चित करें कि दोनों लिंग एक-दूसरे को भागीदार के रूप में देखें ...

प्रियंका सौरभ
लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं

महिलाएं एक सशक्त शब्द है. यह आकर्षक है क्योंकि यह प्यार, देखभाल, पोषण, दायित्वों, जिम्मेदारियों, शक्ति, अनंत काल, मातृत्व आदि को दशार्ता है। नारी समाज का दर्पण है। जब उसे हाशिये पर धकेल दिया जाता है, तो उस पर अत्याचार किया जाता है; यदि इसे पाला जाता है, तो समाज को पाला जाता है; यदि इसे मजबूत किया जाता है, तो यह सशक्त होता है। वह संस्कृति और रीति-रिवाजों को बनाए रखती है और उन्हें सामने लाती है। वह वह है जो अपने पति और उसके परिवार की परवाह करती है। दूसरे शब्दों में, वह समाज में सब कुछ बनाती है। एक महिला (माँ) उसकी संतान होती है, पहली शिक्षक; वह अपने बच्चों का प्यार से इलाज करने वाली पहली डॉक्टर हैं। वह अपने बच्चों को पढ़ाने वाली पहली शिक्षिका हैं, अपने बच्चों के साथ खेल खेलने वाली पहली साथी हैं। अपने बच्चे के विकास में उसका कार्य बहुत बड़ा है।

हमारे समाज में कई सालों से महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझा जाता रहा है। इस प्रकार की हीनता के कारण उन्हें अपने जीवन में विभिन्न मुद्दों और समस्याओं का सामना करना पड़ता है। खुद को पुरुषों के बराबर साबित करने के लिए उन्हें पुरुषों से ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है। मध्य युग में लोग महिलाओं को विनाश की कुंजी मानते थे, इसलिए उन्होंने कभी भी महिलाओं को पुरुषों की तरह बाहर जाने और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति नहीं दी। फिर भी आधुनिक युग में महिलाओं को अपने दैनिक जीवन में कई सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है और अपना करियर स्थापित करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। कई माता-पिता केवल लड़का पैदा करना पसंद करते हैं और केवल लड़कों को ही शिक्षा देने की अनुमति देते हैं। उनके लिए महिलाएं परिवार को खुश और स्वस्थ रखने का माध्यम मात्र हैं।

एक महिला को समाज में अधिक उपहास की दृष्टि से देखा जाता है और यदि वह प्रेम विवाह या अंतरजातीय प्रेम विवाह में शामिल होती है तो उसे ऑनर किलिंग का खतरा अधिक होता है। महिलाओं को पुरुषों की तुलना में स्वायत्तता, घर से बाहर गतिशीलता, सामाजिक स्वतंत्रता आदि तक समान पहुंच नहीं है। महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली कुछ समस्याएं उनकी घरेलू जिम्मेदारियों और सांस्कृतिक और सामाजिक निर्दिष्ट भूमिकाओं के कारण हैं। भारत सरकार ने लैंगिक समानता और सभी महिलाओं और लड़कियों की आर्थिक स्वतंत्रता को आगे बढ़ाने के लिए हाल के वर्षों में कई नई नीतियां और सुधार लागू किए हैं। महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए, कुछ प्रमुख पहलों में 22 करोड़ महिलाओं के लिए जन धन खाते बनाना और उन्हें मुद्रा योजना के तहत कम ब्याज पर ऋण प्रदान करना शामिल है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ पहल शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई थी।

जनसंख्या की आवश्यकताओं के प्रति जिम्मेदार और उत्तरदायी निष्पक्ष, सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली स्वास्थ्य सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच प्राप्त करने का लक्ष्य राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन का प्राथमिक फोकस है। महिलाओं को सशस्त्र सेवाओं में स्थायी कमीशन प्रदान करना और मातृत्व अवकाश की अवधि 12 से बढ़ाकर 26 सप्ताह करना सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण के लिए अनुकूल माहौल को बढ़ावा देता है और एक सक्षम वातावरण स्थापित करता है। बलात्कार को रोकने के लिए बनाए गए कानूनों को भी और अधिक सख्त बनाया जा रहा है। इसके अलावा, उज्ज्वला कार्यक्रम, स्वाधार गृह कार्यक्रम और महिला शक्ति केंद्र उन मुद्दों से निपटने के लिए केंद्र सरकार द्वारा लागू की गई नीतियों और कार्यक्रमों के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जिनका महिलाओं को आम तौर पर सामना करना पड़ता है। ये उन नीतियों और कार्यक्रमों के कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण हैं जिन्हें लागू किया गया है। देश में महिलाओं के व्यापक सशक्तिकरण की गारंटी के लिए, सरकार, व्यापारिक समुदाय, गैर-लाभकारी संस्था और आम जनता सभी को मिलकर काम करना चाहिए। जन आंदोलन और जन भागीदारी के माध्यम से सामूहिक व्यवहार परिवर्तन भी आवश्यक है।

हमारा समाज कहता है, पृथ्वी पर सबसे मूल्यवान वस्तु ह्यस्त्रियाँह्न हैं। आइए इस धरती पर हर महिला को सलाम करें। ह्यमहिलाएं समाज की वास्तविक वास्तुकार हैं, वे जो चाहें वह बना सकती हैं ह्न ह्यएक महिला क्या चाहती हैह्न?-समय, देखभाल और बिना शर्त प्यार, आदि। इस धरती पर प्रत्येक महिला गरिमा, संस्कृति और सम्मान का प्रतीक है। नारी के बिना यह संसार सूना और अंधा है। महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। निजी जीवन में महिला की भागीदारी काफी प्रभावशाली है। कई समाज घरों और समुदायों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को नजरअंदाज करते हैं। महिलाओं के अवैतनिक श्रम को अक्सर न तो महत्व दिया जाता है और न ही जीडीपी में शामिल किया जाता है, जो अक्सर अनदेखा और गैर-मान्यता प्राप्त रहता है। अब यह पहचानने का समय आ गया है कि उनकी भूमिका और योगदान कितने महत्वपूर्ण हैं। आइए सुनिश्चित करें कि दोनों लिंग एक-दूसरे को भागीदार के रूप में देखें।

आवश्यक है अतीत के धरातल पर वर्तमान का मूल्यांकन

डा. रवीन्द्र अरजरिया

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्यों ने देश की प्रभावशाली छवि को उजागर कर दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फ्रांस से संयुक्त अरब अमीरात होते हुए स्वदेश वापिसी की है। उनका प्रत्येक दौरा अभी तक विकास के नये सोपान के साथ पूर्ण होता रहा है। विश्व विरादरी में भारत की प्रभावशाली उपस्थिति से अनेक देशों के माथे पर बल पडने लगे हैं। दुनिया में विश्वास का पर्यायवाची बनने की राह में दिन दुगनी, रात चौगुनी प्रगति होने से सात समुन्दर पार रहने वाले भारतवंशियों का मस्तक सम्मान से ऊंचा होने लगा है। कभी दुनिया से सहायता की अपेक्षा करने वाला देश आज विदेशी धरती पर सहयोग, समर्पण और सहकार बांट रहा है। विस्तारवादी नीतियों के पक्षधर अपनी कूटनीतियों के धराशाही होने के कारण तिलमिला रहे हैं। उनकी बेचैनी को बढाने वाले अनेक कारकों में विगत 9 वर्षों की सीमित अवधि में मिलने वाले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मानों की अन्तहीन श्रंखला भी महात्वपूर्ण स्थान रखती है। अभी हाल ही में देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को फ्रांस के सर्वोच्च सम्मान लीजन ऑफ ऑनर से सम्मानित गया। यह सम्मान पाने वाले पहले भारतीय प्रधानमंत्री हैं। फ्रांस का सर्वोच्च सम्मान लीजन ऑफ ऑनर दुनिया भर के चुनिंदा प्रमुख नेताओं और प्रतिष्ठित हस्तियों को ही दिया जाता है। उल्लेखनीय है कि यह 14वां ऐसा सर्वोच्च राजकीय सम्मान है जो संसार के विभिन्न देशों ने पीएम मोदी को प्रदान किया है। इसके पूर्व मिस्र का सर्वोच्च सम्मान ऑर्डर ऑफ द नाइल पुरस्कार से वहां के राष्ट्रपति अब्देल फतह अल-सीसी ने काहिरा में सम्मानित किया था। कंपेनियन ऑफ द ऑर्डर ऑफ लोगोहू नामक सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार उन्हें पापुआ न्यू गिनी को प्रशांत द्वीप देशों की एकता के लिए समर्थन देने और ग्लोबल साउथ के लिए नेतृत्व करने के लिए मई 2023 में दिया गया था। कंपेनियन ऑफ द ऑर्डर ऑफ फिजी से उन्हें वैश्विक नेतृत्व की मान्यता देते हुए फिजी का यह सर्वोच्च सम्मान मई 2023 में दिया गया। पापुआ न्यू गिनी की यात्रा के दौरान देश के प्रधानमंत्री को पलाऊ गणराज्य के राष्ट्रपति सुरांगेल एस. व्हिप्स जूनियर ने एबाकल पुरस्कार से मई 2023 में सम्मानित किया था। भूटान ने दिसंबर 2021 में उन्हें वहां के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ऑर्डर ऑफ द ड्रुक ग्यालपो से सम्मानित किया था। अमेरिकी सरकार का लीजन ऑफ मेरिट सम्मान जिसे संयुक्त राज्य सशस्त्र बलों के सर्वोच्च पुरस्कार के रूप में जाना जाता है। यह सम्मान उत्कृष्ट सेवाओं और उपलब्धियों के प्रदर्शन में असाधारण सराहनीय आचरण हेतु दिया जाता है। हमारे प्रधानमंत्री को यह सन् 2020 में दिया गया। बहरीन के प्रधानमंत्री ने सन् 2019 में वहां का सर्वोच्च सम्मान द किंग हमाद ऑर्डर ऑफ द रेनेसा प्रदान किया था। मालदीप में ऑर्डर ऑफ डिस्टिंग्विश्ड रूल ऑफ निशान इज्जुद्दीन वह सर्वोच्च सम्मान है जो विदेशी गणमान्य व्यक्तियों को दिया जाता है। यह सम्मान भी भारत के प्रधानमंत्री को सन् 2019 में दिया गया। द ऑर्डर ऑफ सेंट एंड्रयू द एपोस्टल रूस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है, जिससे नरेन्द्र मोदी को 2019 में सम्मानित किया गया। संयुक्त अरब अमीरात के सर्वोच्च नागरिक सम्मान आर्डर आफ जायद से उन्हें 2019 में सम्मानित किया गया। ग्रैंड कॉलर ऑफ द स्टेट ऑफ फिलिस्तीन नामक पुरस्कार को फिलिस्तीन का सर्वोच्च सम्मान होने का गौरव प्राप्त है जिससे हमारे देश को सन् 2018 में सम्मानित किया गया। अफगानिस्तान के सर्वोच्च नागरिक सम्मान आमीर अमानुल्लाह खान पुरस्कार से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को सन् 2016 में नवाजा गया। सऊद सऊदी अरब के सर्वोच्च सम्मान आर्डर आफ अब्दुल अजीज अल सऊदी अरब से उन्हें सन् 2016 में सम्मानित किया गया। इसके अलावा अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने भी हमारे देश के प्रधानमंत्री की बहुमुखी प्रतिभा, क्षमता और क्रियाशीलता का लोहा मानते हुए उन्हें अपने सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया जिसमें कैम्ब्रिज एनर्जी रिसर्च एसोसिएट्स का ग्लोबल एनर्जी एंड एनवायरनमेंट लीडरशिप अवार्ड 2021 है जो वैश्विक ऊर्जा और पर्यावरण के भविष्य के प्रति नेतृत्व की प्रतिबद्धता के लिए प्रदान किया जाता है। स्वच्छ भारत अभियान-2019 के लिए बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन का सर्वोच्च सम्मान ग्लोबल गोलकीपर प्र

संक्षिप्त खबरें

डीएम ने की स्मार्ट सिटी परियोजना की समीक्षा

मुजफ्फरपुर। स्मार्ट सिटी परियोजना में हुए प्रगति की समीक्षा डीएम प्रणव कुमार द्वारा किया गया।15 सितंबर तक स्विमिंग पुल ,और स्टेडियम का उदघाटन होने की संभावना है। वहां से 33/11केवी का विद्युत लाइन को प्रतिस्थापन करने का दिया गया निर्देश।पार्किंग स्थल से कंपोस्ट प्लांट भी रिमूव किया जाएगा।सिटिंग एरिया,पवेलियन प्लांटेशन, मन के दूसरे साइड में सरकारी जमीन चिन्हित करने ,अतिक्रमण हटाकर अतिक्रमण वाद चलाकर अतिक्रमण हटाने का आदि के संबंध में निदेश दिया गया। बैठक में नगर आयुक्त,डीडीसी ,सारा असरफ प्रोबेशन आईएएस सीओ मुशहरी तथा स्मार्ट सिटी परियोजना के अधिकारी उपस्थित थे।

सावन में झमाझम बारिश के लिए तरस रहे किसान

मुजफ्फरपुर। आधा सावन बुत गया लेकिन जिले के किसान झमाझम बारिश के लिए आसमान की ओर टकटकी लगाए हुए हैं। आर्द्रा नक्षत्र की शुरूआत में सिर्फ एक दिन जमकर मेघ बरसा उसके बाद यदि कथा बूदाबांदी ही होती रही। सुबह से आसमान में बादल छाए तो रहते हैं लेकिन बरसते नहीं। दिन में तेज धूप निकलने से जिन खेतों में किसानों ने पटवन कर दान की रोपाई की है ,उसमें दरारें पड़ गई हैं। उमस ने लोगों को परेशान कर कर रखा है। इस बीच ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा के अनुसार अधिकतम तापमान आज 33.5 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया ।यह सामान्य से 1.1डिग्री अधिक है। न्यूनतम तापमान 25.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। सुबह में सापेक्ष आर्द्रता 90 प्रतिशत और दोपहर बाद70 प्रतिशत हो गया।पुरवा हवा की गतइ10.1किमी प्रतिघंटा और बषार्पात शून्य रहा।

आंबेडकर परिचर्चा का आयोजन

बोचहा। प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न पंचायतों में आंबेडकर परिचर्चा का आयोजन किया गया , इस दौरान शनिवार को हुई इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करणपुर दक्षिणी में लाल बाबू सहनी व रोशी में राजा राय। एवं मैदापुर में। राम चंद्र राय ने किया। वही आंबेडकर परिचर्चा के दौरान वक्ताओं ने कहा कि आज बाबा साहब द्वारा रचित भारतीय संविधान खतरे में है। उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव चुनाव से पूर्व किए गए अपने वादों को पूरा करने में लगे हुए हैं। मौके पर राजद प्रखंड अध्यक्ष रमाकांत सहनी , लक्ष्मी राय, भोला दास, भाग नारायण सहनी, डॉक्टर अलाउद्दीन, हरिलाल राय, , विनोद राय, संजय राय आदि उपस्थित थे।

अम्बेडकर परिचर्चा का हुआ आयोजन

मुजफ्फरपुर। राष्ट्रीय जनता दल के तत्वाधान में कुढ़नी विधानसभा अंतर्गत जगरनाथपुर एवं गोरैया दुबियाही पंचायत में अंबेडकर परिचर्चा एवम् प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी के चित्र पर माल्यार्पण एवम् पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। जिसकी अध्यक्षता जगरनाथपुर में राजद पंचायत अध्यक्ष गोपाल चौधरी ने किया।वही गोरैय दुबियाही में राजद पंचायत अध्यक्ष अक्षय कुमार राम ने किया।जिसमें मुख्य रूप से सभी वक्ताओं ने बाबासाहेब डॉ भीमराव अंबेडकर जी के जीवनी एवं उनके विचार के बारे में प्रकाश डालें।मौके पर वक्ता के रूप में उपस्थित प्रखण्ड अध्यक्ष मो. खुर्शीद आलम, प्रखण्ड प्रधान महा सचिव शंकर कुशवाहा,युवा राजद प्रखंड अध्यक्ष सह पंचायत समिति सदस्य रंजन यादव, राजद नेता सह मुखिया संघ के प्रखण्ड अध्यक्ष अशोक राय,राजद नेता सह मुखिया अनीश सिंह, प्रखण्ड उपाध्यक्ष नागेंद्र राय,जिला सचिव रविंद्र राय, युवा राजद मिडिया प्रभारी टिंकु कुशवाहा,उदय कुमार, रामनरेश राम,राजेश रौशन, जगदीश राम, बालेश्वर सहनी एवम् पूर्व सरपंच सुदिश गुप्ता सहित सैकड़ों राष्ट्रीय जनता दल के नेता कार्यकर्ता एवं आम आवाम महिला पुरुष एवम् नौजवान सहित बच्चे भी उपस्थित थे।

8 लीटर देसी शराब के साथ धंधेबाज गिरफ्तार

मंसूरचक, बेगूसराय। समसा एक के वार्ड संख्या 15 में शनिवार की रात छापेमारी कर चुलाई देसी शराब निर्माण कर बेचने के आरोप में एक धंधेबाजों को गिरफ्तार गुप्त सूचना के आधार पर एएसआई मनोज कुमार सिंह ने किया है। थानाध्यक्ष रंजन कुमार ठाकुर ने बताया कि पकड़े गए देसी शराब धंधेबाजों में समसा के कस्टोली टोला निवासी रायबहादुर चौधरी को एक प्लास्टिक के डब्बा में 8 लीटर देसी शराब घर से बरामद किया है। आरोपी को रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया गया और न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

कमला नदी में जलबोझी को लेकर पहुँचे कांवरिया आज शिवालयों में करेंगे जलाभिषेक

बोल बम के जयकारों से गूंज उठा क्षेत्र भक्तिमय हुआ माहौल

- कमला पुल समीप भव्य मेला का आयोजन बोल बम सेवा समिति सेवा में तंतपर , प्रशासन की तैनाती रही

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी जयनगर सावन के दूसरी सोमवार को विभिन्न शिवालयों में पूजा पाठ जलाभिषेक को लेकर शनिवार की देर शाम से रविवार की देर शाम तक स्थानीय समेत विभिन्न क्षेत्रों और नेपाल से कांवरिया श्रद्धालुओं का जत्था जयनगर स्थित कमला नदी तट पर जल बोझी को लेकर आने का शिलशिला जारी रहा। कांवरिया ट्रेन बस चार पहिया तीन पहिया वाहनों और निजी वाहनों से पहुँचे। रविवार की अहले सुबह कमला नदी तट पर स्नान ध्यान कर विधिवत कमला मैया और परिसर स्थित मंदिर में देवी देवताओं की पूजा अर्चना कर कमला नदी से कांवर में जल बोझकर ॐ नमः शिवाय बोल बम के जयकारों के साथ विभिन्न शिवालयों में पूजा अर्चना जलाभिषेक के लिए रवाना हुए। यह शिलशिला रविवार की देर शाम तक जारी रहा। जयनगर और कमला नदी तट एवं कांवरिया पथ पर बोल बम की जयकारों से गूंजता रहा। कांवरिया श्रद्धालु झूमते नाचते दिखे और जयकारे लगाते हुए शिवालयों में जलाभिषेक को बोल बम के जयकारे लगा चल रहे थे। कमला नदी के घाटों पर बोल बम सेवा समिति के सदस्यों के कांवरियो के सेवा में तत्तपर दिखे। पश्चिमी तट पर्ण कुटी मन्दिर और नदी के आसपास बोल बम सेवा समिति के द्वारा भव्य पंडाल निर्माण कर मेला का आयोजन किया गया है। घाटों और मेला परिसर को सजाया गया है लाईट बती की उत्तम व्यवस्था की गई है। मेला परिसर स्थल के आसपास दिन रात समिती के द्वारा लागये गये लाउडस्पीकर की धुन पर भक्ति गीत संगीत पर लाल पीले हरे गेरुआ वस्त्र पहने कांवरिया झूमते नाचते दिखे। प्रशासन की टीम भी निगरानी कर रहे थे। वही शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के लोग सड़क किनारे कांवरिया पथ पर कांवरियों का स्वागत करते दिखे निःशुल्क मेडिकल कैम्प , भोजन, पानी, जूस, खीर , शरबत का प्रसाद का काउंटर कांवरियों की सेवा में लगाया गया है कांवरियां के पथ पर कांवरियों के सेवा करते दिखे कांवरियों के बीच पानी भोजन का वितरण कर रहे थे। मेला परिसर में कांवरियों के द्वारा खरीदारी करते भी देखें गये। इतनी अपार भीड़ देखने को मिल रही है। कांवरियों का जत्था अनुपम छठा बिखेर रहा था। कांवरियों के द्वारा कमला नदी से जलबोझकर आज सोमवार को शिलानाथ धाम, कपिलेश्वर स्थान समेत विभिन्न शिवलयों में पूजा पाठ और जलाभिषेक करेंगे। वही प्रशासन की टीम कमला नदी और नदी के तट मेला परिसर में तैनात थी कांवरियां पथ भी पुलिस की टीम गस्त लगा रही थी।

लोजपा (रा) के प्रतिनिधि मंडल ने शिवनगर गांव के गंगा कटाव क्षेत्र का किया दौरा

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। रविवार को बिहार चुनाव अभियान प्रमुख सुरेंद्र विवेक एवं जिला अध्यक्ष प्रेम कुमार पासवान जिले के बलिया प्रखंड के भवानन्दपुर पंचायत के शिवनगर गांव में गंगा का कटाव देखने पहुंचे। जहां जोरों से गंगा कटाव जारी है। वहां की जनता से बात की तो मालूम हुआ कि जनता हताश और निराश हो गई।जिला प्रशासन मूक दर्शक बनी हुई है। बेगूसराय लोजपा (रामविलास) के प्रतिनिधि मंडल प्रभावित गांव का दौरा कर संबंधित विभाग एवं स्थानीय आला पदाधिकारियों से दूरभाष से बातचीत की। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास बेगूसराय जिला प्रशासन से मांग करती है कि उपयुक्त प्रभावित गांव को गंगा कटाव से अविलंब रुकवाया जाए। शिवनगर गांव की जनता इतनी दहशत में है कि घर खाली कर दूसरी जगह जाने को विवश हो रहे हैं। प्रतिनिधिमंडल में जाने वाले जिला महासचिव सह बलिया प्रखंड प्रभारी रत्नेश कुमार, जिला महासचिव सह बरौनी प्रखंड के प्रभारी दिलीप कुमार नीरज, बलिया नगर अध्यक्ष गौतम कुमार सिन्हा, आईटी सेल के जिला अध्यक्ष अजीत कुमार शर्मा, कार्यकारी नगर अध्यक्ष कुंदन कुमार, नगर महासचिव अजीत कुमार, गिरीश कुमार आदि लोजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

दूसरी बार इंद्रजीत राय को मधुबनी जिला प्रवक्ता के रूप में किया गया मनोनीत

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी रहिका प्रखंड क्षेत्र के खरौआ गांव निवासी समाजवादी नेता इंद्रजीत राय को राजद जिला अध्यक्ष वीर बहादुर राय के अनुशंसा और प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह के निर्देश पर दूसरी बार राष्ट्रीय जनता दल मधुबनी का जिला प्रवक्ता मनोनीत किया गया है. कार्यकताओं ने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव एवं प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह जिला अध्यक्ष बीर बहादुर राय को धन्यवाद देते हुए इंद्रजीत राय को बधाई दिया इंद्रजीत राय ने कहा कि दूसरी बार राष्ट्रीय जनता दल बिहार प्रदेश इकाई पटना के द्वारा राजद मधुबनी का जिला प्रवक्ता बनाए जाने पर राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव उप मुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह राष्ट्रीय प्रवक्ता मनोज झा प्रदेश प्रवक्ता मो.एजाज अहमद साहब शक्ति यादव इज्या यादव सतीश कुमार दास चितरंजन गगन मृत्युंजय तिवारी सारिका पासवान डॉ उर्मिला ठाकुर प्रदेश सचिव रामबहदुर यादव पूर्व केंद्रीय मंत्री देवेंद्र प्रसाद यादव राज्यसभा सांसद डॉ.फैयाज अहमद उद्योग मंत्री समीर कुमार महासेठ पूर्व विधायक श्री सीताराम यादव रामकुमार यादव,उमाकांत यादव,रामशीष यादव,रामवतार पासवान एवं जिला राजद के सभी नेता गण का धन्यवाद करते हैं। पार्टी ने जो जवाबदेही दी है उसका बखुबी निर्वहन करूंगा एवं पार्टी के विचार धारा को प्रिंट इलेक्टोनिक मीडिया के साथ साथ सोशल मीडिया के माध्यम से जन-जन तक पहुंचाने का काम करूंगा। बधाई देने वालों में जिला अध्यक्ष वीर बहादुर राय, राजद के वरिष्ट नेता रामकुमार यादव राजकुमार यादव अरुण कुमार चौधरी मो.अंजार अहमद वीना देवी अनिल लोहिया अमीर प्रसाद यादव इंद्रभूषण यादव संजय कुमार यादव गुलजार अहमद जीबछ यादव गंगा प्रसाद चौधरी अजीतनाथ मुन्ना सरहान यादव देवनारायण यादव जहांगीर अली त्रिभुवन चौधरी उर्फ राजा चौधरी प्रो.धनबीर यादव,रुदल यादव जयजय राम यादव मनोज चौधरी मिश्रीलाल यादव उमेश यादव उमेश राम रामवरण राम सचिन यादव मनोज शर्मा कुंदन यादव लालबाबू यादव रामकुमार यादव सहित जिला राष्ट्रीय जनता दल के कार्यकर्ता शामिल हैं।

35बर्षों से बंद अस्पताल हुआ चालू, मिलने लगी प्रसव सुविधा

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। री-ओपेन मुहिम के तहत महंत दर्शन दास अस्पताल में शनिवार को एपीएचसी महंत मनियारी में अब आधी आबादी को प्रसव सुविधा मिलनी शुरू हो गई।सीएस डा. उमेशचंद्र शर्मा,जिला पार्षद अध्यक्षा रीना पासवान,विधायक केदार प्रसाद गुप्ता ,री - ओपन मुहिम के शशि रंजन ने संयुक्त रूप से अस्पताल का द्घाटन किया।.इस अवसर पर अस्पताल को दुल्हन की तरह सजाया गया था।.मंचासीन अतिथियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर सभा का शुभारम्भ कराया। संचालन पीएचसी प्रभारी धर्मेंद्र कुमार व धन्यवाद ज्ञापन डा.गौतम राकेश,आशीष मिश्रा ने किया।.मौके पर उद्घाटनकताओं ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि मनियारी की धरती को एक नयी चीज मिली है ,जो खासकर आधी आबादी के लिए संजीवनी साबित होगी।. खासकर इन क्षेत्र की महिलाओं को कुढ़नी पि पीएचचसी जाने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता था।.अब उन्हें राहत मिलेगी।.सीएस यू सी शर्मा ने लोगों से कहा कि यहां अभी काफी कमियां हैं, जिसे दूर करने का प्रयास किया जाएगा।.इसके लिए वे लगातार प्रयासरत हैं।

जिप अध्यक्ष ने कहा कि उनका सपना आज पूरा हो गया है।, वह स्वयं महिला हैं, महिलाओं को क्या कठिनाईयां होती हैं, वह जानती हैं.। इसके लिए वह सीएस को साधुवाद देती हैं।.वही उन्होंने कहा कि वे यहां जल्द कमियों को दूर करने का प्रयास करें, ताकि महिलाओं को परेशानी का सामना करना नहीं पड़े।उन्होंने .तीनों शिफ्ट के लिए चिकित्सक,एएनएम एवं फर्मासिष्टों की व्यवस्था करेने का अनुरोध किया। विधायक ने अपने कोष से ग्रामीणों के लिए शेड निर्माण की घोषणा की।मुहिम के शशिरंजन ने अस्पताल को बेहतर सुविधा मिले व स्माष्याओ को दूर करने पर निरंतर प्रयास करते रहने की बात कही। इस दौरान सीएस ने पूरे अस्पताल का निरीक्षण किया तथा यहां की कमियों का व्यौरा लिया।मौके पर मंडल अध्यक्ष अभिषेक कुमार प्रिंस डा. एमएन चौधरी,एसीएमओ डा.सीके दास,डीपीएम रेहान असरफ, एएनएम नीलम कुमारी,नूतन कुमारी,अनिता कुमारी,बबिता कुमारी,रेणु कुमारी समेत सैकड़ो ग्रामीण मौजूद थे।

चार अलग अलग गाड़ियो से रेलयात्री की सामग्री की हुई चोरी

प्रात : किरण संवाददाता

झाझा -चार अलग अलग रेलगाड़ियों मे चार रेलयात्री का सफर के दौरान सामान की चोरी हो गई जिसका मामला झाझा रेलथाना में चारो रेलयात्रियो के द्वारा दर्ज कराई गई है।दर्ज आवेदन मे देवघर के रहने वाले सौरभ सुमन ने बताया कि सियालदह बलिया एक्सप्रेस में सफर करने के दौरान अज्ञात चोर ने उसका पर्स निकाल लिया जिसमें पहचान पत्र से संबंधित कागजात क्रेडिट कार्ड,3900 नगद था।वही बाघ एक्स्प्रेस के कोच संख्या एस 4 के सीट संख्या 15 पर यात्रा करने वाली रेलयात्री मेहरून निशा ने बताया कि मेरे सीट से ट्रॉली बैग चोरी हो गया जिसमें कई कीमती जेवर,छह हजार रुपए नगद सहित अन्य कई कागजात था।कोलकाता के रहने वाले बेबी चैधरी ने बताया कि गंगासागर एक्सप्रेस में यात्रा के दौरान हैंड बैग की चोरी हुई जिसमें जेवर,मोबाइल,नगद 5500 रुपए था।इसके अलावे दुगार्पुर की रहने वाली मुस्कान सिंह ने दर्ज आवेदन में बताया कि सीतामढ़ी कोलकाता एक्सप्रेस कोच संख्या एस 7 मे सफर के दौरान बंशीपुर के पास पर्स चोरी हो गया जिसमें कीमती जेवर और 500 रुपए नगद था।

अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन रक्सौल ने लगाया निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। रविवार को शहर के बैंक रोड स्थित श्रीसत्यनारायण मारवाड़ी पंचायती मंदिर में अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन के तत्वावधान में आयुष जाँच घर रक्सौल के सहयोग से एक दिवसीय निःशुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर लगाया गया।शिविर का शुभारम्भ वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच सम्मेलन की अध्यक्षा श्रीमती वीणा गोयल, सचिव सोनू काबरा , शिखा रंजन, सीमा जागरण मंच के स्टेट कॉर्डिनेटर महेश अग्रवाल, भाविप अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह के द्वारा वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। आयुष जाँच घर के सहयोग से सुबह 7 बजे से 10 बजे तक आयोजित इस शिविर में 125 लोगों ने अपना ब्लड प्रेशर, ब्लड सुगर एवं थॉयराइड प्रोफाइल टेस्ट कराया तथा उन्हें चिकित्सकीय परामर्श दी गयी। इस मौके पर सम्मेलन की अध्यक्षा वीणा गोयल एवं सचिव सोनू काबरा ने संयुक्त रूप से बताया कि आज की तनाव भरी जिंदगी, गलत खान-पान, अनियमित मौसम एवं जागरूकता का अभाव के कारण हर दसवां व्यक्ति उपरोक्त तीनों बीमारियों में से कोई एक या फिर तीनों ही बीमारियों से ग्रसित है। फलस्वरूप समुचित जानकारी एवं समय पर चिकित्सा नहीं होने पर व्यक्ति असमय काल के गाल में समा जाता है। इसी निमित्त सभी व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहने की आवश्यकताझै है तथा समय -समय पर चिकित्सीय परामर्श लेते रहें, जिससे किसी भी प्रकार की लाइलाज बीमारियों से बचा जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि भविष्य में भी हैं समय-समय ऐसे स्वास्थ्य शिविर लगाने के लिए महिला सम्मेलन कृतसंकल्पित है। शिविर को सफलीभूत करने में सुमन अग्रवाल, संगीता धनोठिया, सुशीला अग्रवाल, अनुराधा शर्मा, शिखा रंजन, केशव गोयल, सुमित धानोठिया, रामकिशन शर्मा, रेणु रूंगटा, सुनीता शाह एवं विनोद रौनियार का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

सघन मिशन इन्द्रधनुष अभियान में बीडीओ और आंगनबाड़ी की सेविकाओं को मिली जिम्मेदारी

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। शनिवार को समाहरणालय स्थित कारगिल विजय सभा भवन में जिला पदाधिकारी रोशन कुशवाहा की अध्यक्षता में सघन मिशन इन्द्रधनुष 50 अभियान 2023 की बैठक की हुई। इस बैठक में जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं अन्य पदाधिकारी उपस्थितथे।बैठक में जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि सघन मिशन इन्द्रधनुष 50 अभियान 2023 के लिए 0 से 2 वर्ष आयुवर्ग के सभी बच्चे होंगे। 0 से 2 वर्ष आयुवर्ग के वैसे सभी बच्चे जो टीका लेने से किसी कारण छुट गये हो अथवा एक भी टीका नहीं लिये हों का टीकाकरण होना है। 02 वर्ष से 05 वर्ष के वैसे बच्चे जो खसरा- रूबैला के प्रथम खुराक एवं द्वितीय खुराक से वंचित हो को प्राथमिकता के तौर पर टीकाकरण कराया जाना है। वैसे गर्भवती महिलायें जिन्होंने टीडी का एक भी टीका नहीं लिया हो या जिनका टीका अधूरा रह गया हो। जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी द्वारा प्रखंड, पंचायत, आगंनबाड़ी सेविकाओं से इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग करने की अपेक्षा की है। जिला प्रतिरक्षण पदाधिकारी ने बताया कि सघन मिशन इन्द्रधनुष 5.0 अभियान 2023 तीन चक्रों में होना है। प्रथम चक्र 07 से 12 अगस्त तक, दूसरा चक्र 11 से 16 सितम्बर तक, तीसरा चक्र 09 से 14 अक्टूबर तक चलेगा।पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास विभाग से कार्यक्रम के सफल संचालन में सभी पंचायती राज के सदस्यों के द्वारा जन-मानस में सघन मिशन इन्द्रधनुष 5.0 के संबंध में जागरूकता एवं उत्प्रेरण करते हुए टीकाकरण के दौरान दल के सदस्यों को आवश्यक सहयोग प्रदान करना है। वैसे सभी लाभार्थियों को टीकाकरण स्थल पर लाया जाना है जो किसी कारण टीका लेने से इन्कार करता हो। दुर्गम क्षेत्रों में अभियान के दौरान कार्यक्रम का उद्घाटन एवं प्रचार प्रसार में आवश्यक सहयोग प्रदान करना। प्रखंड विकास पदाधिकारी के द्वारा दुर्गम क्षेत्रों में कार्यक्रम का उद्घाटन एवं कार्यक्रम के दौरान प्रत्येक दिन संध्याकालीन समीक्षात्मक बैठक का आयोजन जिसमें कार्यक्रम से संबंधित सभी पदधारकों की उपस्थिति सुनिश्चित करना है। अपने क्षेत्रों में सभी स्वंयसेवी समूह के द्वारा कार्यक्रम में अवश्यक सहयोग हेतु अपने स्तर से अनुरोध किया जाना है।अल्पसंख्यक कल्याण विभाग से कार्यक्रम के सफल संचालन में समुदायों के बीच मस्दिर, गुरुद्वारा, चर्च, मंदिर आदि के द्वारा जन-मानस में कार्यक्रम से संबंधित प्रसार-प्रसार किया जाना है। अल्पसंख्यकों के बीच टीकाकरण से होने वाले फायदे के बारे में जागरूकता फैलाना है।धर्मिक संस्थानों में कार्यक्रम से संबंधित बैनर, पोस्टर को प्रदर्शित करवाना है। अल्पसंख्यक बाहुल क्षेत्रों में आयोजित सत्रों का उद्घाटन संबंधित धर्म गुरू द्वारा किया जाना है।

बीआरसी में शिक्षकों को दी गई चहक प्रशिक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

रक्सौल। निदेशक प्राथमिक शिक्षा के पत्रांक 4453 दिनांक5/7/23 के आलोक मे 15/07/2023 को प्रखण्ड संसाधन केंद्र रक्सौल के परिसर स्थित सदन कक्ष चंद्रयान-3 में प्रारंभिक विद्यालयों के प्रथम वर्ग के वर्ग शिक्षकों का एक दिवसीय चहक प्रशिक्षण मास्टर प्रशिक्षक मदन प्रसाद यादव, संतोष कुशवाहा, नीरज कुमार, रमाशंकर प्रसाद के सहयोग से संपन्न हुआ। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षकों ने चहक मॉडुल्स के विभिन्न आयामों को विस्तार से गतिविधि के माध्यम से बताया, जिसको 17 जुलाई से विद्यालयों मे उपलब्ध चहक के सिखाने के विभिन्न समाग्रीयों का उपयोग करने की बात बताई गयी। प्रशिक्षणचर्या के दौरान बीईओ रंजना कुमारी ने शिक्षकों को जानकारी दी की चहक मॉडुल्स को अपने अपने विद्यालयों मे अवश्य संचालित करें, जिससे विद्यालयों में बच्चों का जुड़ाव हो, चहक प्रशिक्षण का मुख्य उदेश्य विद्यालयों से बच्चों का जुड़ाव होना है। प्रशिक्षण के तीनों बैच में सभी प्रशिक्षु शिक्षक उपस्थित रहे तथा प्रशिक्षण के दौरान विभिन्न गतिविधियों को सीखे जिसको अपने अपने विद्यालयों मे बच्चों के बीच निश्चित रूप से करने की बात दोहराई।

पर्यावरण को हरियाली बनाए रखने के लिए पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। रविवार को बागवन पंचायत भवन बखरी के प्रांगण में पीएलवी एवं चिकित्सकों के सामूहिक प्रयास से स्वच्छता और पर्यावरण को हरियाली बनाए रखने के लिए पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पीएलवी शैलेश कुमार ने कहा कि आज बड़े ही हर्ष का दिन है कि मैं जिला विधिक सेवा प्राधिकार के पीएलवी के रूप में आज यहां उपस्थित हुआ हूं। उससे भी बड़े हर्ष की बात है कि सामाजिक व्यक्तित्व चिकित्सक डीएम इन कार्डियोलॉजी डॉक्टर सुमित कुमार वर्मा अपने व्यस्त समय में से कुछ समय निकालकर वृक्षारोपण कार्यक्रम में उपस्थित हुए हैं। आज मेरे अनुरोध पर यहां अपने ग्राम में वृक्षारोपण करने के लिए आए हैं। उन्होंने जामुन, आम, नीम, बरगद आदि फलदार एवं छायादार वृक्ष को लगाया है। मौके पर डीएम इन कार्डियोलॉजी डॉक्टर वर्मा ने कहा कि मैं लगभग दस लाख वृक्ष लगाने का संकल्प ले चुका हूं और प्रत्येक रविवार को अलग-अलग क्षेत्रों में जाकर वृक्षारोपण करता हूं। मेरा तो यही मानना है बिना वृक्ष के जीवन संभव नहीं है। मौके पर सुबोध कुमार वर्मा, पंकज कुमार आदि उपस्थित थे।

भटके बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की है जरुरत

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। रविवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकार के बैनर तले सदर प्रखंड क्षेत्र के सूजा पंचायत मिल्की के पंचायत भवन में विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस विधिक जागरूकता शिविर की अध्यक्षता ग्राम कचहरी के सचिव शशि कला कुमारी ने की। अध्यक्षता करते हुए शशि कला कुमारी ने कहा कि आज बड़े ही हर्ष का दिन है कि जिला विधिक सेवा प्राधिकार की टीम विधिक जागरूकता करने के लिए आई है। मैं उन सभी का स्वागत करती हूं। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए पैनल अधिवक्ता पंकज कुमार ने बाल संरक्षण अधिनियम 2015 के अधिनियम अनुच्छेद, योजना के बारे में विस्तृत रूप से बताया। साथ ही साथ उन्होंने बताया कि बच्चे नाजुक, कोमल और देश के भविष्य होते हैं। जिनके बारे में हमें सोचने की जरूरत है। उनके लिए बनाए गए कानून को भी जानना है। समाज की मुख्यधारा से भटक चुके बच्चों को किस तरह समझा-बुझाकर उन्हें फिर से समाज की मुख्यधारा में लाया जाए, इसी पर आज हम यहां जागरूकता शिविर करने आए हैं। साथ ही साथ पैनल अधिवक्ता पंकज कुमार ने बाल संरक्षण के अंतर्गत मिलने वाली कर्तव्य एवं बच्चों के संरक्षण अधिनियम 1990 में बाल श्रम अधिनियम 1994 पीसी एंड पीएनडीटी एक्ट के बारे में विस्तृत रूप से चर्चा की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता राम शरण कुमार ने भी उपस्थित लोगों को बालसा एवं नालसा की जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताया। मौके पर पीएलवी शैलेश कुमार ने कहा कि हमारे यहां बालकों की सुधार के लिए सुधार गृह भी हैं। जिसमें समाज की मुख्यधारा से भटक चुके या भूले भटके बच्चों को रखा जाता है। जहां हॉस्टल जैसी व्यवस्था है। उनके पढ़ने का, उनके स्वास्थ्य का उनके खाने-पीने का सभी चीजों का वहां व्यवस्था रहता है। जहां उन्हें फिर से समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया जाता है। हमारे यहां बच्चों को विशेष रुप से ध्यान रखने के लिए सीडब्ल्यूसी की व्यवस्था है। वहीं न्यायालय में किशोर न्याय परिषद की व्यवस्था है। जहां बच्चों के लिए विशेष न्यायाधीश हैं। जो समाज की मुख्यधारा में भटके हुए बच्चों को फिर से समाज की मुख्यधारा में लाने का प्रयास करते हैं। मौके पर पीएलवी चंद्र वर्मा एवं पीएलवी किरण सहाय ने भी उपस्थित लोगों को जागरूक किया। मौके पर स्थानीय मुखिया किरण कुमारी भी उपस्थित थे।

जीविका द्वारा आयोजित जॉब कैंप में 48 अभ्यर्थियों का हुआ चयन

प्रात : किरण संवाददाता

बेगूसराय। भगवानपुर प्रखंड क्षेत्र के रसलपुर पंचायत स्थित भगवानपुर दुग्ध उत्पादक समिति के प्रांगण में तिलक जीविका महिला स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड द्वारा जॉब कैंप का आयोजन किया गया। इस कैंप के माध्यम से 18 से 30 वर्ष की आयु के 48 अभ्यर्थियों को चयन किया गया। इस संबंध में जानकारी देते हुए रवि कुमार ने बताया कि इस कैंप में चयनित युवतियों को 2 माह की ट्रेनिंग देकर उन्हें रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा। राज्य सरकार का मुख्य उद्देश है कि बेरोजगारी दूर हो, इसके लिए कैंप लगाकर चयनित युवा व युवतियों को ट्रेनिंग संस्था द्वारा दिलवाकर रोजगार उपलब्ध कराना है। मौके पर जीएस अरविंद मिल्स के प्रतिनिधि जीविका के बीपीएम रवि प्रकाश, क्षेत्र समन्वयक प्रशांत कुमार, सामुदायिक समन्वयक नवीन कुमार एवं अन्य कर्मी उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

भाजपा कार्यकताओं ने प्रखंड मुख्यालय में किया धरना प्रदर्शन

शाहकुंड (भागलपुर)। विगत दिनों पुलिस द्वारा बर्बरतापूर्ण तरीके से भाजपा नेताओं और कार्यकत्ताओं पर पटना में हुई लाठीचार्ज की घटना से जहानाबाद के जिला महामंत्री विजय सिंह के निधन पर स्थानीय भाजपा कार्यकताओं ने शाहकुंड मंडल अध्यक्ष के नेतृत्व में प्रखंड मुख्यालय शाहकुंड परिसर में विरोध प्रदर्शन किया। इसके पूर्व कार्यक्रम की शुरूआत स्वर्गीय विजय सिंह के तैलचित्र पर उपस्थित कार्यकताओं ने बारी-बारी से श्रद्धांजलि अर्पित कर स्वर्गीय विजय सिंह अमर रहें के नारे लगा कर शुरूआत की। वहीं धरनार्थियों के समर्थन में अपने संबोधन में प्रखंड के पुर्व अध्यक्ष प्रफुल्ल कुमार सिंह ने कहा कि जिस भाजपा के बलबूते नीतीश कुमार सत्रह वर्षो तक बिहार में शासन किए वही भाजपा का साथ छूटते ही उन्होने भाजपा द्वारा निकाली गई शांति मार्च में भाजपा कार्यकत्ताओं और नेताओं के ऊपर लाठी चार्ज करवाकर अपनी तुक्ष मानसिकता का परिचय देने का कार्य किया है। उनकी पुलिस भाजपा कार्यकत्ताओं पर मिर्च पाउडर छिटने का झूठा आरोप लगा रही है।

अंगिका भक्ति गीत की शूटिंग टीम के साथ अजगैविनाथ धाम पहुंचे, गायक छैला बिहारी

शाहकुंड (भागलपुर)।श्रावणी मेला में बाबा भोलेनाथ को जलाभिषेक करने के लिए देश के विभिन्न प्रांतों सहित कई जगहों के कांवरियों के जत्था पहुंचने का सिलसिला लगातार जारी है। वहीं दूसरी ओर बिहार के मशहूर अंगिका लोक गायक कलाकार सुनील छैला बिहारी ने बोल बम पर आधारित अपने अंगिका भक्ति एलबम की शूटिंग की। इस दौरान शूटिंग देखने वालों की होड़ लग गई, वही गायक सुनील छैला बिहारी ने बताया कि भोजपुरी से ज्यादा अंगिका को लोग पसंद कर रहे हैं, और मैं अंगिका लोक गायक हूं और मेरी यह भोलेनाथ बाबा पर आधारित एल्बम तैयार हो रही है, उक्त एलबम के गाना लोगों को जरूर पसंद आएगा। वही उन्होंने राजनीति में आने की मनसा को लेकर कुछ भी बताने से इंकार किया है।

पशु चरवाहा के साथ मारपीट कर 25 हजार नगद लुटे आपराधी

संग्रामपुर(मुंगेर)।थाना क्षेत्र के मौजमा बहियार में पशु चरवाहा के साथ मारपीट कर 25 हजार नकद लूटने का मामला सामने आया है। इस संदर्भ में जमुई जिला के लक्ष्मीपुर थाना क्षेत्र के मगही गांव के निरपथ यादव पिता स्व. चेतन यादव ने संग्रामपुर थाना में संग्रामपुर थाना क्षेत्र के जनकपुर गांव के मुरारी यादव व सालो यादव को मारकर घायल करने व 25 हजार रुपए लूटने का आरोपी बनाया है। थाना में दिए आवेदन में निरपथ ने कहा है कि शुक्रवार की संध्या लगभग 6.30 बजे मौजमा बहियार स्थित दिया पोखर के समीप अपने भैंस को चरा रहे थे। इसी दौरान मुरारी यादव व सालो यादव एकाएक मारपीट कर मुझे घायल कर दिया व बटन में रखा 25 हजार रुपए, जो आज ही दो बैल बिक्री किया था, लूट कर फरार हो गया। निरपथ ने थानाध्यक्ष नामजद आरोपी पर सख्त कानूनी कार्रवाई करने की गुहार लगाई है।

सीडीपीओ का स्थानअंतरण के उपरांत विदाई समारोह का आयोजन

मुंगेर सदर। शनिवार को सदर प्रखंड के शहरी बाल विकास परियोजना पदाधिकारी पूनम का स्थान अंतरण के बाद विदाई सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया वही नव पदस्थापित बाल विकास परियोजना पदाधिकारी रंजना सिंह का स्वागत किया गया ।कार्यक्रम में सर्वप्रथम सेविका द्वारा विदाई गीत गाकर उनकी विदाई की जा रही थी। तथा स्वागत गीत गाकर नव पदस्थापित सीडीपीओ रंजना सिंन्हा स्वागत किया गया वही स्वागत समारोह में उपस्थित जमालपुर सीडीपीओ विनीता कुमारी, मुंगेर ग्रामीण की नव स्थापित सीडीपीओ प्रियदर्शी जिला समन्वयक मुक्त महिला पर्यवेक्षिका रजनी कुमारी, गौरी रानी, रीता कुमारी, रजनी कुमारी, ममता कुमारी मुख्य रूप से उपस्थित रहे तथा आंखें सभी की बरसती रही।

उल्टानाथ महादेव मंदिर में अनुपम श्रृंगार पूजा से माहौल हुआ भक्तिमय

तारापुर। श्री श्री 108 तारकेश्वर नाथ सह उल्टा नाथ महादेव मंदिर में शनिवार की रात सावन के मौके पर शाम ढ़लते भोलेनाथ का अनुपम श्रृंगार पूजा का भव्य आयोजन बड़े ही हर्षोउल्लास एवं धूमधाम से किया गया। इस दौरान मंदिर प्रांगण और गर्भगृह को आकर्षक तरीके से सजाया गया था। पूरे सादगी एवं हर्षोल्लास के साथ महिला एवं पुरुष शिवभक्तों सहित अन्य धमार्नुरागियों ने श्रृंगार पूजा में हिस्सा लिया। गौरतलब है कि धीरे-धीरे आस पड़ोस के श्रद्धालुओं की भारी भीड़ को लेकर श्रृंगार पूजा के समय मंदिर परिसर का चप्पा चप्पा लोगों की भीड़ से पट गई। बताया गया कि श्रृंगार पूजा का आयोजन मंदिर कमेटी के लोगों द्वारा पूरी तैयारी एवं विधि विधान के साथ प्रत्येक वर्ष सावन महीने में किया जाता है। श्रृंगार पूजा के बाद भारी संख्या में लोगों ने भोलेनाथ की भव्य महाआरती में भाग लेकर भोलेनाथ का महाप्रसाद ग्रहण किया।

शरीर में 751 सूईयां चुभोकर एक हट्टी कांवरिया निकल पड़े हैं बाबाधाम

प्रात : किरण संवाददाता

शाहकुंड (भागलपुर)। अजगैबीनाथ धाम गंगा तट पर एक से बढ़कर एक अजब अनोखे कावड़ियों का जत्था आने का शिलशिला जारी है, इसी तरह के भक्ति के अनूठे जज्बा के साथ कावड़िया अपने मन्नत पूरी होने के साथ हर साल सुल्तानगंज के गंगा तट पर नजर आते हैं। भक्ति भाव की पराकाष्ठा के अद्भुत दृश्य में कुछ अलग कर दिखाने की प्रबल आकांक्षा को लेकर ऐसे भक्तों को पूरे मेला मार्ग में आकर्षण का केंद्र बना रहता हैं। विगत चार जुलाई के पूर्व से श्रावणी मेला में अभी तक कई कांवड़िया अपने अनूठे भक्ति के रंग में डूबकर अजब-गजब रूप, रंग, आकार को धारण करने के साथ कांवड़िया अपनी मन्नत मांग को लेकर कांवर लेकर बाबा धाम यात्रा पर रवाना हो रहे हैं। मेला में एकता अखंडता के प्रतीक के रूप में माना जाने वाला मेला में देश विदेश ही नही राज्य भर के कावड़ियों का जत्था अलग अलग रंगों के गेरुआ वस्त्र धारण कर सुल्तानगंज के अजगैबीनाथ धाम स्थित गंगा के तट पर आस्था की डुबकी लगाने पहुंच रहे हैं। वही इन सबसे अलग एक कांवरिया ऐसा भी दिख रहा है जिसके शरीर के ऊपरी हिस्से में वस्त्र की कोई जरूरत ही नहीं है। श्रावण के कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को लेकर एक ऐसा अनोखा भक्त जल भरने कैमूर जिला के कुदरा गांव से पहुंचे है, जिसके गंगा तट पर आगम होते ही उसकी भक्ति के अनूठे स्वरूप को देखने के लिए पूरी कांवड़िया की भीड़ का ध्यान अपनी ओर खींच लिया है। यह हठी कांवड़िया कैमूर के कुदरा गांव के संटू शर्मा उर्फ केसरिया लोहार है, जिन्होंने अपने शरीर में हजारों सुई पिरोकर गंगाजल भरने के लिए सुल्तानगंज गंगा तट पर पहुंचा है। जिसे देखने के लिए लोगों की भीड़ जुट गई। कावड़िया संटू शर्मा ने बताया कि भगवान भोले को कोई औघड़नाथ तो कोई औघड़दानी तो कोई पगला बाबा कहता है। मैं उसी पगला बाबा का भक्त एक पागल हूं जो बाबा का दर्शन करने देवघर जा रहा हूं। साथ ही उन्होंने कहा कि बचपन से सुनता आ रहा हूं कि जो भी सच्चे मन से अपनी मुरादें ले बाबा बैद्यनाथ के दरबार में जाता है उसकी मुरादें पूरी होती हैं। इसी उम्मीद व विश्वास के साथ मैं अपनी एक मन्नत लेकर बाबा भोले के दरबार में हाजिरी लगाने जा रहा हूं। शायद मेरी भी पुकार भगवान भोलेनाथ सुन लें। उन्होंने कहा कि हजारों सुई की चुभन से शरीर में दर्द तो हो रहा है, लेकिन भगवान भोलेनाथ की भक्ति के आगे यह दर्द कुछ भी नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं अच्छा खासा अपना रोजगार कर रहा था, लेकिन दो वर्षो के लॉकडाउन ने मेरा सब कुछ छीन लिया और मैं सड़क पर आ गया। लॉकडाउन की वजह से हुए कर्ज ने मेरी कमर तोड़ कर रख दी है। मैं जिंदगी से तंग आकर कुछ दूसरा रास्ता अपनाना चाहता था, लेकिन परिजनों के समझाने के बाद अब अपनी अर्जी लेकर भगवान भोले के दरबार में जा रहा हूं। अब बाबा बैद्यनाथ ही मेरा सच्चा मार्गदर्शन करेंगे, जय भोले नाथ, बोलबम, बोले मन यही कामना आस्था के साथ बाबा के दर्शन की आकांक्षा है।

जल जीवन हरियाली योजना के तहत जिलाधिकारी ने चलाया वृक्षारोपण अभियान

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जिले भर में जल जीवन हरियाली के तहत जगदीशपुर प्रखंड स्थित गोनू बाबा धाम इलाके में जिलाधिकारी व उनकी समुचित टीम पहुंची। जहां जिलाधिकारी ने जल जीवन हरियाली योजना के तहत वृक्षारोपण किया गया। इस दौरान डीडीसी सहित संबंधित विभाग के कई पदाधिकारी मौजूद थे। वही सभी पदाधिकारियों के द्वारा अलग अलग प्रकार के दर्जनों पेड़ को लेकर पहुंचे जहां सभी पदाधिकारियों ने वृक्षारोपण कर कार्यक्रम की सुरुआत की। इस दौरान ग्रामीण लोगों को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी ने बताया कि देर शाम तक जिले भर में कुल एक लाख पौधे लगाए जाने का लक्ष्य निर्धारित है, जो शाम तक पूरा कर लिया जाएगा। वहीं उन्होंने बताया कि जिले में मनरेगा योजना के तहत चार लाख के लागत राशियों से उक्त पेड़ लगाए जाने की योजना सरकार द्वारा निर्धारित किया गया है। वही वन विभाग के द्वारा भी दो लाख पौधे लगाए जाने का लक्ष्य हैं, जिसे जल्द ही पूरा किया जाएगा। वही जिलाधिकारी ने बताया कि गांव में अन्य समस्याओं को लेकर भी ग्रामीणों के द्वारा बताये गये तत्थयो पर ध्यान केंद्रित कर सुना गया है। जिसे जल्द दूर करने का संबंधित विभाग के पदाधिकारियों को निर्देश दिया गया है।

आगामी 2024-25 के चुनाव में भाजपा का खाता भी नहीं खुलने दूंगा : प्रवक्ता

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। बिहार प्रदेश जनता दल यूनाइटेड भागलपुर शाखा द्वारा भागलपुर के स्थानीय होटल के सभागार में जदयू व्यवसायिक एवं उद्योग प्रकोष्ठ तथा जदयू शिक्षा प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में दल के सभी पदाधिकारियों का प्रशिक्षण सह कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दौरान प्रदेश प्रवक्ता नीरज कुमार बबलू, सांसद अजय मंडल, ललन सर्राफ, कहकशां परवीन, बिपिन बिहारी सिंह, लक्ष्मीकांत मंडल व शुभानंद मुकेश के अलावे दर्जनों जदयू के पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद थे। वही आगामी 2024 और 2025 के लोकसभा चुनाव मामले को लेकर सभी कार्यकताओं ने अभी से रणनीतियां बनाना शुरू कर दिया है। अपने राजनीतिक ताने-बाने में पार्टी को मजबूत करने के लिए कार्यकर्ता सम्मेलन करते डटे हुए हैं। वही कार्यक्रम के दौरान चुनाव किस तरह मजबूती से कराया जाय उसके लिए पार्टी के गठित पदाधिकारियों को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। कार्यक्रम के क्रम में जदयू के प्रदेश प्रवक्ता नीरज कुमार बबलू भागलपुर पहुंचे, जहां उन्होंने नरेंद्र मोदी पर निशाना साधते हुए कहा कि देश की हालात प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चलते पूर्णरूपेण चरमरा गई है। जब से नरेंद्र मोदी शासन को लेकर सत्ता में आई हैं, तभी से महंगाई और बेरोजगार वृहद पैमाने पर बढ़ गई है, आगामी 2024 और 2025 के लोकसभा चुनाव में जदयू भारी बहुमत से जीते और बीजेपी का खाता भी नहीं खुलने देंने की रणनीति पर सभी कार्यकताओं को तैयारी में जुटने का आवाहन किया है। वहीं उन्होंने कहा कि बीते दिनों पटना में बीजेपी के कार्यकताओं पर हुई लाठीचार्ज मामले को लेकर कहा कि लखीसराय के महामंत्री विजय जी का देहांत पुलिस की पिटाई करने से नहीं हुई है, वह अचेत मुद्रा में कहीं और गिरे मिले थे, लेकिन भारतीय जनता पार्टी उसको इस पुलिसिया कार्रवाई मामले से जोड़ने का काम कर रही हैं यह कहीं से सही नहीं है, साथ ही उन्होंने कहा कि गलत का अंजाम गलत ही होता है, इसलिए भारतीय जनता पार्टी को पुलिसिया दमन का सामना करना पड़ा है, वहीं उन्होंने अपने जनता दल यूनाइटेड को लेकर कहा हम लोग पूर्णरूपेण तैयार हैं और आगामी 2024 और 25 के लोकसभा चुनाव पूर्ण बहुमत से जनता दल यूनाइटेड जीतेगी और फिर से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार होंगे। जिसका जबाब जनता अपने भारी मतों के साथ विजयी का आशीर्वाद देंगी।

एक दिवसीय धरना सह श्रद्धांजलि सभा का किया आयोजन

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। भाजपा कार्यकर्ता पर हुई बर्बरता पूर्ण हमला और भाजपा के कार्यकर्ता सह जहानाबाद के महामंत्री विजय सिंह की निर्मम हत्या के विरोध में भारतीय जनता पार्टी भागलपुर इकाई के द्वारा काला दिन के अवसर पर समाहरणालय स्थित कचहरी चौक के समक्ष शांतिपूर्ण धरना प्रदर्शन का आयोजन किया, साथ ही भाजपा के जहानाबाद के जिला महामंत्री विजय सिंह को श्रद्धांजलि भी दी गई। इस एक दिवसीय धरना सह श्रद्धांजलि कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के सभी प्रकोष्ठ के नेताओं द्वारा नीतीश सरकार के खिलाफ हल्ला बोल प्रदर्शन के साथ जमकर नारेबाजी की। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने कहा कि नीतीश कुमार की हत्यारी सरकार के द्वारा भाजपा के निर्दोष कार्यकताओं पर पुलिस के द्वारा लाठीचार्ज एवं बर्बरतापूर्ण हमले किये गये हैं उक्त मामले में भाजपा के जहानाबाद जिला महामंत्री विजय सिंह की मौत हो गई है, इसे बर्दाश्त नहीं करेगी, और इसका बदला अवश्य लेगी। आगामी 2024 - 25 के लोकसभा चुनाव में जनता खुद जवाब देगी। वहीं प्रदर्शनकारियों ने अपने अपने उद्गार में कहा कि यह तानाशाही अब नहीं चलने वाली है, यह जंगलराज पार्ट 3 हमलोग नहीं चलने देंगे। वहीं प्रदर्शनकारियों ने पुलिसिया रवैया को भी गलत ठहराते हुए जमकर प्रशासन के खिलाफ भी नारेबाजी करते दिखे। इस एक दिवसीय धरना सह श्रद्धांजलि कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी के भागलपुर इकाई के सभी पदाधिकारी व दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद थे, सभी नेताओं व कार्यकताओं ने जहानाबाद के जिला महामंत्री विजय सिंह के तैलचित्र पर श्रद्धा सुमन पुष्पांजलि अर्पित किए और बिहार में जल्द बदलाव का हुंकार भरी। इस काला दिवस सह श्रद्धांजलि सभा कार्यक्रम में भारतीय जनता पार्टी भागलपुर इकाई के जिलाध्यक्ष संतोष साह के अलावे सभी प्रकोष्ठ के पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद थे।

तीसरी सामान्य बोर्ड की बैठक हुई संपन्न

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। निगम परिसर में सामान्य बोर्ड की तीसरी बैठक मेयर डॉ. वसुंधरा लाल की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।वही बैठक में दौरान मेयर डॉ. वसुंधरा लाल के अलावे उप मेयर डॉ. सलाउद्दीन अहसन सभी वार्ड के पार्षद एवं सिटी मैनेजर विनय प्रसाद यादव शामिल थे। बैठक के दौरान निगम के तहत आने वाले सभी विभागों के कार्यो को लेकर समीक्षात्मक वार्ता की गई, जिन योजनाओं के तहत कार्य अभी भी अधूरा है, या फिर उसमें अनियमितता देखी जा रही है,उक्त बिंदु पर कड़ी प्रतिक्रिया देते हुए मेयर डॉ.वसुंधरा लाल ने कहा कि उसे जल्द सुधार किया जाय, वरना उच्च स्तरीय पदाधिकारियों को इसकी सूचना दी जाएगी। वही बैठक में स्मार्ट सिटी के तहत चल रहे, कार्यो में जो भी इंजीनियर प्रतिनियुक्ति की गई हैं उनसे भी कई बिंदुओं पर वार्ता की, साथ ही जहां भी लाइट या अन्य कार्य किए जा रहे हैं, उस संचालित कार्य योजना में अनियमितता देखी गई थी, उसे बदलने की बात कही गई है और इंजीनियर को यह भी हिदायत करते हुए निर्देशित किया गया है कि ऐसा कोई काम ना करें, जो कि आपको बार-बार उक्त कार्य योजना से अवगत कराते हुए गलती सुधारने में ही समय व्यतीत करना पड़े। वही विगत दिन पूर्व एक पार्षद ने नगर निगम की कार्यशैली पर नाराजगी व्यक्त करते हुए अपना इस्तीफा पत्र मेयर को सौंपा दिया था। इस पर मेयर डॉ. वसुंधरा लाल ने कहा कि जल्द नगर निगम की कार्यशैली को दुरुस्त किया जाएगा और वार्ड पार्षद को जनता से कहीं भी खरी-खोटी नहीं सुननी पड़ेगी। वही पार्षद को उसके मन मुताबिक अगर काम नहीं होगा।

दो पक्षों के बीच हुई मारपीट घटना में एक की हुई मौत

घटना को लेकर परिजनों ने कजरैली थाना पुलिस पर हत्या करवाने का लगाया आरोप

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। जमीन विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच हुई मारपीट की घटना में कजरैली थाना क्षेत्र गोड्डी गांव के अरविंद यादव गम्भीर रूप से घायल हो गया। घटना के बाद स्थानीय लोगों व परिजनों ने घायल व जख्मी अवस्था में बेहतर इलाज के लिए मायागंज अस्पताल ले जाया गया। जहां इलाजोंप्रांत चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

जिसकी सूचना मिलते ही परिजनों के बीच कोलाहल मच गई। वही घटना को लेकर मृतक की पत्नी ने दूसरे पक्ष के लोगों के साथ साथ कजरैली थाना पुलिस पर हत्या करवाने का आरोप लगाते हुए कहा कि विरोधियों के साथ मिलकर मेरे पति को मरवा दिया है। दरअसल तीन एकड़ की जमीन को लेकर दो पक्षों के बीच लम्बे समय से विवाद चला आ रहा था। उक्त जमीन को लेकर मृतक के भाई का कहना है कि वह लोग कोर्ट से टाइटल सूट चल रहा था जिसका फैसला हम लोगों के हक में आया था केसजीत चुके थे, जहां देर शाम जब मृतक अरविंद खेत पर गया हुआ था, तभी दूसरे पक्ष के बुधन यादव, पट्टू यादव, करकु यादव, राजू यादव, संजय यादव, बॉसकी यादव, धनिया यादव और मनोज यादव अचानक हमलावर हो गया,इस दौरान मृतक को जान से मारने की नियत से हथियार व पिस्तौल की बट से और लाठी-डंडे से पिटाई कर दी। वही उक्त लोगों के द्वारा मृतक के ऊपर गोली भी चलाई थी, लेकिन मृतक अरविंद को गोली से भी बच गया था, जिसके बाद परिजन जब खेत की तरफ दौड़े तो देखा कि अरविंद घायल अवस्था में उसे थाने ले जाया गया, लेकिन वही थाना पुलिस ने हॉस्पिटल ले जाने के लिए कह दिया। वही जब घटना के पूर्व मारपीट हो रही थी तो थाना के नंबर पर सम्पर्क किया गया तो थाना प्रभारी का मोबाइल फोन फोन बंद कर दिया। वहीं परिजनों का आरोप है कि थाना प्रभारी के द्वारा ही दूसरे पक्ष को जमीन पर भेजा गया था। वहीं परिजनों के द्वारा घायल को जवाहरलाल नेहरू चिकित्सा अस्पताल लाया गया। जहां इलाज के क्रम में जख्मी व घायल अरविंद यादव को चिकित्सक द्वारा मृत घोषित कर दिया गया। मौत के बाद परिजन का रो रो कर बुरा हाल है। वही अब देखने वाली बात है कि पुलिस के ऊपर लगाये गये आरोप की संबंधित वरीय अधिकारियों द्वारा जांच कर दोषियों के विरुद्ध पुलिसया कार्रवाई कब तक शुरू करती हैं और मृतक के परिवार को न्याय मिल पाती है या नहीं ये देखने वाली बात होगी है।

ट्रक चालक की ठोकर से साइकिल छात्र की मौके पर हुई मौत

प्रात : किरण ब्यूरो।

भागलपुर। नवगछिया पुलिस जिला परिक्षेत्र के इस्माइलपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत जाह्नी चौक स्थित रिंग बांध के समीप एक ट्रक बेलगाम चालक ने स्थानीय इलाके के एक साइकिल सवार बच्चे को रोंद कर मौत के घाट उतार दिया है। जिससे साइकिल सवार छात्र की मौके पर ही मौत हो गयी है। मृतक छात्र की पहचान इस्माइलपुर थाना के छोटी परबत्ता इलाके के चंद्रशेखर मंडल के पुत्र 12 वर्षीय पुत्र कृष्ण कुमार के रूप में की है। वही सूत्रों के तहत मिली जानकारी के7 अनुसार घटना को लेकर बताया जा रहा है कि मृतक छात्र के पिता सुल्तानगंज से गंगाजल लेकर देवघर गये हुए हैं। मृतक छात्र कृष्ण कुमार गांव के ही मध्य विद्यालय में वर्ग छह में पढ़ता है। वही घटना से आहत परिजनों ने बताया गया कि कृष्ण कुमार साइकिल से पशु चारा लाने के लिए रिंगबांध के पास खेत पर गया था, और वह खेत से पशुचारा लेकर साइकिल से पुनः घर लौट रहा था। इसी दौरान रिंग बांध के समीप तेजी व लापवाही से ट्रक चालक ने उसकी साइकिल को टक्कर मार दी। जिससे किशोर कृष्ण की मौके पर ही मौत हो गयी। मृतक छात्र कृष्ण अपने परिवार में सबसे बड़ा पुत्र था। वही घटना की सूचना पाकर सैकड़ों ग्रामीण घटनास्थल पर पहुंच गये और आक्रोशित हो मुख्य सड़क मार्ग को बाधित कर जाम कर दिया। वही मौके पर पहुंचे इस्माइलपुर थानाध्यक्ष एजाज रिजवी ने आक्रोशित ग्रामीणों व परिवार के लोगों को समझा-बुझाकर मामला शांत करने के साथ मृतक बच्चे के शव को पोस्टमार्टम के लिए नवगछिया अनुमंडल अस्पताल भेज दिया। वही ग्रामीणों ने बताया कि मृतक कृष्ण कुमार तीन बहन और तीन भाइयों में सबसे बड़ा था। घटना के बाद ग्रामीणों ने उक्त ट्रक चालक सहित ट्रक को खदेड़ कर पकड़ लिया और वही संबंधित थाना पुलिस के हवाले कर दिया। वही मामले को लेकर इस्माइलपुर थाना पुलिस ने ट्रक सहित चालक के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज की है।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने मनाया काला दिवस, निकाला विरोध मार्च

प्रात : किरण संवाददाता

शाहकुंड (भागलपुर)। विगत दिनों पटना में भाजपा नेताओं और कार्यकताओं पर हुई लाठीचार्ज के विरोध में भाजपा कार्यकताओं ने मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री का पुतला फूंका। इस दौरान कार्यकताओं ने बिहार के मुख्यमंत्री व उपमुख्यमंत्री के विरुद्ध जमकर नारेबाजी की। वही कार्यक्रम के क्रम में पटना में भाजपा नेताओं और कार्यकताओं पर हुए लाठीचार्ज के विरोध में भाजपा कार्यकर्ता अक्रोशित दिखे है। शाहकुंड बाजार के मंदिर चौक पर भाजपा कार्यकताओं ने बिहार सरकार के विरोध में हल्ला बोल प्रदर्शन कर सीएम नीतीश कुमार का पुतला दहन किया। इस दौरान भाजपा कार्यकताओं ने बिहार सरकार पर जमकर हमला बोला और कहा कि जिस तरह शांतिपूर्ण और संवैधानिक तरीके से भाजपा कार्यकर्ता पटना में विधान सभा का घेराव करने जा रही थी, लेकिन सरकार के इशारे पर उनकी पुलिस ने भाजपा कार्यकताओं और नेताओं पर बर्बरतापूर्ण लाठियां बरसाई गई है। जिसमे एक कार्यकर्ता की मौत भी हो गई है और कई कार्यकर्ता घायल हो अस्पताल में भर्ती है। वही शाहकुंड जिला परिषद सह भागलपुर जिला परिषद अध्यक्ष अनंत कुमार उर्फ टून टून साह गंभीर रूप से धायल हो अस्पताल में भर्ती हैं। वही भाजपा कार्यकर्ता सरकार के इस बर्बरतापूर्ण कार्रवाई की घोर निन्दा कर रही है। वही उन्होंने कहा कि आज का दिन इतिहास में कलंक का दिन माना जाएगा। उक्त घटना में भाजपा के एक कार्यकर्ता शहिद हुए हैं। इस घटना में सरकार के विरुद्ध हत्या का मुकदमा चलना चाहिए। इस दौरान भाजपा दल के दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद थे।

देर रात पुलिस ने दबिश देकर कुख्यात अपराधी मो. आदिल को किया गिरफ्तार

भागलपुर। बबरगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत हुसैनाबाद इलाके में देर रात पुलिस की टीम ने दबिश देकर कुख्यात अपराधी मो. आदिल को उसके घर से गिरफ्तार किया है। वहीं पुलिस ने गिरफ्तार अपराधी के पास से एक पिस्टल और कई गोली भी बरामदगी की है। वही मामले को लेकर बताया जा रहा है कि वरीय पुलिस अधीक्षक आनंद कुमार को गुप्त सूचना मिली थी कि कुख्यात अपराधी मो. आदिल किसी अपराध की घटना को अंजाम देने के लिए इलाके में पहुंचा हुआ है, और किसी बड़ी वारदात को अंजाम देने वाला है। उक्त सूचना के आलोक में वरीय पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर सीआईटी का गठन किया गया। टीम का नेतृत्व सिटी डीएसपी के द्वारा किया गया। वही छापेमारी टीम में सीआईटी के जवानों के साथ-साथ कई थानों की पुलिस को शामिल किया गया था। उक्त गठित टीम द्वारा योजनाबद्ध तरीके से रणनीति तैयार कर इलाके की घेराबंदी कर हुसैनाबाद स्थित उसके घर से उसे हथियार व कई राउंड गोली के साथ धरदबोचा है। वही गिरफ्तार अपराधी मो. आदिल का पूर्व से दर्जनों मामले में वांछित है जो काफी समय से आपराधिक मामलों को अंजाम दे पुलिस के गिरफ्तार से फरार चल रहा था।

गंगा स्वच्छता को लेकर डीएम ने की बैठक

प्रात : किरण ब्यूरो

भागलपुर। गंगा स्वच्छता को लेकर गंगा संरक्षण समिति के तहत समाहरणालय स्थित समीक्षा भवन में जिलाअधिकारी सुब्रत कुमार सेन की अध्यक्षता में एक विशेष बैठक आहूत की। बैठक में गंगा स्वच्छता को लेकर गंगा संरक्षण परियोजना से जुड़े संबंधित सभी विभागीय अधिकारियों के साथ वार्ता की। बैठक में जिलाधिकारी सुब्रत कुमार सेन ने अधिकारियों को गंगा को स्वच्छ,पवित्र बनाने व पर्यावरण को स्वच्छ बनाने को लेकर रोजमर्रा के दौर में एक बार प्रयोग होने वाले प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाने की बात कही। साथ ही उन्होंने कहा कि एक बार प्लास्टिक यूज करने वाले को चिन्हित कर उन्हें चेतावनी दे दी गई है, अगर दोबारा कृपया गलती करते हैं तो वैसे लोगों पर कानूनी रूप से प्राथिमिकी दर्ज कर विधि सम्मत कार्रवाई की जाएगी। वही गंगा को स्वच्छ रखने के लिए सरकार की ओर से कई योजना चल रही है, जिसमें उक्त योजनाओं को लेकर कई जगहों पर तेजी के साथ कार्य पूरे कर लिये गये हैं। वही भागलपुर में 40 प्रतिशत कार्य पूरे हो चुके हैं साथ ही उन्होंने कहा कि जल्द ही गंगा स्वच्छता अभियान को लेकर प्लास्टिक प्रतिबंधित कार्य किये गये थे। वही गंगा स्वच्छता की कड़ी में भागलपुर निर्मल गंगा बनाने की मुहिम कारगर सिद्ध साबित होगी।

बोलबम के गीत पर खुब झुमें शिव भक्त

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर) ।श्रावणी मेले में शनिवार की रात्रि मध्य विद्यालय कुमारसार के प्रांगण में पर्यटन विभाग बिहार सरकार एवं जिला प्रशासन मुंगेर के सौजन्य से कांवरियों के मनोरंजन के लिए आयोजित किये जा रहे सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान खुब झुमें कावंरिया ।अधिकारियों की उपस्थिति में अमित मिश्रा म्युजिकल ग्रुप तारापुर की प्रस्तुत गायक अमित मिश्रा ने गणेश बंदना जय गणेश देवा जय गणेश देवा से की इसके बाद एक से बढ़कर एक भजन की प्रस्तुति को कावंरिया बोलबम ने सराहा। भजन गायिका हेमा गुप्ता द्वारा प्रस्तुत किये जा रहे कार्यक्रम के दौरान कावंरिया खुब झुमें। गायिका हेमा गुप्ता, राजेश गुप्ता की भक्ति भजन गीत बोलबम का नारा है बाबा एक सहारा है, हाथी ना घोड़ा कोनो सवारी पैदल ही अईबू तोर दूआरी हो भोले नाथ बोलबम गीत पर की गयी प्रस्तुति से खुब तालिया बटोरी। कार्यक्रम में गायक राजेश गुप्ता अमित मिश्रा के गीत ने भक्ति गीतों का श्रदालूओं में काफी उत्साहित दिखा एवं जमकर शिव भक्तो ने लुफ्त उठाया ।कार्यक्रम में उदधोषक बेगूसराय के संतोष एवं विजय शंकर,बेन्जो पर धनंजय, आंरगेन पर सुभाष,नाल पर पवन कुमार आदि कलाकारों का सहयोग रहा। कार्यक्रम के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम के दंडाधिकारी सह बीसीओअनिल कुमार चौधरी उप प्रमुख सचिन कुमार आदि मुख्य रुप से शामिल थे।

भव्य समारोह आयोजित कर निवर्तमान बीडीओ को दी गयी भावभीनी विदाई

प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया/ केनगर । कृत्यानंद नगर प्रखंड मुख्यालय परिसर स्थित सद्भावना भवन सभागार में स्थानांतरित निवर्तमान बीडीओ सत्येंद्र सिंह को भव्य सम्मान समारोह आयोजित कर और पुष्पगुच्छ प्रदान करते हुए अविस्मरणीय विदाई दी गयी। समारोह की अध्यक्षता प्रखंड प्रमुख सरिता सरोज ने की। वही कार्यक्रम की देख रेख एवं सुंदर भोज का आयोजन प्रखंड पंचायत राज पदाधिकारी सह कार्य पालक पदाधिकारी शेखर कुमार के द्धारा किया गया।

समारोह में सीओ अशोक कुमार सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि निवर्तमान बीडीओ श्री सिंह के साथ मिल कर कार्य करने का अवसर मिला और इनका कार्यकाल बहुत ही व्यवस्थित रहा तथा विकास कार्यो को इन्होंने निरंतर निष्पक्षता के साथ संपादित कराया. सीओ ने कहा कि इनकी कर्तव्यनिष्ठा लोक सेवा के प्रति पूर्णरूप से समर्पित रही। निवर्तमान बीडीओ ने सम्मान सभा को संबोधित करते हुए कहा कि केनगर प्रखंड में पदभार संभालने के उपरांत परिसर को स्वच्छ और आकर्षक बनाने दिशा में संकल्पित प्रयास के तहत उन्होंने अन्य सहायक अधिकारी जनप्रतिनिधियों एवं कर्मियों के सहयोग से संपूर्ण प्रांगण को सरकारी योजनाओं के जरिये पेवर लॉकिंग से आच्छादित कराया तथा वाहन शेड बनवाये गये। वहीं प्रखंड निवासी स्व

संक्षिप्त खबरें

भारोत्तोलन प्रतिभा खोज चयन कार्यक्रम आज खेल भवन में

आरा। वीर कुंवर सिंह रामना मैदान मेंभोजपुर जिला प्रतिभा खोज भारोत्तोलन प्रतिभा खोज कार्यक्रम की सफलता के लिए जिले के खेल प्रेमी एवं संघ के पदाधिकारियों द्वारा एक बैठक की गई जिसमें यह निर्णय लिया गया कि खिलाड़ियों के खेल भावना को ध्यान में रखते हुए डायरेक्ट रजिस्ट्रेशन कराने की सुविधा दी जाएगी भारोत्तोलन प्रतिभा खोज चयन राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीये भारोत्तोलन प्रशिक्षक के दवरा खेल भवन भोजपुर (आरा)में सुबह 8:00 बजे से की जाएगी प्रतिभा खोज चयन प्रक्रिया के उपरांत चयनित खिलाड़ियों का जिला में प्रशिक्षण कैंप का भी आयोजन होना है। उक्त चयन प्रतियोगिता में 12 वर्ष से कम उम्र के बालक / बालिका कोई भी खिलाड़ी हिस्सा ले सकते हैं इसके लिये कोई शुल्क नही है चयन प्रक्रिया में जिले के लगभग 250 बालक बालिका खिलाड़ियों को भाग लेने की संभावना है इस बात की जानकारी कुमार बिजय सयोजक भोजपूर जिला भारोत्तोलन संघ ने दी।

अतिक्रमणमुक्त गया शहर : एसपी

गया। वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती के नेतृत्व में गया शहर के मुख्य मार्गों पर हो रहे अतिक्रमण को लेकर विशेष अभियान चलाया गया। इस विशेष अभियान में गया शहर के केपी रोड, जीबी रोड, बजाजा रोड, कठोकर तलाब सहित कई क्षेत्रों में सड़क किनारे हो रहे अतिक्रमण को मुक्त कराया गया ,वहीं दुकानदारों के अतिक्रमण जगहों पर रहे सामानों को भी जब किया गया है। इन दिनों गया शहर में लगातार सड़क जाम की समस्या अतिक्रमण के कारण हो रही थी, जिसको देखते हुए वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती, सदर एसडीओ, टाउन डीएसपी पीएन साहू, कोतवाली थाना सहित भारी संख्या में पुलिस के जवान शामिल थे। इस संबंध में वरीय पुलिस अधीक्षक आशीष भारती ने बताया कि अतिक्रमण के कारण शहर में जाम की समस्या लगातार हो रही थी, जिसको लेकर आज विशेष अभियान चलाया जा रहा है। अतिक्रमण हो रहे हैं कई सड़को को मुक्त कराया जा रहा है एवं आगे भी यह अभियान जारी रहेगी।

सुखी धरती करे पुकार वृक्ष लगाकर करो श्रृंगार

गया। अखिल विश्व गायत्री परिवार की युवा इकाई मगध युवा प्रकोष्ठ द्वारा संचालित हरतिमा स्वास्थ्य संवर्धन के संचालक मनीष गुप्ता के नेतृत्व में गया जी शहर में पॉलिटेक्निक कॉलेज में 500 वृक्ष कॉलेज में प्राचार्य और गायत्री शक्तिपीठ गया के मुख्य ट्रस्टी कमलेश की उपस्थिति में संकल्प लिया गया है। जिसमें 40 पौधों का रोपण किया जा चुका है। मुख्य ट्रस्टी कमलेश ने लोगों को यह संदेश देते हुए कहा है कि आज हर जगह उच्च पैमाने पर एसी चलाया जा रहा है जिसका नतीजा है कि ग्लोबल वार्मिंग का खतरा दिन प्रतिदिन लोगों के ऊपर मंडरा रहा है और तापमान में भी दिन प्रतिदिन बढ़ोतरी देखने को मिल रहा है। उसको बचाने के लिए आज प्रकृति को बचाना बेहद जरूरी है। वहीं उपस्थिति सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज के प्राचार्य ने कहा की सभी किसी मांगलिक बेला में एक छोटा सा कोई वृक्ष का पौधा जरूर लगाना चाहिए और उन्हें पुत्रवत सेवा करना चाहिए क्योंकि एक पेड़ सौ पुत्रों के समान होता है।

बिहार सरकार लाठी-डंडों से कुचल रही है, जनता की मांगों को दबाना चाहती : पूर्व मंत्री

गया। बिहार भाजपा के वरीय नेता व पूर्व कृषि मंत्री डॉ प्रेम कुमार ने कहा कि एक बार फिर से बिहार में लोकतंत्र की जगह लाठी तंत्र ने ले लिया है। नीतीश कुमार जब से राजद गठबंधन के साथ गए हैं तब से उनका आत्मविश्वास लोकतंत्र से डगमगा रहा है। लाठी तंत्र पर विश्वास बढ़ा है। राजद की संस्कृति,राजद की कार्यशैली 15 वर्षों तक लाठीतंत्र की थी। जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली फिर से बिहार की वर्तमान सरकार होते जा रही है। जिसका नमूना पूर्व में पूरा देश देख चुका है। बिहार की जनता 15 वर्ष तक भुगत चुका है। पिछले 1 वर्ष से बिहार फिर वही भुगतने पर मजबूर है। लोकतंत्र का हथियार है विरोध,प्रदर्शन,विपक्ष। जनता की आवाज है विपक्ष। लेकिन बिहार सरकार उसे लाठी-डंडों से कुचल रही है। जनता की मांगों को दबाना चाहती है। चाहे आशा कार्यकर्ता हो,चाहे आंगनवाड़ी सेविका-सहायिका हो,चाहे शिक्षकों की मांग हो,चाहे किसान सलाहकार की मांग हो, सबको लाठी से कुचला गया है। भाजपा बिहार में हो रहे भ्रष्टाचार,किसानों की मांग,नौजवानों की मांग,शिक्षकों की मांग,किसान सलाहकारों की मांग, रसोइयों की मांग, कानून व्यवस्था दुरुस्त करने की मांग को लेकर सड़क पर उतरती है तो,उसे भी लाठी से खामोश करना चाहती है महा गठबंधन सरकार। भाजपा चुप रहने वाली,लाठी-डंडों,एफआईआर से डरने वाली नहीं है। हमने 15 बरस राजद के शासनकाल में भी संघर्ष किया है। आगे भी करते रहेंगे। जनता की समस्याओं के लिए हमने सदन से सड़क तक लड़ाई लड़ी है।

डोमिसाइल नीति को वापस लेने एवं शिक्षक भर्ती नियमावली में संशोधन को लेकर चक्का जाम

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। जन अधिकार पार्टी लोकतांत्रिक भोजपुर जिला इकाई के द्वारा शिक्षक भर्ती नियमावली में संशोधन को लेकर धोबी घाटवा के पास जिला अध्यक्ष आशुतोष सिंह की अध्यक्षता में चक्का जाम का आयोजन किया गया। इस राज्यव्यापी चक्का जाम में में पूरे जिले के जाप कार्यकर्ता शामिल हुए थे।

जिलाध्यक्ष आशुतोष सिंह ने चक्का जाम को संबोधित करते हुए कहां की जन अधिकार पार्टी युवा एवं छात्र हित के लिए सदैव ही अग्रणी भूमिका निभाई है चाहे वह रोजगार का मामला हो या कोई और। अभी या पार्टी के कार्यकताओं द्वारा पिछले 5 जुलाई 2023 को एक दिवसीय धरना का भी आयोजन किया गया था लेकिन बिहार सरकार के तरफ से किसी भी तरह का कोई निदान की बात नहीं की जा रही है। प्रदेश सचिव श्री संजय यादव जी ने कहा कि बिहार एक युवा प्रधान राज्य है एवं कल कारखानों का घोर अभाव है ऐसे में राज्य के युवाओं के पास रोजगार के दृष्टिकोण से सरकारी नौकरी ही एक उपाय बचता है। वही छात्र प्रदेश उपाध्यक्ष रितेश कुमार जी ने ने बताया कि पिछले माह घोषित 1.70 लाख स्कूली शिक्षकों की बहाली की घोषणा से युवाओं में एक नई उम्मीद जगी थी लेकिन कुछ महीने के घटनाक्रम और सरकार के प्रतिनिधियों के बयान को देखने से यह स्पष्ट होता जा रहा है कि यह घोषित नियुक्ति बिहार के युवाओं के खिलाफ षड्यंत्र है। युवा शक्ति जिलाध्यक्ष अजय यादव जी ने बताया कि जानबूझकर बहाली को लटकाने का प्रयास किया जा रहा है शिक्षक बहाली प्रक्रिया के बीच में डोमिसाइल नीति को बदलना तकनीकी रूप से गैरकानूनी है इसे बिहार के बच्चों के लिए अवसर की कमी हो जाएगी। जाप कार्यकर्ता सतीश यादव बेलसंडी जी ने कहा कि शिक्षक बहाली की नियमावली और सिलेबस में जिस प्रकार परिवर्तन हो रहे हैं उसे शिक्षक अभ्यर्थी परेशान है बार-बार नियमावली में संशोधन के चलते छात्र युवा एवं अभ्यर्थी बहुत ही कंफ्यूज है। इस राज्यव्यापी चक्का जाम में में मुख्य रूप से डॉक्टर बृजेश कुमार सिंह, अमरेश कुमार, अर्जुन यादव, सनोज यादव, पप्पू यादव, राजेश यादव, हरेंद्र यादव, संजय यादव, पप्पू गोप, रवि यादव अरविंद तिवारी रजनीश यादव बंटी कुमारएवं सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे।

पुलिस प्रशासन की लापरवाही से अपराधियों का मनोबल चरम पर : विधायक

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। ज्ञात जो कि रविवार को शाम 7 बजे अपराधियों ने पवना के प्रतिष्ठित कपड़ा दुकानदार विनोद केशरी और साथ में दुकान चला रहे उनके बेटों पर हमला किया , दुकान से कपड़ा फेंकने लगे और मारपीट करने लगे जब वेलोग विरोध किए तो अपराधियों ने फायरिंग शुरू कर दी. 3 राउंड गोली चलाई. विनोद केशरी और उनके बेटे किसी तरह अपनी जान बचाए. अभी पूरा बाजार बंद है और माले के नेतृत्त्व में सड़क जाम कर विरोध हो रहा है. ऋक्ष कल ही दर्ज हुआ है ,छापेमारी हुई है पर अभी तक गिरफ़्तारी नहीं हुई है । आंदोलन रढ से वार्ता की मांग पर डटा है ।

विधायक ने कहा कि पुलिस प्रशासन की लापरवाही से अपराधियों का मनोबल चरम पर है,ऐसी गुंडागर्दी बर्दाश्त नहीं कि जाएगी,अविलंब अपराधियों की गिरफ्तारी करे प्रशासन एवं दुकानदारों की सुरक्षा सुनिश्चित करे । आंदोलन में शामिल दुकानदारों में बब्लू गुप्ता दवा दुकान, मुन्ना केशरी कपड़ा दुकान, मो. अनवर आलम सिलाई सेंटर दुकानदार, अनिल गुप्ता चप्पल दुकानदार, मुन्ना गुप्ता मिठाई दुकानदार, राकेश कुमार समोसा दुकानदार, आकाश कुशवाहा मोबाइल दुकानदार,गुड्डू आलम कपड़ा दुकानदार, शंकर ठाकुर मेंस पार्लर दुकानदार, अंकित कुमार ऑनलाइन सेंटर दुकानदार, महेश चंद्रवंशी अंडा दुकानदार, किशन कुमार हार्डवेयर दुकानदार, चंदन साह शब्जी दुकानदार, मुन्ना केशरी आलू-प्याज दुकानदार, बलिराम साह चाय दुकानदार, सोनू गुप्ता ग्राहक,सीएसपी संचालक, आमोद लाल श्रृंगार दुकानदार, सुदामा लाल सिलाई सेंटर दुकानदार सहित पवना बाजार के सभी दुकानदार हैं शामिल । प्रमुख नेताओं में अगिआंव विधायक मनोज मंजिल,भाकपा माले अंचल सचिव रघुवर पासवान,माले जिला कमिटी सदस्य भोला यादव, चंदेश्वर मास्टर साहब,माले नेता सह व्यवसायी विष्णु मोहन,विधायक प्रतिनिधि जय कुमार यादव,सुनिल पासवान, प्रमोद यादव, बिनोद केशरी,युवा नेता अप्पू यादव, अमित कुमार , बूटन पासवान, राजनाथ प्रसाद, जनकवि गोपाल केशरी, अरबिंद अनुराग, विष्णु राम, विजय कुमार राम, जितेंद्र पासवान, अमर केशरी, मुन्ना कुमार, मुकेश कुमार, अमन, अनिकेत, अंकुश, अंकित, गुड्डू आरजू सहित सैकड़ों जनता मौजूद रहे।

ये सरकार लोकतंत्र की हत्या करने वाली सरकार है : डा प्रेम कुमार

प्रात : किरण संवाददाता

गया। भारतीय जनता पार्टी गया जिला की ओर से पटना में पुलिस द्वारा विधानसभा मार्च के दौरान पार्टी कार्यकर्ता की मौत को लेकर बिहार में जिला मुख्यालय,प्रखंड में एकदिवसीय धरना का कार्यक्रम गया के गांधी मैदान गेट नंबर 5 पर धरना दिया गया जहानाबाद जिला महामंत्री शाहिद विजय सिंह के चित्र पर पुष्प चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया है। धरना का अध्यक्षता जिला अध्यक्ष प्रेमप्रकाश चिंटू सिंह के द्वारा किया गया संचालन जिला महामंत्री पप्पू चंद्रवंशी ने किया बिहार सरकार के पूर्व मंत्री सह गया शहर विधायक डॉक्टर प्रेम कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि ये चाचा भतीजा की सरकार गूंगी बहरी सरकार है ये किसी की बात नहीं सुनने वाली सरकार है ये सरकार लोकतंत्र की हत्या करने वाली सरकार है जिस तरह शांति पूर्वक पैदल मार्च पर नीतीश कुमार के इशारे पर पुलिस द्वारा बर्बरता पूर्वक लाठी चार्ज करवाया गया लगता हैं कि बिहार में इमरजेंसी लगाई गई है भाजपा कार्यकर्ता लाठी गोली से डरने वाली नहीं है भाजपा का एक एक कार्यकर्ता खून देकर इस सरकार को उखाड़ फेंकने का काम करेगी 2024और 2025 में बिहार से चाचा भतीजा की बिदाई तय है,औरंगाबाद सांसद सुशील कुमार सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि शांति पूर्वक विधान सभा पैदल मार्च का जो रूट दिया गया था उसी रूट पर नेता,कार्यकर्ता शांति मार्च कर रहे थे किसी तरह का कोई व्यवधान नहीं हुआ अचानक पुलिस द्वारा लाठी चार्ज कर पीटा गया किसी को कुछ समझ नहीं आया नीतीश कुमार एवं तेजस्वी यादव द्वारा सोची समझी साजिश कर घटना को अंजाम दिया गया दर्जनों नेता एवं कार्यकर्ता को पीटा गया आज हम शहीद विजय सिंह की बलिदान खाली नहीं जाएगा कार्यकता के बलबूते इस सरकार को बिहार से बिदाई कर दिया जाएगा। बजीरगंज विधायक बीरेंद्र सिंह कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि हम दबने वाले नही है ये लड़ाई की शुरूवात हो चुकी है हम सड़क से सदन तक सरकार का विरोध करते रहेंगे। जिला अध्यक्ष प्रेम प्रकाश चिंटू सिंह ने अपने संबोधन में कहा की जिस तरह शांति पूर्वक विधान सभा पैदल मार्च पर लाठी चार्ज कर गया जिला से हजारों कार्यकर्ता पटना में जाकर पैदल मार्च में शामिल होकर इस निक्कमी सरकार को जो उखड़ फेकने का जो संकल्प लिया है 2024में लोकसभा से बिदाई एवं 2025 में भाजपा कार्यकर्ता के बलबूते बिहार से चाचा भतीजा को उखाड़ फेकेंगे लाठी और गोली से भाजपा कार्यकर्ता डरता नहीं है।

महादलित टोले के सामुदायिक भवन अंबेडकर परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा नगर निगम के अंतर्गत अनांइट मोहल्ले के महादलित टोले के सामुदायिक भवन अंबेडकर परिचर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता राजद के महानगर अध्यक्ष शिवकुमार शर्मा और संचालक युवा राजद के नगर अध्यक्ष कुणाल कुमार सिंह ने किया परिचर्चा में आरा शहर पूर्वी 25 के जिला परिषद सदस्य संजय यादव परिचर्चा में लोगों से कहा कि कि हम लोग भीमराव अंबेडकर के बताए हुए रास्ते पर चलने का संकल्प लिया जाए और उन्हीं के मार्गदर्शन पर हम लोग चलें तभी हम लोग विकास करेंगे हम लोग प्रदेश कार्यालय के आदेश पर आपके मोहल्ले में आए हैं धनंजय यादव ने कहा कि लोग हमारे पार्टी से ज्यादा से ज्यादा लोग जुड़े वही महानगर अध्यक्ष शिवकुमार शर्मा ने कहां की पार्टी जो मुझे जिम्मेदारी सौंपी है हम पार्टी के के लिए हमेशा तत्पर है और ज्यादा से ज्यादा लोगों को पार्टी से जुड़ने का कोशिश करेंगे इस परिचर्चा में युवा राजद के अध्यक्ष अरुण कुमार यादव महानगर उपाध्यक्ष भुनेश्वर यादव मीडिया प्रभारी भोजपुर सुभाष जादू पंचायती राज प्रकोष्ठ भोला महतो नगर उपाध्यक्ष सभा जादू ब्रह्मदेव मुन्ना यादव ओम प्रकाश पासवान अजीत पासवान नरेश पासवान तूफानी पासवान इत्यादि लोग इस पर चर्चा में शामिल हुए सभी लोगों ने भीमराव अंबेडकर के बताए हुए रास्ते पर संकल्प लिया गया।

ब्लौसम वेलफेयर आठ दिवसीय ब्यूटी कार्यशाला का दूसरा दिन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। ब्लौसम ब्यूटी क्लिनिक एण्ड स्पा एकेडमी बाई ब्लौसम वेलफेयर ट्रस्ट के द्वारा चल रहे आठ दिवसीय ब्यूटी कार्यशाला हरप्रसाद दास जैन धर्मशाला जेल रोड आरा में एचडी मेकअप कार्यशाला के दूसरे दिन में सिखाया गया वर्षा खान ट्रेनर ने कहा क्या होता है एचडी मेकअप, एचडी जैसे कि नाम से ही समझ में आ रहा है हाई डेफिनेशन, यह मेकअप खास तौर पर अचछी फोटोग्राफी के लिए किया जाता है क्योकि कैमरे के सामने आप अपने चेहरे की कमियों को छूपा नहीं सकते हैं, लेकिन अगर आप एचडी मेकअप करवाते हैं तो आप आपने चेहरे के फलौस को छुपा सकते हैं कि और एक फलौलेस स्किन पर सकते हैं (एच- ड) मेकअप से एक नेचुरल ब्लेमिश - फ्री और ए-वन मेकअप लुक मिलता हैं,(एच-ड) मेकअप के प्रोडक्स लाइट डिफ्यूजिग कोटिग से कोरेड होता हैं, जब लाइट आपके चेहरे पर रिफ्रेलेश होती है तो मेकअप समूथ, ट्रांसपेरेट और फ्लौस दिखता है।

(एच- ड) मेकअप को साधारण मेकअप की तरह ब्रास और मेकअप स्पॉन्ज के साथ ही किया जाता है इसके लिए कोइ स्पेश लगन का इस्तेमाल नहीं होता है, जो थोड़ा एक्सपोसिव होता हैं। एअरब्राश की तुलना मे (एच-ड) मेकअप थोड़ा कम समय तक टिकते हैं, फिर भी इनकी लिस्टिंग 12 से 15 घंटे तक होता हैं। (एच-ड) मेकअप औयली सन्सेटीव और ड्राइस्किन बलों के लिए सही होता हैं। आज की मॉडल रूबी चौहान और इस कार्यशाला मे सैकड़ों ब्यूटीशियन महिला उपस्थित रही।

जिसमें पयाल, पुष्पा प्रसाद, मोनिका, राधिका केशरी, राकेश कुमार, स्वीटी शर्मा, अंशु देवी, स्वर्णलता त्रिवेदी, सीमा देवी, आशा, दीपशिखा, खुशी कुमारी, पार्वती, शालू कुमारी, वंदना श्रीवास्तव, चंदा केशरी, अमित कुमार, सुनीता देवी।

विधायक ने कई वार्डों में विभिन्न योजनाओं का किया उद्घाटन व शिलान्यास

प्रात : किरण संवाददाता

गया। गया शहरी विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न वार्डों में पूर्व कृषि मंत्री सह नगर विधायक डॉ प्रेम कुमार ने रविवार को अपने विधायक निधि से कई योजनाओं का शिलान्यास व उद्घाटन किया गया है। सर्वप्रथम उन्होंने नारियल फोड़कर संजय नगर वार्ड नं 6 में शहिद उच्च विद्यालय भवन का निर्माण कार्य की आधारशिला रखी। वार्ड नं 4 में छोटकी नवादा में समुदायिक भवन का उद्घाटन,डेल्हा संगम चौक मैरेज हॉल के नजदीक पथ का निर्माण का शुभारंभ,धनिया बगीचा में सामुदायिक भवन के चारदीवारी एवं नाला निर्माण कार्य की आधारशिला रखी। वार्ड नं 30 में चंदौती मुख्य पथ से लटू सिंह के घर तक पेभर ब्लॉक पथ का उद्धघाटन, वार्ड नं 30 में एच पी गैस एजेंसी के बगल वाली गली में नाला एवं पथ कार्य का उद्घाटन, वार्ड नं 42 में डाकखाना गली में अमरेंद्र सिंह के घर से केदार प्रसाद के घर तक पथ एवं नाली का निर्माण कार्य शुरू करने की आधारशिला रखी। वार्ड नंबर 44 में माडनपुर मुख्य मार्ग से अरविंद जी के घर तक पथ एवं नाली का उद्घाटन,वार्ड नं 34 में गेबाल विगहा में दीपक चन्द्रवंशी के घर से शकुन्तला देवी के घर तक पथ एवं नाली का निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। उक्त सभी शिलान्यास और उद्घाटन के बाद क्षेत्र की जनता को संबोधित करते हुए पूर्व मंत्री सह नगर विधायक डॉ प्रेम कुमार ने कहा कि गया नगर विधानसभा क्षेत्र के हर वार्ड के विभिन्न मोहल्लों में विकास योजनाओं को धरातल पर उतारना ही हमारा मुख्य लक्ष्य है। पूरे वार्ड में विकास योजनाओं को तेजी से किया जा रहा है। केंद्र की मोदी सरकार हर क्षेत्र में काम कर रही है। चाहे वह छात्रों हो,मजदूर हो,युवाओं हो,किसान हो या महिला सभी के प्रति ध्यान रखते हुए काफी संवेदनशीलता के साथ काम किया जा रहा है। बीते लंबे वर्षों से भवन हीन शहीद हाई स्कूल को अपना जमीन मिलने से शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी उपलब्धि हासिल हुई है। आने वाले समय में भव्य स्कूल भवन का निर्माण होगा, जिसमें विद्यार्थियों को पठन-पाठन की सुविधा मिलेगी। हमारा प्रयास था कि विद्यार्थियों को भवन के बिना पढ़ाई बाधित नहीं हो इसके लिए 15 लाख रुपए की लागत से स्कूल भवन का निर्माण कार्य कराने की स्वीकृति दी।

राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन द्वारा पर्यावरण संरक्षण अभियान की शुरूआत

गया। राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन द्वारा आज जी पी पैलेस,चांदचौरा में पत्रकार सम्मान समारोह एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु अभियान का शुभारंभ किया गया है। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि वर्तमान युग में विज्ञान की प्रगति और भौतिकवादी चकाचौंध तथा सुविधावादी वृत्ति के बढने के कारण मनुष्य अपनी मानवीय शक्ति तथा भविष्य के प्रति खासकर पर्यावरण संरक्षण के प्रति उदासीन होता जा रहा है। जबकि भारतीय संस्कृति में नदी, पेड़, पौधे, धरती, सभी को संरक्षित करने के उद्देश्य से ही पुजनीय माना था। हमारे पूर्वजों ने प्रकृति को परमेश्वर की संज्ञा दी। वक्ताओं ने आज से ही उपस्थित लोगों से अपील करते हुए कहा कि हम सब मिलकर मानसून एक एक पेड़ अवश्य लगाएं और पर्यावरण संरक्षण हेतु अभियान में सहयोग करें। इस अवसर पर राष्ट्रीय मानवाधिकार संगठन द्वारा गर्मी, बरसात, जाड़े में निर्भीक होकर अपने कर्तव्य पथ पर आगे रहने वाले, बिना डरे हुए पत्रकारिता करने वाले कर्मयोगियों को सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर संगठन के प्रदेश अध्यक्ष मनीष पंकज, अनिल सिंह ,मधु देवी कंचन देवी उपस्थित थे।

क्लीन गंगा डायरेक्टर से जिलाधिकारी ने निरंजना नदी के पुनर्जीवित करने के संबंध में हुई चर्चा

प्रात : किरण संवाददाता

गया। नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा के डायरेक्टर जनरल जो 1991 बैच के आई०ए०एस० जी० अशोक कुमार के साथ जिला पदाधिकारी गया डॉ० त्यागराजन एसएम की बैठक होटल ओक्स में संपन्न हुई है। इसमें मुख्य रूप से निरंजना नदी के पुनर्जीवित करने के संबंध में कई मुद्दों पर बातचीत हुई है।

बिहार सरकार द्वारा भुगर्व जल को संरक्षित रखने हेतु उठाए जा रहे कदम, जैसे पेयजल के लिए फल्गु नदी में ट्यूबेल बंद कर, गंगा जल आपूर्ति की जा रही है, जिससे फल्गु नदी के वाटर टेबल को बरकरार रखा जा रहा है। गयाजी डैम की विशेषता इत्यादि के बारे में विस्तार से बात हुई है। कृषि कार्य के लिए बिजली के जगह सोलर पंप का प्रयोग करना, फल्गु नदी में जो ड्रेनेज जा रहा है। उसको चिन्हित कर उसको सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट का निर्माण के संबंध में चर्चा हुई है। गयाजी डैम एवं गंगा जल आपूर्ति से लोगो तक पेयजल उपलब्ध करवाने एवं फल्गु नदी से लगे ट्यूबवेल से वाटर सप्लाई बंद करने जिससे भूगर्भ जल स्तर को बरकरार रखने के कार्य किया गया है। बिहार सरकार द्वारा भूगर्भ जल स्तर को संरक्षण करने की इस पहल को काफी सराहा है। चतरा जिले के सिमरिया ब्लॉक के बेलगड्डा के समीप फल्गु निरंजना नदी के उद्गम स्थल से गया में फल्गु नदी जो आगे जहानाबाद होते हुए आगे की ओर बहती है। उस पूरी नदी की संरक्षण करने के लिए जो विभिन्न कदम उठाए जाने है, उसके संबंध में विस्तार से बातचीत हुई है।

हर किस प्रकार फल्गु नदी तट में प्लांटेशन करना, विभिन्न जगहों को चिन्हित करके चेकडैम बनाना, फल्गु नदी के स्रोत में कैसे गाद शिल्ट को कम करना, फल्गु नदी में जो डि-सिल्टिंग कार्य को किस प्रकार किया जाना और कितना मात्रा में बालू का उठाव किया जाना इत्यादि के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई है। अगले तीन माह के अंदर आईआईटी कानपुर से टीम फल्गु नदी के पुनर्जीवित करने के संबंध में विस्तार से स्टडी करेगी और प्रतिवेदन उपलब्ध करवायेगी, उसके आलोक में अग्रेतर कार्रवाई की जाएगी।

मशरक गंडामन मिड डे मिल हादसे की दसवीं बरसी पर श्रद्धांजली

प्रात : किरण संवाददाता

मशरक। मशरक प्रखंड के धरमासती गंडामन गांव में सरकारी विद्यालय में मध्याह्न भोजन योजना के जहरीले निवाले ने 22 मासूमों के मौत को दस वर्ष बीत गए लेकिन व्यवस्था जस की तस बनी हुई है। आज घटना के दसवीं बरसी पर मासूमो के परिजन बच्चो के स्मारक पर पूजा हवन कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। दस वर्ष पुराना घाव उनके घरो में बरसी के दिवस पर ताजा हो गया । मृत बच्चों के घर एक बार फिर मातम दिखा। प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी डा वीणा कुमारी , आसपास के स्कूली बच्चे , पंचायत प्रतिनिधि सहित कई गणमान्य लोगों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किया। जिसमें जिला परिषद सदस्य चांदनी देवी, जदयू प्रखंड अध्यक्ष रामाधार सिंह, भाजपा मंडल अध्यक्ष बीरबल कुशवाहा, पंचायत के मुखिया राजेंद्र प्रसाद राय , एम्स के डॉक्टर जगजीत पांडेय, वरुण राय, महेश कुमार सिंह, सत्येंद्र सिंह, प्रखंड सरपंच संघ के अध्यक्ष अजय कुमार सिंह, बिडिसी नितेश कुमार सिंह, विद्यालय प्रधान राजकिशोर साह सहित अन्य शामिल हुए। गंडामन नवसृजित विद्यालय में 16 जुलाई 2013 हुए दर्दनाक हादसा आज भी लोगो के जेहन में जिंदा है । अपने इकलौते बच्चे को हादसे में खोने वाले आखिलानन्द मिश्र बताते है कि हादसे के बाद भी गाँव के बचे बच्चो की पढ़ाई , मिड डे मील एव स्वास्थ को लेकर सरकारी दावे सिर्फ फाइलों में सिमट कर रह गए है। बच्चों की मौत के बाद सरकार ने गंडामन गांव को गोद ले लिया था। इसके बाद गांव के विकास को पंख लग गए। जिस स्कूल में घटना हुई उसका नया बिल्डिग बनना शुरू हुआ जो 8 वर्ष बाद भी अधूरा है । विद्यालय को कक्षा 8 तक अपग्रेड किया गया किन्तु 10 वर्ष बाद भी विद्यालय को एक अदद शिक्षक नही मिला । घटना के बाद से आज तक सभी शिक्षक प्रतिनियोजन पर आज भी है । मृत बच्चों की याद में लाखो रूपए की लागत से स्मारक, प्लस टू हाईस्कूल की स्थापना, स्वास्थ्य उपकेंद्र, जल मीनार बने। गांव की अधिकांश सड़कों को बनाने का काम शुरू हुआ जो आज भी अधूरा है । गांव में बिजली की व्यवस्था, पीड़ित परिवारों सहित गांव के अन्य लोगों को भी पक्का आवास, पेंशन योजना, परिसर में पोखरे का उन्नयन आदि अनेक विकास योजनाओं को गति मिली लेकिन कई योजनाएं अब भी अधूरी हैं।

अखिल भारतीय शौंडिक राष्ट्रीय सम्मेलन सह सम्मान समारोह में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने का किया आह्वान

प्रात : किरण संवाददाता

बिहार। रांची झारखंड प्रदेश शोंडिक संघ के प्रदेश उपाध्यक्ष सह प्रवक्ता बीरेंद्र साहु ने बताया कि रांची जिला मुख्यालय से पूरब दिशा सिल्ली मुरी स्थित बंगाल सीमा में तुलीन के रायल पैलेस, रामनगर तुलीन झालदा पुरूलिया के धरती पर पश्चिम बंगाल प्रदेश सुंडी संघ के बैनर तले 11 बजे पूर्वाह्न से सम्मेलन सह सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

इस सम्मेलन के सभापति श्री रामेश्वर साहु जी थे। सम्मेलन मे आए 51अतिथियों में सभी अतिथियों को चादर ओढ़ाकर बुके देकर सम्मानित किया गया। इस सम्मेलन में झारखंड प्रदेश शोंडिक संघ, राष्ट्रीय सुंडी समाज, पंच परगना सुंडी संघ एवं शोंडिक जागरण मंच के दिग्गज नेताओं सहित तुलीन, डूमेरडीह,बरजोपुर, पीपर दाग, कुतरू, बासारुली, मारदु,बलरामपुर, के प्रतिनिधि शामिल होकर सम्मेलन सह सम्मान समारोह को सफल बनाया। कार्यक्रम प्रभारी कृष्णा मुरारी साहु जी ने बताया कि झारखंड प्रदेश शोंडिक संघ के संरक्षक कुमुद प्रसाद साहु, प्रदेश अध्यक्ष दिनेश प्रसाद साहु, प्रदेश उपाध्यक्ष सह प्रवक्ता बीरेंद्र साहु, प्रदेश महामंत्री उमेश साहु, प्रदेश कार्यकरिणी से उदय साहु, शैलेन्द्र कुमार,रमण साहु,रमेश साहु, मिथिलेश साहु, राजेश साहु, मुकेश साहु, छोटे लाल साहु, राकेश शोंडिक, बिरेंदर प्रसाद साहु,राष्ट्रीय सुंडी समाज के प्रदेश अध्यक्ष सनत मंडल, रविन्द्र मंडल, आमीन मंडल, पंच परगना सुंडी संघ से राजन साहु, अजीत साहु, उपेन साहु, ओम प्रकाश साहु, भूपेन भगत, जागरण मंच से राधेश्याम साहु, गणेश साहु, संजय भगत,ने बारी बारी से अपनी बाते रख्खी हैं।

तुलीन के कार्यक्रम को सफल बनाने में तुलीन के साथ ही अगल बगल के गांव से बबलू साहु, दीपक साहु, ओमप्रकाश साहु, मल्टी जयसवाल, साधन साहु, रोहित साहु, ने अहम योगदान दिया। दो बुजुर्ग महिला कामिनी साहु 105 वर्ष, शशिकला साहु 103 वर्ष को अंग वस्त्र, मिठाई खिलाकर एवम पंचायत चुनाव में ग्राम समिति में चुनाव जीती पुर्णिमा साहु को चादर ओढ़ाकर बुके देकर सम्मानित किया गया। सन्त मंडल ने सुंडी जाति को अनुसूचित जाति में शामिल करने की मांग झारखंड सरकार से किया है। दिनेश प्रसाद साहु ने सभी संगठनों को एक मंच पर आकर एक साथ लड़ाई जारी रखने की बात कही। मंच संचालन कर रहे बीरेंद्र साहु ने बताया की 24 सितंबर को राची में होने वाली सम्मेलन सह सम्मान समारोह का आयोजन झारखंड प्रदेश शोंडिक संघ कर रहा है जिसमें अखिल भारतीय शौंडिक संघ के पदाधिकारीगण के आलावा देश विदेश से भी अतिथि पधार रहे हैं ये सम्मेलन ऐतिहासिक होगा और मिल का पत्थर साबित होगा। अंत में धन्यवाद ज्ञापन सभापति श्री रामेश्वर साहु ने दिया। अपराह्न 3:30 बजे कार्यक्रम की समाप्ति हुई।

तीन प्रखंड को जोड़ने वाली बरमसिया पुल क्षतिग्रस्त अवस्था में पहुँचा,लोग चिंतित

प्रात : किरण संवाददाता

झाझा। झाझा नगर परिषद से होते हुये ग्रामीण क्षेत्र को जोड़ने वाली झाझा गणेशी मंदिर के समीप उलाय नदी पर बनी 350 मीटर लंबी और 20 फीट चैड़ाई वाली लगभग तीस लाख रुपए की लागत से सांसद कोटा से बनी वर्षो पुरानी बरमसिया पुल आज अपनी बदहाली पर पहुँच चुका है। जिसके कारण आज पुल से गुजरने वाले लोगों के मन में भय बना ह

125 प्रतिशत रिटर्न के बाद अब 2 का शेयर बना रॉकेट

नई दिल्ली। एफसीएस सॉफ्टवेयर सॉल्यूशंस के शेयर बीएसई पर 13 प्रतिशत से अधिक बढ़कर 2.43 रुपये के इंट्राडे हाई पर पहुंच गए थे। शेयर में वॉल्यूम में 4 गुना से ज्यादा का भारी उछाल देखा गया। मार्च 2023 में नेट सेल्स 8.29 करोड़ रुपये दर्ज की गई, जो मार्च 2022 में 9.99 करोड़ रुपये की तुलना में 17 प्रतिशत कम है।

5000 इलेक्ट्रिक बस बनाने का मिला ऑर्डर, शेयरों की मच गई लूट

नई दिल्ली। शेयर बाजार में जेबीएम ऑटो की धूम मची हुई है। कंपनी ने कल यानी 13 जुलाई 2023 को शेयर बाजारों को बताया था कि उन्हें 5000 इलेक्ट्रिक बस बनाने का ऑर्डर मिला है। इस खबर के बाहर आने की देरी थी। जेबीएम ऑटो के शेयर पर निवेशक शुक्रवार की सुबह टूट पड़े। जिसके बाद कंपनी के शेयर 17.71 प्रतिशत तक चढ़ गए थे।

नेहा दास इस प्राइम डे पर अमेज़न प्राइम मेंबर्स को दे रहीं ढेरों खुशियाँ

मुंबई, एजेंसी। अमेज़न पर मनाया जाने वाला प्राइम डे का जश्न सिर्फ प्राइम मेंबर्स के लिए ही नहीं, बल्कि तमाम अमेज़नियंस के लिए भी ढेर सारी खुशियाँ लेकर आता है। ये अमेज़नियंस वही लोग हैं, जो देश भर में ग्राहकों को खुश करने के लिए लगातार काम कर रहे हैं। अमेज़न इंडिया में साइक्लिंग और स्केटिंग कैटेगरी मैनेजर नेहा दास से मिलिए, जो द्बड्ड5श्ठ्ठ.द्बठ्ठ पर साइक्लिंग और स्केटिंग कैटेगरीज़ में प्रोडक्ट्स की खरीदी के इच्छुक ग्राहकों को एक सुखद अनुभव देना सुनिश्चित करती हैं। नेहा दास वर्ष 2021 में अमेज़न में एक बिज़नेस डेवलपमेंट मैनेजर के रूप में शामिल हुईं। शुरुआत में उन्होंने अमेज़न ग्लोबल सेलिंग के माध्यम से भारत के ब्रांड्स और विक्रेताओं को संयुक्त अरब अमीरात और केएसए सहित भारत के बाहर अन्य बाजारों में प्रोडक्ट्स को निर्यात करने में सक्षम बनाया। इसका परिणाम यह रहा कि उन्हें वैश्विक ग्राहक आधार में मूल्यवान अंतर्दृष्टि हासिल हुई और विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों से ताल्लुक रखने वाले ग्राहकों को खुशी प्रदान करने में उनका कौशल भी बखूबी निखर सका। वर्तमान में अपनी भूमिका के रूप में, वे भारत में साइक्लिंग और स्केटिंग कैटेगरीज़ का नेतृत्व करती हैं, और इन गतिविधियों के प्रति ग्राहकों में खुशी और उत्साह का संचार करने के लिए लगातार नए तरीके खोजती हैं। प्राइम डे के लिए अपने उत्साह को दर्शाते हुए, नेहा दास ने कहा, प्राइम डे हमारे प्राइम मेंबर्स के लिए एक शानदार अवसर है, जो न सिर्फ उन्हें बेहतरीन डील्स, नए लॉन्च और ब्लॉकबस्टर एंटरटेनमेंट के साथ सर्विसेस प्रदान करता है, बल्कि उनके खरीदारी अनुभव को भी श्रेष्ठतम बनाता है। खोज के इस शानदार समय में नई संभावनाओं को अपनाते हुए, प्राइम मेंबर्स कई सकारात्मक अनुभवों को प्राप्त कर सकते हैं। ब्रांड्स के नए लॉन्च लाना, उनकी इस यात्रा का हिस्सा बनना और इससे हमारे प्राइम मेंबर्स को मिलने वाली खुशी का गवाह बनना हमें दोगुनी खुशियाँ दे जाता है। नेहा दास को अमेज़न इंडिया में समान विचारधारा वाले सहकर्मियों के साथ काम करने में बेहद संतुष्टि मिलती है, जो ग्राहकों के लिए समान रूप से अपना सर्वश्रेष्ठ देने का लक्ष्य रखते हैं। वे कहती हैं, अमेज़न का जीवंत वर्क कल्चर, अद्वितीय दृष्टिकोण और विचारों को महत्व देता है। यह टीम को एक सशक्त वातावरण प्रदान करता है और साथ ही उन्हें सीमाओं को पार करके आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है।

जॉइंट रिप्लेसमेंट में नई टेक्नोलॉजी पर सेमिनार

भोपाल, एजेंसी। भोपाल के एमपी नगर में स्थित होटल रेसिडेंसी में शुक्रवार 14 जुलाई 2023 को मेडिकेयर हॉस्पिटल, इंदौर के जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ. हेमंत मंडोवरा द्वारा फिजियोथेरेपिस्ट्स के लिए 'जॉइंट रिप्लेसमेंट में नई टेक्नोलॉजी पर' एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। जॉइंट रिप्लेसमेंट से जुड़े नई टेक्नोलॉजी के बारे में फिजियोथेरेपिस्ट्स से डॉ. हेमंत मंडोवरा अपने इस सेशन में जॉइंट रिप्लेसमेंट में उन्नत तकनीक विधियों, नए इम्प्लांट्स के प्रयोग के बारे में अपने अनुभव और जानकारियाँ साझा किए। डॉ. हेमंत मंडोवरा ने बताया यह विशेष आयोजन जॉइंट रिप्लेसमेंट के क्षेत्र में नई टेक्नोलॉजी के बारे में नवीनतम जानकारी देने का एक मौक़ा था, इस इंटरैक्टिव सेशन में फिजियोथेरेपिस्ट्स से प्री ऑपरेशन और पोस्ट ऑपरेशन अनुभवों को साझा किया। साथ ही मिनिमल इनवेसिव सर्जरी, पार्शियल नी रिप्लेसमेंट, अस्पताल से जल्दी छुट्टी, रिप्लेसमेंट के बाद सामान्य स्थिति में लौटना, कंधे के जोड़ बदलने वाले मरीजों और उनके स्वास्थ्य से जुड़े कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर सार्थक बातचीत हुई।

भोपाल में स्मार्ट मीटरिंग प्रोजेक्ट के लिए भारतीय कंपनी की जगह चीन की कंपनी को चुना गया

भोपाल, एजेंसी। संवेदनशील परियोजना होने के बावजूद एमपी डिस्कॉम चीनी कंपनी को लगभग 900 करोड़ रुपये का महत्वपूर्ण ऑर्डर देने जा रही है। भोपाल में रहने वाले 975000 परिवारों का डाटा/जानकारी चीनी कंपनी के पास पहुंच जाएगी। मध्य प्रदेश की सरकारी उपक्रम मध्य प्रदेश मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी लिमिटेड (एमपीएमकेवीवीसीएल) ने स्मार्ट मीटरिंग के लिए एडवांस्ड मीटरिंग इंफ्रास्ट्रक्चर (एएमआई) सर्विस प्रोवाइडर (एएमआईएसपी) के चयन और नियुक्ति के लिए 27 नवंबर 2022 को निविदाएं आमंत्रित करने के लिए एक नोटिस जारी किया था, जो कि डिजाइन बिल्ड फाइनेंस ओन ऑपरेट ट्रांसफर (डीबीएफओओटी) मॉडल पर आधारित था। बोली लगाने वालों में इंडिया पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड 897 करोड़ रुपये की बोली के साथ एल1 विक्रेता के रूप में उभरा। अप्रावा एनर्जी प्राइवेट लिमिटेड (जिसे चाइना लाइट एंड पावर इंडिया लिमिटेड के नाम से जाना जाता है) ने 936 करोड़ रुपये की बोली के साथ एल2 विक्रेता का स्थान हासिल किया और जीनस पावर इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड को 949 करोड़ रुपये पर एल3 विक्रेता के रूप में सूचीबद्ध किया गया। इंडिया पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड को 31 मार्च 2023 को लेटर ऑफ एक्सेप्टेंस (एलओए) प्रदान किया गया था। मामूली देरी और अन्य प्रक्रियात्मक मुद्दों के कारण, डिस्कॉम ने इंडिया पावर को टर्मिनेशन लेटर जारी कर दिया। परिणामस्वरूप, ऑर्डर अब रू2 विक्रेता को ट्रांसफर किया जा रहा है, जिससे चिंताएं बढ़ गई हैं।

अवेस्थाजेन लिमिटेड ने पेश किया टीस्टार बायोएक्टिव गमिज, शुगर और कैलोरी मैनेजमेंट के लिए प्री-डायबिटिक और डायबिटिक हैल्थकेयर

भोपाल । अवेस्थाजेन लिमिटेड की इकाई अवेस्था गुड अर्थ फूड ने शुगर और कैलोरी मैनेजमेंट के लिए एक उत्पाद टीस्टार बायोएक्टिव गमिज पेश किया है। इससे भोजन के बाद ब्लड ग्लूकोज का स्तर 10एमजी/डीएल तक कम किया जा सकता है। इसमें सभी प्राकृतिक तत्वों को शामिल किया गया है जो कि ब्लड शुगर स्पाइक्स का मैनेज करता है और आगे एक बेहतर इंसुलिन प्रतिक्रिया को मैनेज करने में मदद करता है। टीस्टार को एक भारतीय औषधीय पौधे से विकसित किया जाता है, जिसका उपयोग आम तौर पर फूड मैट्रिक्स के एक हिस्से के तौर पर किया जाता है। इसका उपयोग पारम्परिक चिकित्सा में एक शक्तिशाली शुगर और कैलोरी मॉड्यूलेटर के रूप में किया जाता है और यह स्वस्थ बॉडी मास को मैनेज करता है। सबसे अच्छे परिणामों के लिए इसे नाश्ते और रात के खाने से पहले दो गमिज लेने की सिफारिश की जाती है। टीस्टार पेट में और हाइड्रेशन पर आंत में एक कोलाइडल प्रकार का सस्पेंशन बनाता है, और इस प्रकार गठित लेष्म भोजन के गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल पारगमन के साथ-साथ इसके पाचन को धीमा कर देता है। इस प्रकार, यह लम्बे समय तक पचने वाले भोजन से कम कैलोरी की उपज और बदले में, तृप्ति की अनुभूति प्रदान करता है। टीस्टार का निर्माण एक अत्याधुनिक निर्माण संयंत्र और आर एण्ड डी सुविधा में किया जाता है ।

विदेशी निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार में जमकर लगाया पैसा, जुलाई से अब तक निवेश किए 30,600 करोड़ रुपये

नई दिल्ली, एजेंसी। विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने जुलाई महीने में अभी 30,600 करोड़ रुपये का निवेश किया है। इस से साफ समझ में आता है कि एफपीआई का झुकाव अभी भी भारतीय शेयर बाजार की तरफ है. भारतीय शेयर बाजार को लेकर विदेशी निवेशकों का सकारात्मक रुख बना हुआ है। देश की आर्थिक वृद्धि और कॉर्पोरेट इनकम की वजह से इनका झुकाव भारतीय बाजार की तरफ है।

अगर इस तरह एफपीआई का निवेश जारी रहा तो जुलाई में एफपीआई द्वारा निवेश मई और जून में दर्ज आंकड़ों को पार कर जाएगा। आपको बता दें कि एफपीआई ने मई में 43,838 करोड़ रुपये और जून में 47,148 करोड़ रुपये का निवेश किया था।

डिपॉजिटरी के आंकड़ों से पता चलता है कि एफपीआई ने इस साल अब तक इक्विटी बाजार में निवेश 1.07 लाख करोड़ रुपये तक का निवेश किया है। बाजार विश्लेषकों का मानना है कि भारतीय शेयर बाजार में एफपीआई का निवेश काफी उज्ज्वल और व्यापक बना हुआ है। एफपीआई के आंकड़ों के मुताबिक विदेशी निवेशक मार्च से लगातार भारतीय शेयर खरीद रहे हैं। इस महीने 14 जुलाई तक 30,660 करोड़ रुपये का निवेश किया है। इस आंकड़े में स्टॉक एक्सचेंजों के निवेश के अलावा, थोक सौदों और प्राथमिक बाजार के माध्यम से भी निवेश शामिल है।

राइट रिसर्च के संस्थापक सोनम श्रीवास्तव ने कहा

एफपीआई द्वारा लगातार खरीदारी के लिए देश की मजबूत आर्थिक वृद्धि, मजबूत कॉर्पोरेट आय और अन्य बाजारों की तुलना में भारतीय शेयर के मूल्यांकन जैसे कई कारक शामिल हैं। इसके अलावा भारतीय विनिर्माण और मजबूत बैंकिंग सेक्टर भी मजबूत भूमिका निभाते दिख रहा है।

इन सेक्टरों में विदेशी निवेशक कर रहे निवेश

एफपीआई वित्तीय, ऑटोमोबाइल, पूंजीगत सामान, रियल्टी और एफएमसीजी में निवेश करना जारी रखते हैं। इन सेक्टर के शेयर के खरीदारी के बाद स्टॉक की कीमतों में बढ़ोतरी में योगदान दिया है। पिछले कारोबारी हफ्ते सेंसेक्स और निफ्टी रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गए हैं। समीक्षाधीन अवधि के दौरान विदेशी निवेशकों ने भारतीय शेयर बाजार के अलावा भारतीय ऋण बाजार में 1,076 करोड़ रुपये डाले।

सरकार ने बफर स्टॉक के लिए तीन लाख टन प्याज खरीदा

नई दिल्ली, एजेंसी। सरकार ने चालू वित्त वर्ष में 'बफर स्टॉक (भंडारण) के लिए 20 प्रतिशत अधिक यानी कुल तीन लाख टन प्याज खरीदा है। उपभोक्ता मामलों के सचिव रोहित सिंह ने रविवार को बताया कि सरकार प्याज को अधिक समय तक सुरक्षित रखने के लिए भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बार्क) के साथ काम कर रही है। वित्त वर्ष 2022-23 में सरकार ने बफर स्टॉक के लिए 2.51 लाख टन प्याज रखा था। बफर स्टॉक कम आपूर्ति वाले मौसम में कीमतों को काबू में रखने के लिए मूल्य स्थिरीकरण कोष (पीएसएफ) के तहत रखा जाता है। सिंह ने कहा, त्योहारी सीजन में किसी भी स्थिति से निपटने के लिए सरकार ने इस साल बफर स्टॉक में भारी बढ़ोतरी करते हुए तीन लाख टन प्याज खरीदा है। प्याज की कोई कमी नहीं है। बफर स्टॉक के लिए खरीदा गया प्याज हाल ही में समाप्त हुए रबी सत्र का है। फिलहाल, खरीफ के प्याज की बुवाई चल रही है और अक्टूबर में इसकी आवक शुरू हो जाती है। सचिव ने कहा, आमतौर पर, खुदरा बाजार में प्याज की कीमत 20 दिन के लिए या खरीफ फसल के बाजार में आने तक दबाव में रहती हैं लेकिन इस बार ऐसी कोई समस्या नहीं होगी। उपभोक्ता मामलों का मंत्रालय प्याज के संरक्षण के लिए परमाणु ऊर्जा विभाग और 'बार्क के साथ प्रौद्योगिकी का भी परीक्षण कर रहा है। रोहित सिंह ने कहा, प्रायोगिक तौर पर हम महाराष्ट्र के लासलगांव में कोबाल्ट-60 से गामा विकिरण के जरिए 150 टन प्याज संरक्षण का प्रयोग कर रहे हैं। इससे प्याज को अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सकेगा। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, 15 जुलाई को अखिल भारतीय स्तर पर प्याज का औसत खुदरा दाम 26.79 रुपए प्रति किलोग्राम था। इसका अधिकतम दाम 65 रुपए और न्यूनतम 10 रुपए प्रति किलोग्राम था।

कंपनियों के तिमाही नतीजों, वैश्विक रुख, एफआईआई की गतिविधियों से तय होगी शेयर बाजार की दिशा

नई दिल्ली, एजेंसी। शेयर बाजारों की दिशा इस सप्ताह कंपनियों के तिमाही नतीजों, वैश्विक रुख और विदेशी कोषों के प्रवाह से तय होगी। विश्लेषकों ने यह राय जताई है। इस समय स्थानीय शेयर बाजार अपने रिकॉर्ड स्तर पर हैं। विश्लेषकों का कहना है कि रुपए की चाल और ब्रेंट कच्चे तेल के दाम पर भी निवेशकों की निगाह रहेगी। स्वस्तिका इन्वेस्टमार्ट के वरिष्ठ तकनीकी विश्लेषक प्रवेश गौर ने कहा, ''वैश्विक बाजारों की दिशा, रुपए-से-डॉलर की विनिमय दर और कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव का बाजार के कुल रुख पर असर पड़ेगा। घरेलू घटनाक्रमों के अलावा ये कारक भी बाजार को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

उन्होंने कहा कि संस्थागत गतिविधियों का भी बाजार पर प्रभाव देखने को मिलेगा। इस सप्ताह सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, एचडीएफसी बैंक, इंडसइंड बैंक, हिंदुस्तान यूनिलीवर, इन्फोसिस, अशोक लेलैंड, डीएलएफ, जेएसडब्ल्यू स्टील, हिंदुस्तान जिंक और रिलायंस इंडस्ट्रीज के तिमाही नतीजे आने हैं। मास्टर कैपिटल सर्विसेज के वरिष्ठ उपाध्यक्ष अरविंदर सिंह नंदा ने कहा, ''वैश्विक और घरेलू संकेतक, कंपनियों के तिमाही नतीजे, विदेशी और घरेलू संस्थागत निवेशकों का रुख, मानसून की प्रगति तथा कच्चे तेल के दाम इस सप्ताह बाजार की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहेंगे।

बीते सप्ताह बीएसई का 30 शेयरों वाला सेंसेक्स 780.45 अंक या 1.19 प्रतिशत की बढ़त में रहा। शुक्रवार को सेंसेक्स अपने नए सर्वकालिक उच्चस्तर 66,060.90 पर बंद हुआ। दिन में कारोबार के दौरान यह 66,159.79 के अपने नए सर्वकालिक उच्चस्तर तक चला गया था। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी भी शुक्रवार को अपने नए सर्वकालिक उच्चस्तर 19,564.50 अंक पर बंद हुआ। दिन में कारोबार के दौरान यह 19,595.35 के अपने नए उच्चस्तर तक गया। वैश्विक मोर्चे पर चीन सोमवार को अप्रैल-जून तिमाही के आर्थिक वृद्धि के आंकड़े जारी करेगा। जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वी के विजयकुमार ने कहा, ''विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) भारतीय बाजार में लिवाल बने हुए हैं। एफपीआई वित्तीय, वाहन, पूंजीगत सामान, रियल्टी और एफएमसीजी शेयरों में लगातार निवेश कर रहे हैं। एफपीआई की खरीदारी ने सेंसेक्स और निफ्टी को रिकॉर्ड स्तर पर पहुंचने में मदद की है।

अगले हफ्ते खुल रहा नेटवेब टेक्नोलॉजीज का आईपीओ

नई दिल्ली, एजेंसी। आइडियाफोर्ड टेक्नोलॉजीज, साएंट डीएलएम और सेनको गोल्ड की शेयर मार्केट में शानदार लिस्टिंग के बाद निवेशकों में काफी उत्साह देखा जा रहा है। अगले हफ्ते दो कंपनियों नेटवेब टेक्नोलॉजीज और अशर्फी हॉस्पिटल के आईपीओ शेयर मार्केट में दस्तक दे रहे हैं। ये दोनों आईपीओ सोमवार को खुलेंगे और इनका कुल साइज करीब 658 करोड़ रुपए का है। नेटवेब टेक्नोलॉजीज के इश्यू का साइज 631 करोड़ रुपए है जबकि अशर्फी हॉस्पिटल का आईपीओ 26.94 करोड़ रुपए का है। ग्रे मार्केट में दोनों कंपनियों के शेयर प्रीमियम के साथ ट्रेड कर रहे हैं।

नेटवेब टेक्नोलॉजीज का आईपीओ 17 जुलाई को खुलेगा और इस पर 19 जुलाई तक बोली लगाई जा सकती है। हाई-एंड कम्प्यूटिंग सॉल्यूशन प्रोवाइड करने वाली इस कंपनी ने इसके लिए प्राइस बैंड 475-500 रुपए प्रति शेयर तय किया है। इसका अलॉटमेंट 24 जुलाई को होने की संभावना है। बीएसई और एनएसई पर इसकी लिस्टिंग 27 जुलाई को होने की संभावना है। मार्केट के जानकारों के मुताबिक ग्रो मार्केट में कंपनी का शेयर 338 रुपए के प्रीमियम के साथ ट्रेड कर रहा है जो इसके इश्यू प्राइस से 65 फीसदी अधिक है।

यानी ग्रे मार्केट इसके 838 रुपए पर लिस्ट होने की उम्मीद कर रहा है। इश्यू खुलने से पहले कंपनी ने एंकर निवेशकों से 189.01 करोड़ रुपए जुटाए हैं। इस इश्यू में 50 फीसदी क्यूआईबी के लिए, 15 फीसदी हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल्स के लिए और 35 फीसदी रिटेल इन्वेस्टर्स के लिए है। यह एसएमई इश्यू 17 जुलाई को खुलेगा और इस पर 10 जुलाई तक बोली लगाई जा सकती है। झारखंड के धनबाद में 250 बिस्तरों का हॉस्पिटल चलाने वाली इस कंपनी ने अपने इश्यू के लिए प्राइस बैंड 51-52 रुपए प्रति शेयर तय कर रखा है। इसके शेयरों का अलॉटमेंट 24 जुलाई को हो सकता है और इसकी लिस्टिंग 27 जुलाई को होने की संभावना है। ग्रे मार्केट में इसका शेयर 12 रुपए के प्रीमियम के साथ ट्रेड कर रहा है। यानी ग्रे मार्केट इसके 64 रुपए पर लिस्ट होने की उम्मीद कर रहा है जो इसके इश्यू प्राइस से 23 फीसदी अधिक है। इसके इश्यू का लॉट साइज 2,000 शेयरों का है और रिटेल इन्वेस्टर्स न्यूनतम 104,000 रुपए की बोली लगा सकते हैं।

राजस्व सचिव की सलाह, जल्द से जल्द दाखिल करें आईटीआर, 31 जुलाई की समय सीमा बढ़ाने के लिए सरकार नहीं तैयार

नई दिल्ली, एजेंसी। राजस्व सचिव संजय मल्होत्रा ने आयकर दाताओं से जल्द से जल्द अपना रिटर्न दाखिल करने की अपील की है। उन्होंने कहा कि वित्त मंत्रालय 31 जुलाई की समय सीमा को बढ़ाने पर विचार नहीं कर रहा है। पीटीआई को दिए एक इंटरव्यू में उन्होंने कहा, हमें आशा है कि फाइलिंग पिछले साल से ज्यादा होगी...हमें उम्मीद है कि यह पिछले साल से ज्यादा होनी चाहिए।

पिछले साल 31 जुलाई तक लगभग 5.83 करोड़ आयकर रिटर्न दाखिल किए गए थे, जो आकलन वर्ष 2022-23 के लिए रिटर्न दाखिल करने का आखिरी दिन था। मल्होत्रा ने कहा कि हम आयकर रिटर्न दाखिल करने वालों को धन्यवाद देना चाहते हैं क्योंकि आईटीआर दाखिल करने की गति पिछले साल की तुलना में बहुत तेज है और हम उन्हें सलाह देंगे कि वे आखिरी क्षण तक इंतजार न करें और समय सीमा में किसी भी विस्तार की उम्मीद न करें। इसलिए, मैं उन्हें जल्द से जल्द अपना टैक्स रिटर्न दाखिल करने की सलाह दूंगा क्योंकि 31 जुलाई की समय सीमा तेजी से नजदीक आ रही है। कर संग्रहण लक्ष्य के संबंध में मल्होत्रा ने कहा, यह लक्ष्य कमोबेश वृद्धि दर के अनुरूप है, जो 10.5 प्रतिशत है। उन्होंने कहा, जहां तक माल एवं सेवा कर (जीएसटी) की वृद्धि दर का सवाल है, तो यह अब तक 12 प्रतिशत है। हालांकि, दर में कटौती के कारण उत्पाद शुल्क के मोर्चे पर विकास दर 12 प्रतिशत से कम है। उन्होंने कहा, फिलहाल यह काफी नकारात्मक है। उम्मीद है कि आगे चलकर कर दरों में कमी का असर खत्म होने के बाद हम उत्पाद शुल्क के संग्रह में कुछ वृद्धि देखेंगे। कुल मिलाकर हमें लगता है कि अभी शुरुआती दिन हैं... हम लक्ष्य हासिल करने में सक्षम होंगे।

जम्मू-कश्मीर की लुप्त होती नमदा आर्ट को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित कर रहा है स्किल इंडिया प्रोजेक्ट

नमदा प्रोजेक्ट प्रधानमंत्री के स्किल इंडिया के विज़न के निर्णायक परिणाम का उदाहरण : चन्द्रशेखर

प्रोजेक्ट के तहत छह जिलों के लगभग 2,200 उम्मीदवारों को प्रशिक्षित किया गया

नई दिल्ली, एजेंसी। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (पीएमकेवीवाई) के स्किल इंडिया के पायलट प्रोजेक्ट के तहत कश्मीर के नमदा क्राफ्ट को सफलतापूर्वक पुनर्जीवित किया जा रहा है, जिसमें राज्य के छह जिलों के लगभग 2,200 उम्मीदवार प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

केंद्रीय कौशल विकास और उद्यमशीलता तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी राज्य मंत्री, श्री राजीव चंद्रशेखर ने आज यूनाइटेड किंगडम (यूके) में एक्सपोर्ट के लिए नमदा क्राफ्ट के उत्पादों के पहले बैच को हरी झंडी दिखाई। यह प्रोजेक्ट कौशल विकास के क्षेत्र में सार्वजनिक-निजी भागीदारी

(पीपीपी) मॉडल का एक बड़ा उदाहरण स्थापित करता है, क्योंकि इसे स्थानीय उद्योग भागीदारों के सहयोग से कार्यान्वित किया जा रहा है। इस पहल के तहत, लगभग 2,200 उम्मीदवारों को नमदा क्राफ्ट में प्रशिक्षित किया गया है, जो इस पारंपरिक क्राफ्ट को संरक्षित करने और स्थानीय बुनकरों और कारीगरों को सशक्त बनाने में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इस प्रोजेक्ट के द्वारा कश्मीर के छह जिलों, श्रीनगर, बारामूला, गांदरबल, बांदीपोरा, बडगाम और अनंतनाग में लोगों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षित किया है। माननीय प्रधानमंत्री रेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत के युवाओं की स्किलिंग, रीस्किलिंग और अपस्किलिंग के लिए सरकार की प्रतिबद्धता दृढ़ बनी हुई है। मीर हैंडीक्राफ्ट और श्रीनगर कारपेट ट्रेनिंग और मार्केट सेन्टर जैसे स्थानीय उद्योग भागीदारों के सहयोग से जम्मू-कश्मीर में इस पायलट प्रोजेक्ट का सफल कार्यान्वयन, कौशल विकास को बढ़ावा देने और आर्थिक विकास के लिए निवेश आकर्षित करने में सार्वजनिक-निजी भागीदारी की ताकत का जीवंत उदाहरण है।

इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए, कौशल विकास और उद्यमशीलता और इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय के राज्य मंत्री, श्री राजीव चन्द्रशेखर ने कहा, हमने 2021 में नमदा परियोजना शुरू की थी, और अब इसके परिणाम को देखना बेहद संतोषजनक है जो हमारे माननीय प्रधानमंत्री के नया भारत, नए अवसर, नई समृद्धि के विज़न के साथ पूरी तरह से मेल खाता है और जो इस बात पर जोर देता है कि कौशल का मतलब नए अवसर और नई समृद्धि पैदा करना है। कारीगरों और हैन्डीक्राफ्ट्स सेक्टर स्किल काउंसिल द्वारा किए गए इस बड़े प्रयास के एक छोटे से हिस्से के रूप में, मैं आप सभी को इस कला की जबरदस्त सफलता और समृद्धि की शुभकामना देता हूं, और इस मील के पत्थर को हासिल करना हमारे लिए गौरव का पल है। उन्होंने कहा कि नमदा प्रोजेक्ट पीएम श्री नरेंद्र मोदी के स्किल इंडिया के विज़न के बेहद संतोषजनक और निर्णायक परिणाम का उदाहरण है, जो लोगों को सशक्त बनाने और अवसर पैदा करने के बारे में है। श्री राजीव चंद्रशेखर ने 2021 में जम्मू और कश्मीर का दौरा किया था और अपनी यात्रा के बाद, उन्होंने क्षेत्र में लुप्त हो रहे पारंपरिक क्राफ्ट के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए एक प्रोजेक्ट आयोजित करने की आवश्यकता व्यक्त की क्योंकि हैंडीक्राफ्ट सेक्टर उनकी अर्थव्यवस्था में एक प्रमुख योगदानकर्ता और रोजगार जनरेटर है।

नमदा क्राफ्ट सामान्य बुनाई प्रक्रिया के बजाय फेल्टिंग तकनीक के माध्यम से भेड़ के ऊन से बना गलीचा है। कच्चे माल की कम उपलब्धता, कुशल जनशक्ति और मार्केटिंग तकनीकों की कमी के कारण, 1998 और 2008 के बीच इस क्राफ्ट के एक्सपोर्ट में लगभग 100 प्रतिशत की गिरावट आई है। इसलिए, पीएमकेवीवाई के तहत इस स्पेशल प्रोजेक्ट के माध्यम से, कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय (एमएसडीई) ने इस लुप्तप्राय क्राफ्ट को संरक्षित करने के लिए शार्टटर्म ट्रेनिंग पाठ्यक्रम तैयार किया है। प्रोजेक्ट को प्रशिक्षण के 3 साइकिल में 25 बैचों में लागू किया गया है। प्रत्येक ट्रेनिंग प्रोग्राम लगभग साढ़े तीन महीने का था, जिसके परिणामस्वरूप साइकिल लगभग 14-16 महीनों में पूरा हो गया।

वर्ल्ड कप से पहले भारत के लिए अहम खबर

जल्द वापसी करेंगे जसप्रीत बुमराह

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह अपनी पूरी फिटनेस हासिल करने के करीब हैं और अगले महीने आयरलैंड दौरे के दौरान उनकी बहुप्रतीक्षित वापसी की संभावना है। एक रिपोर्ट के अनुसार मार्च में पीठ की सर्जरी कराने वाले और बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में सफलतापूर्वक पुनर्वास के बाद पिछले महीने गेंदबाजी फिर से शुरू करने वाले बुमराह धीरे-धीरे अपना कार्यभार बढ़ा रहे हैं।

तेज गेंदबाज एनसीए प्रमुख वीवीएस लक्ष्मण की निगरानी में अपना रिहैब कार्यक्रम जारी रखे हुए हैं और वह नेट्स पर पूरे जोश के साथ गेंदबाजी कर रहे हैं, जहां वह 8-10 ओवर गेंदबाजी कर रहे हैं। जबकि चयनकर्ता और टीम प्रबंधन सितंबर में एशिया कप के लिए बुमराह को शामिल

करना चाह रहे थे, पिछले कुछ हफ्तों में उन्होंने जो प्रगति की है उसका मतलब है कि वह अगले महीने दूसरी पंक्ति की भारतीय टीम के साथ आयरलैंड की यात्रा कर सकते हैं। उनकी यात्रा पर फैसला आने वाले दिनों में लिया जाएगा।

रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि चोट की प्रकृति को देखते हुए बुमराह को अतिरिक्त देखभाल के साथ संभाला जा रहा है और वह पिछले सितंबर से प्रतिस्पर्धी क्रिकेट से चूक गए हैं। रिपोर्ट में कहा गया है, बुमराह को नेट्स पर कोई असुविधा नहीं दिख रही है, जहां वह दैनिक आधार पर प्रशिक्षण ले रहे हैं। ऐसे संकेत हैं कि बुमराह एनसीए में कुछ अभ्यास मैच भी खेल सकते हैं, जहां शिविर चल रहे हैं।

एशिया कप और आईसीसी एकदिवसीय विश्व कप जैसे प्रमुख आयोजनों से पहले भारतीय क्रिकेट टीम के लिए एक बड़ा प्रोत्साहन है, जिसकी मेजबानी अक्टूबर और नवंबर के महीनों में भारत द्वारा की जाएगी। इस बीच एक अन्य भारतीय तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा जिनकी लम्बर स्ट्रेस फैक्चर की सर्जरी हुई थी, अच्छी तरह से ठीक हो रहे हैं और उन्होंने गेंदबाजी फिर से शुरू कर दी है।

27 वर्षीय तेज गेंदबाज कृष्णा चोट के कारण आईपीएल 2023 से चूक गए थे और आखिरी बार उन्होंने अगस्त 2022 में जिम्बाब्वे में एक प्रतिस्पर्धी मैच में भाग लिया था। तब से वह स्ट्रेस फैक्चर से जूझ रहे हैं, जिसके बाद अंततः उन्हें सर्जरी करानी पड़ी। फिलहाल कृष्णा अगले महीने आयरलैंड दौरे के लिए निश्चित नहीं हैं, वह एशिया कप में भाग लेने की कतार में हैं जिससे भारत को और बढ़ावा मिल सकता है। दूसरी ओर बार-बार होने वाली पीठ की चोट के लिए सर्जरी करवाने वाले श्रेयस अय्यर ने भी अपना रिहैब पूरा करने के बाद बल्लेबाजी फिर से शुरू कर दी है। पिछले साल फरवरी-मार्च में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट के दौरान चोट लगने के बाद केकेआर के कप्तान आईपीएल 2023 से चूक गए थे। अगर वह फिट हो गए तो अय्यर आयरलैंड की यात्रा कर सकते हैं।

अमनजोत कौर के डेब्यू वनडे में चार विकेट, भारत ने बांग्लादेश को 152 रन पर समेटा

मीरपुर (एजेंसी)। भारत की युवा तेज गेंदबाज अमनजौत कौर ने वनडे में पदार्पण पर 31 रन देकर चार विकेट हासिल किये जिससे बांग्लादेश की टीम रविवार को यहां बारिश से प्रभावित शुरूआती एक दिवसीय अंतरराष्ट्रीय मैच में 43 ओवर में 152 रन पर सिमट गई। इस 23 साल की गेंदबाज ने सलामी बल्लेबाज मुर्शिदा खातून, फरगना हक, कप्तान निगार सुल्ताना और राबिया खान के विकेट झटके जिससे बांग्लादेश की टीम बारिश के कारण 44-44 ओवर के किये गये मैच में जूझती नजर आयी। निगार सुल्ताना घरेलू टीम के लिए सर्वाधिक रन बनाने वाली खिलाड़ी रहीं, उन्होंने शेरे बांग्ला राष्ट्रीय स्टेडियम में 39 रन की पारी खेलने के अलावा फरगना हक (27 रन) के साथ 49 रन की महत्वपूर्ण साझेदारी निभाई।

बांग्लादेश की अंतिम बल्लेबाज शोर्ना अख्तर 44वें ओवर में बल्लेबाजी के लिए नहीं उतरी क्योंकि वह चोटिल थीं। इससे पहले भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने टॉस जीतकर गेंदबाजी करने का फैसला किया। अमनजोत और बायें हाथ की स्पिनर अनुषा बारेड्डी ने वनडे पदार्पण किया जबकि शीर्ष क्रम की बल्लेबाज प्रिया पूनिया ने 2021 के बाद पहली बार भारतीय टीम में वापसी की। बांग्लादेश के लिए शोर्ना अख्तर ने अपना वनडे पदार्पण किया।

दलीप ट्रॉफी

दक्षिण क्षेत्र ने पश्चिम क्षेत्र को हराकर जीता खिताब

बेंगलुरु (एजेंसी)। दक्षिण क्षेत्र ने अपना दबदबा कायम रखते हुए रविवार को यहां पश्चिम क्षेत्र को 75 रन से करारी शिकस्त देकर दलीप ट्रॉफी क्रिकेट टूर्नामेंट का खिताब जीता। पश्चिम क्षेत्र ने 298 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए पांचवें दिन सुबह अपनी दूसरी पारी पांच विकेट पर 182 रन से आगे बढ़ाई और उसकी टीम 222 रन बनाकर आउट हो गई।

दक्षिण क्षेत्र की तरफ से बाएं हाथ के स्पिनर साईं किशोर और तेज गेंदबाज वासुकी कौशिक ने चार चार विकेट लिये। दक्षिण क्षेत्र में 14वीं बार दलीप ट्रॉफी का खिताब जीता है। इससे उसने पश्चिम क्षेत्र से पिछले साल मिली हार का बदला भी चुकता कर दिया। पिछले साल फाइनल में पश्चिम क्षेत्र ने दक्षिण क्षेत्र को 294 रन से हराया था। प्रियांक पंचाल ने सुबह अपनी पारी 92 रन से आगे बढ़ाई लेकिन वह इसमें केवल तीन रन जोड़कर पवेलियन लौट गए। उन्होंने तेज गेंदबाज विदवथ कावेरप्पा की गेंद पर विकेटकीपर रिकी भुई को कैच थमाया। इससे पश्चिम क्षेत्र की रही सही उम्मीद ही समाप्त हो गई।

कावेरप्पा को मैच का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। अतीत सेठ (नौ) और धर्मेंद्रसिंह जडेजा (15) ने आठवें विकेट के लिए 23 रन जोड़े लेकिन इस से वह हार का अंतर ही कम कर पाए। धर्मेंद्र जडेजा ने साईं किशोर की गेंद पर लंबा शॉट खेलने के प्रयास में वाशिंगटन सुंदर को कैच थमाया। इसके बाद उन्होंने सेठ को भी आउट किया।

लंबी कूद के एथलीट श्रीशंकर ने 2024 ओलंपिक के लिए क्वालीफाई किया, रजत पदक जीता

बैंकॉक (एजेंसी)। भारत के लंबी कूद के एथलीट मुरली श्रीशंकर ने शनिवार को एशियाई एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में अपने करियर के 8.37 मीटर के दूसरे सर्वश्रेष्ठ प्रयास से रजत पदक जीतकर 2024 पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई किया। श्रीशंकर (24 वर्ष) ने अपने अंतिम राउंड की 8.37 मीटर की कूद से ओलंपिक क्वालीफिकेशन हासिल किया। पेरिस ओलंपिक के लिए मानक 8.27 मीटर का है और क्वालीफिकेशन समय एक जुलाई से शुरु हुआ। चीनी ताइपे के यु टांग लिन ने चौथे राउंड में 8.40 मीटर की कूद से स्वर्ण पदक जीता जो इस सत्र में विश्व का तीसरा सर्वश्रेष्ठ प्रयास था। चार 20 किमी पैदल चाल के एथलीट आकाशदीप सिंह, विकास सिंह और परमजीत सिंह बिष्ट (पुरुष वर्ग) और प्रियंका गोस्वामी (महिला वर्ग) ने पहले ही पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर लिया है।

पेरिस ओलंपिक क्वालीफिकेशन समय 10,000 मीटर, संयुक्त स्पर्धा (डेकाथलॉन और हेप्टाथलॉन), पैदल चाल और रिले 31 दिसंबर 2022 से 30 जून 2024 तक है जबकि मैराथन रेस के लिए यह समयसीमा एक नवंबर 2022 से 30 अप्रैल 2024 तक है। अन्य स्पर्धाओं के लिए क्वालीफाइंग समय एक जुलाई 2023 से 30 जून 2024 तक है। श्रीशंकर अपने दूसरे ओलंपिक में हिस्सा लेंगे। वह तोक्यो ओलंपिक में क्वालीफिकेशन राउंड में बाहर हो गये थे। राजेश रमेश, ऐश्वर्या मिश्रा, अमोज जैकब और सुभा वेंकटेशन की भारतीय मिश्रित चार गुणा 400 मीटर रिले चौकड़ी ने तीन मिनट 14.70 सेकेंड के समय से स्वर्ण पदक जीता जबकि सर्वेश अनिल कुशारे और स्वप्ना बर्मन ने क्रमशः पुरुषों की ऊंची कूद और हेप्टाथलॉन में रजत पदक जीते। कुशारे के लिए यह पहला बड़ा अंतरराष्ट्रीय पदक है। उनकी पिछली सफलताओं में 2019 दक्षिण एशियाई खेलों का स्वर्ण पदक शामिल है। भारत ने अभी तक 14 पदक जीत लिए हैं जिसमें छह स्वर्ण, चार रजत और चार कांस्य पदक शामिल हैं। राष्ट्रमंडल खेल 2022 में कांस्य पदक जीतने वाले श्रीशंकर ने पिछले महीने राष्ट्रीय अंतरराज्यीय चैम्पियनशिप के क्वालीफिकेशन दौर के दौरान 8.41 मीटर की कूद से अगस्त में होने वाली बुडापेस्ट विश्व चैम्पियनशिप के लिए पहले ही क्वालीफाई कर लिया था। यह उनके करियर की सर्वश्रेष्ठ कूद भी रही। टीसी योहानन के 1975 चरण में पोडियम में शीर्ष पर रहने के बाद कोई भी भारतीय एशियाई चैम्पियनशिप की लंबी कूद स्पर्धा का स्वर्ण पदक नहीं जीत सका है। लंबी कूद में पदक जीतने वाले पिछले भारतीय के प्रेम कुमार थे जिन्होंने 2013 में रजत पदक जीता था। श्रीशंकर यहां स्वर्ण पदक जीतने के प्रबल दावेदार थे। वह 8.12 मीटर की तीसरी कूद से सबसे आगे चल रहे थे लेकिन चीनी ताइपे के प्रतिद्वंद्वी ने चौथे राउंड में 8.40 मीटर की कूद लगाकर बढ़त बनायी।

लक्ष्य सेन अमरीकी ओपन से बाहर, सेमीफाइनल में फेंग से हारे

काउंसिल ब्लफ्स (अमरीकी) (एजेंसी)। भारत के स्टार खिलाड़ी लक्ष्य सेन को अमरीकी ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष एकल के सेमीफाइनल में चीन के ऑल इंग्लैंड चैंपियन ली शी फेंग से संघर्षपूर्ण मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा। राष्ट्रमंडल खेलों के स्वर्ण पदक विजेता और यहां तीसरी वरीयता प्राप्त सेन दूसरी वरीयता प्राप्त फेंग के खिलाफ 17-21, 24-22, 17-21 से हार गए। शनिवार की रात को खेला गया बीडब्ल्यूएफ सुपर 300 टूर्नामेंट का यह मुकाबला एक घंटे 16 मिनट तक चला। विश्व में सातवें नंबर के खिलाड़ी फेंग और 12वीं रैंकिंग के सेन के बीच यह मुकाबला काफी करीबी रहा।

शुरुआती गेम में दोनों खिलाड़ी 17 अंकों तक बराबरी पर थे लेकिन के बाद चीन के खिलाड़ी ने आक्रामक रवैया दिखाया जबकि भारतीय खिलाड़ी ने कुछ गलतियां की। विश्व चैंपियनशिप के कांस्य पदक विजेता सेन ने हालांकि दूसरे गेम में अच्छी वापसी की। पहले गेम की तरह दूसरे गेम में भी कड़ा मुकाबला देखने को मिला। दोनों खिलाड़ियों ने लंबी रैलियां की और 22 अंक तक दोनों बराबरी पर थे। लक्ष्य ने इसके बाद लगातार दो अंक बनाकर मुकाबला बराबरी पर ला दिया।

तीसरा और निर्णायक गेम पहले गेम की पुनरावृति था। फेंग ने शुरू में बढ़त बनाई और इंटरवल तक वह 11-8 से आगे थे। सेन ने हालांकि हार नहीं मानी और 17 अंकों तक स्वयं को मुकाबले में बनाए रखा। चीन के खिलाड़ी ने इसके बाद दबाव बनाया तथा मैच अपनी झोली में डाला।

वोंद्रोसोवा विम्बलडन जीतने वाली पहली गैरवरीय खिलाड़ी

इस चैंपियनशिप में लगातार दूसरा फाइनल हारीं ट्यूनीशिया की जेबुर

लंदन (एजेंसी)। चेक गणराज्य की गैरवरीय खिलाड़ी मार्केटा वोंद्रोसोवा ने टेनिस का सबसे पुराना टूर्नामेंट विम्बलडन का खिताब जीत लिया है। वोंद्रोसोवा ने करियर का पहला ग्रैंडस्लैम टाइटल जीता है। उन्होंने शनिवार शाम लेडीज सिंगल्स कैटेगरी के फाइनल मुकाबले में ट्यूनीशिया की ओन्स जेबुर को 6-4, 6-4 से हराया।

मार्केटा विम्बलडन जीतने वाली चेक गणराज्य की तीसरी खिलाड़ी बनीं। उनसे पहले 1998 में जाना नोवोत्ना और पेत्रा क्वितोवा (2011 और 2014) यह खिताब जीत चुकी हैं।

146 साल पुराने इस टूर्नामेंट के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है, जब गैरवरीय खिलाड़ी ने यह खिताब जीता है। चैंपियनशिप के जेंटलमैन सिंगल्स का फाइनल मुकाबला रविवार को 7:30 बजे से 7 बार के चैंपियन नोवाक जोकोविच और दुनिया के नंबर-1 टेनिस खिलाड़ी कार्लोस अल्करेज के बीच खेला जाएगा।

वोंद्रोसोवा ने सीधे सेटों में जीता फाइनल

चेक गणराज्य की वोंद्रोसोवा ने लेडीज सिंगल्स कैटेगरी का फाइनल मुकाबला बड़ी आसानी से जीत लिया। उन्होंने ट्यूनीशियाई स्टार को एक घंटे 20 मिनट चले मुकाबले में सीधे सेटों में 6-4, 6-4 से हराया।चेक गणराज्य स्टार वोंद्रोसोवा ने फाइनल मुकाबला एक घंटे 20 मिनट में जीता।

पिछले साल ???रिबाकिना से हारी थीं जेबुर छठी सीड जेबुर लगातार दूसरी बार विम्बलडन फाइनल हारी हैं। उन्हें पिछले साल फाइनल मुकाबले में कजाकिस्तान की एलेना रिबाकिना ने हराया था। उन्हें तीसरी बार ग्रैंड स्लैम के फाइनल में हार का सामना करना पड़ा है। साल 2022 में सितंबर में अमेरिकी ओपन के फाइनल में उन्हें इगा स्वियातेक ने हराया था। ट्यूनीशियाई स्टार जेबुर ने लगातार दूसरी बार विम्बलडन का फाइनल मैच गंवाया है। पिछली बार उन्हें एलेना रिबाकिना ने हराया था।

कभी दूसरे राउंड से आगे नहीं बढ़ीं मार्केटा

मार्केटा कभी विम्बलडन में दूसरे राउंड से आगे नहीं बढ़ पाईं। और न ही आज से पहले वह कभी सेंटर कोर्ट पर खेली थीं। उन्होंने सेमीफाइनल में 9 माह पहले मां बनीं यूक्रेन की एलीना स्वितोलिना को सीधे सेटों में 6-3, 6-3 से हराते हुए फाइनल में प्रवेश किया था। मार्केटा वोंद्रोसोवा की वर्ल्ड रैंकिंग 42 है। यह उनका पहला ग्रैंड स्लैम है। इससे पहले वह साल 2019 के फ्रेंच ओपन की रनरअप रही हैं।

यूएसकी नवरातिलोवा ने जीते सबसे ज्यादा 9 टाइटल

अमेरिका की मार्टिना नवरातिलोवा विम्बलडन की सबसे सफल महिला खिलाड़ी हैं। उन्होंने इस चैंपियनशिप के 9 टाइटल जीते हैं। जर्मन स्टार स्टेफी ग्राफ 7 खिताब के साथ दूसरे नंबर पर हैं।

वर्ल्ड कप 2023

भारत-पाक मैच का असर, होटलों के बाद अब आसमान छू रहा हवाई किराया

नईदिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी 2023 पुरुष क्रिकेट विश्व कप 5 अक्तूबर से शुरू होने वाला है। इस टूर्नामेंट का बहुप्रतीक्षित मैच 15 अक्टूबर को अहमदाबाद में भारत बनाम पाकिस्तान के बीच होगा जिसमें अभी तीन महीने शेष हैं। लेकिन मेजबान शहर के लिए हवाई किराया आसमान छू रहा है। मैच से एक दिन पहले 14 अक्टूबर की फ्लाइट टिकटों की कीमत में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है, खासकर दिल्ली-अहमदाबाद और मुंबई-अहमदाबाद रूट के बीच। इससे पहले होटलों के किराए में भी भारी इजाफा देखा गया है।

वर्तमान में दिल्ली से अहमदाबाद और मुंबई से अहमदाबाद की एकतरफा सीधी उड़ान की कीमत 15,000 से 22,000 रुपए के बीच है। भारत बनाम पाकिस्तान मैच की लोकप्रियता पर प्रकाश डालते हुए इजमाइट्रिप के सीईओ और सह-संस्थापक निशांत पिट्टी के हवाले से कहा गया, जब से घोषणा आधिकारिक तौर पर की गई है, एक रात के लिए होटल टैरिफ में 5 गुना वृद्धि हुई है। लक्जरी होटल का किराया प्रति रात 50,000 रुपए तक का शुल्क ले रहे हैं। यह सिर्फ होटल ही नहीं बल्कि फ्लाइट टिकट भी बढ़ रहे हैं। भले ही लोग तीन महीने पहले बुकिंग करें, हवाई किराया सामान्य से छह गुना अधिक महंगा है।

आगे कहा गया, अगस्त और सितंबर में इकोनॉमी क्लास का दिल्ली-अहमदाबाद टिकट लगभग 3000 रुपए का होगा। लेकिन मैच से एक दिन पहले उसी टिकट की कीमत 20,000 रुपए होगी। हमारी वेबसाइट पर उड़ान टिकटों और खोजों की मांग अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई है। मैच देखने के इच्छुक अधिकांश लोगों ने पहले से ही टिकटों की बुकिंग शुरू कर दी है।

इक्सिगो के ग्रुप सीईओ और सह-संस्थापक आलोक बाजपेयी के हवाले से कहा गया, हमने सभी मेजबान शहरों की यात्रा के लिए सर्च क्वेरी में उल्लेखनीय वृद्धि देखी है। पिछले साल दिल्ली-अहमदाबाद के लिए एकतरफा औसत उड़ान किराया 4973 रुपए था। इस साल यह इंडिगो की उड़ानों के लिए 12,000 रुपए और विस्तारा की उड़ानों के लिए 22,000 रुपए तक है। यह 100 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि है। मांग और उपलब्धता के आधार पर मैच की तारीखों के करीब मूल्य किराया बढ़ सकता है।

शाहिद अफरीदी बोले

विश्व कप का बहिष्कार मत करो, भारत जाओ, खिताब जीतो

करांची (एजेंसी)। भारत आईसीसी वनडे विश्व कप 2023 की मेजबानी करने के लिए पूरी तरह से तैयार है जो अक्तूबर महीने शुरू होगा। किस टीम के खिलाफ कब मैच होने हैं, इसकी सारी जानकारी पहले ही सामने आ चुकी हैं। हालांकि, पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) ने जारी किए गए शेड्यूल पर नाराजगी व्यक्त करते हुए विश्व कप का बहिष्कार करने का फैसला किया, साथ ही कहा कि अगर मैच के लिए उनके मुताबिक मैदान नहीं चुने गए तो वह भारत नहीं आएंगे। हालांकि, यह गीदड़भभकी है। वहीं पाकिस्तान के पूर्व महान क्रिकेटर शाहिद अफरीदी ने पीसीबी को टर्नामेंट का बहिष्कार करने की बजाय यह सलाह दे दी है कि वह भारत जाएं, साथ ही खिताब जीतकर लाएं।

अफरीदी को लगता है कि पाकिस्तान को विश्व कप के लिए भारत जाना चाहिए। उन्होंने कहा, पाकिस्तान को विश्व कप का बहिष्कार नहीं करना चाहिए। उन्हें भारत जाकर विश्व कप जीतना चाहिए। मेरे लिए या किसी भी पेशेवर क्रिकेटर के लिए सबसे बड़ी चुनौती भारत में खेलने और वहां भारतीय दर्शकों के सामने अच्छा प्रदर्शन करने से दबाव से निपटना है।

पाकिस्तान का पूरा शेड्यूल-

इस पूर्व हरफनमौला ने आहे कहा, '' कुल मिलाकर हमने भारत में खेलने का लुत्फ उठाया है क्योंकि अगर आप भारत में अच्छा प्रदर्शन करते हैं तो आपको एक अलग स्तर की संतुष्टि और पहचान मिलती है। इस पूर्व कप्तान ने कहा कि पाकिस्तान को विश्व कप मैचों के लिए अच्छे स्थल मिले हैं और टीम के लिए उचित योजना बनाना जरूरी होगा। उन्होंने कहा, '' हमारी टीम काफी अच्छी है। टीम में कुछ शानदार प्रतिभाएं भी है। मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि हम भारत जाकर अहमदाबाद या किसी और स्थल पर अच्छा प्रदर्शन नहीं करें।

पहला मैच- पाकिस्तान बनाम क्वालिफायर 1, 6 अक्टूबर, हैदराबाद
दूसरा मैच- पाकिस्तान बनाम क्वालिफायर 2, 12 अक्टूबर, हैदराबाद
तीसरा मैच- भारत बनाम पाकिस्तान, 15 अक्टूबर, अहमदाबाद
चौथा मैच- ऑस्ट्रेलिया बनाम पाकिस्तान, 20 अक्टूबर, बेंगलुरु
पांचवां मैच- पाकिस्तान बनाम अफगानिस्तान, 23 अक्टूबर, चेन्नई
छठा मैच- पाकिस्तान बनाम साउथ अफ्रीका, 27 अक्टूबर- चेन्नई
सांतवा मैच- पाकिस्तान बनाम बांग्लादेश, 31 अक्टूबर- कोलकाता
आठवां मैच, न्यूजीलैंड बनाम पाकिस्तान, 4 नवंबर- बेंगलुरु
नौवां मैच- इंग्लैंड बनाम पाकिस्तान, 12 नवंबर- कोलकाता

जोकोविच - अल्कारेज में विम्बलडन फाइनल

अल्कारेज इस टूर्नामेंट का सिर्फ 12वां मैच खेलेंगे, जोकोविच इसे 7 बार जीत चुके

यूएस (एजेंसी)। विम्बलडन 2023 का फाइनल कार्लोस अल्कारेज और नोवाक जोकोविच के बीच खेला जाएगा। मुकाबला लंदन के ऑल इंग्लैंड लॉन टेनिस क्लब के सेंटर कोर्ट पर शाम 7:30 बजे होगा।अल्कारेज टूर्नामेंट में अपना 12वां ही मैच खेलेंगे जबकि जोकोविच 7 बार विम्बलडन जीत चुके हैं।

इसे 2 पीढ़ियों का मुकाबला भी कह सकते हैं, क्योंकि जब स्पेन में अल्कारेज का जन्म (2003) हुआ था तब जोकोविच ने अपने प्रोफेशनल करियर का आगाज कर दिया था। जब अल्कारेज ने पहली बार रैकेट थामा, तब जोकोविच पहला ग्रैंड स्लैम मैच खेल चुके थे। जोकोविच ने एक महीने पहले ही 23वां ग्रैंड स्लैम जीता है। ऐसे में यह देखना रोचक है कि आज के विम्बलडन फाइनल में नई पीढ़ी बाजी मारेगी या एक बार फिर अनुभव ही भारी पड़ेगा।

साल 2003 में स्पेन के मर्सिया शहल में जन्मे कार्लोस को छोटी उम्र में ही टेनिस से प्यार हो गया। उन्हें टेनिस विरासत में मिली। वे एक ऐसे परिवार में पले-बढ़े, जिसका टेनिस के प्रति रुझान था। कार्लोस के दादा ने एक

टेनिस क्लब शुरू किया था, जबकि उनके पिता कार्लोस अल्कारेज सीनियर एक सेमी-प्रो टेनिस प्लेयर रहे। उनके पिता स्पेनिश चैंपियनशिप के रनर-अप रहे और एक टेनिस अकादमी भी चलाते थे।

अल्कारेज ने 4 साल की उम्र में ही टेनिस खेलना शुरू कर दिया था। कार्लोस के पेरेंट्स ने उनकी क्षमता पहचानी और उन्हें अपने सपनों को जीने के लिए प्रोत्साहित किया।

राफेल नडाल एकेडमी में टेनिस की बारीकियां सीखीं

12 साल की उम्र में ही कार्लोस अपने परिवार को छोड़कर बार्सिलोना में टेनिस कोचिंग लेने चले गए। यहां उन्होंने अपनी इंस्पिरेशन दिग्गज राफेल नडाल की एकेडमी में टेनिस की बारीकियां सीखनी शुरू कर दीं।स्पेन के राफेल नडाल ही टेनिस लीजेंड हैं। अल्कारेज जब 3 साल के थे, तब नडाल पहला ग्रैंड स्लैम जीत चुके थे।

16 साल की उम्र में प्रोफेशनल टेनिस करियर शुरू किया

अल्कारेज जब 16 साल के थे, तब उन्होंने रियो ओपन खेलकर प्रोफेशनल टेनिस में कदम रखा। अल्कारेज सेकेंड राउंड में हार गए, लेकिन अगले ही साल 2021 में उन्होंने अपने पहले ग्रैंड स्लैम ऑस्ट्रेलियन ओपन में हिस्सा लिया। 17 साल के अल्कारेज तब ऑस्ट्रेलियन ओपन का हिस्सा बनने वाले सबसे युवा खिलाड़ी बने थे। मैड्रिड ओपन में अल्कारेज के 18वें जन्मदिन पर उनका सामना अपनी इंस्पिरेशन राफेल नडाल से हुआ। 2021 में ही उन्होंने अपना पहला एटीपी सिंगल्स टाइटल जीता। उन्होंने ओपन डी ओयरास में जीत दर्ज की। इसी साल उन्होंने फ्रेंच ओपन, विम्बलडन और यूएस ओपन में हिस्सा लिया। यूएस ओपन में तो उन्होंने वर्ल्ड नबंर-3 स्टेफानोस सितसिपास को हराया।

2022 में पहला ग्रैंड स्लैम जीता, वर्ल्ड नंबर-1 भी बने

2022 अल्कारेज का साल रहा। वह ऑस्ट्रेलिया ओपन में पहली बार 31वीं वरीयता ले कर उतरे। वह तीसरे ही राउंड में हार गए, लेकिन मियामी, मैड्रिड, रियो और कोंडे गोडो ओपन मिलाकर 4 एटीपी खिताब जीते। इसी साल यूएस ओपन फाइनल में उन्होंने वर्ल्ड नंबर-5 कास्पर रुड को 4-6, 6-2, 7-6, 6-3 के अंतर से हराया और अपना पहला ग्रैंड स्लैम जीता। साल का अंत उन्होंने वर्ल्ड नंबर-1 बनकर किया और 2023 में भी इसी फॉर्म को जारी रख अब विम्बलडन फाइनल में जगह बनाई।

संक्षिप्त समाचार

शहरी क्षेत्रों में 79 बायोगैस प्लांटों को मंजूरी, बजट में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने किया था एलान

नई दिल्ली, एजेंसी। शहरों में कचरा प्रबंधन के लिहाज से अहम मानी जाने वाली गोबरधन योजना के प्रति राज्यों ने भी उत्साह दिखाया है और केंद्र सरकार भी इसके जल्द क्रियान्वयन में जुट गई है। इस योजना के तहत बायो गैस प्लांट लगाने के 79 प्रस्तावों को मंजूरी दे दी गई है। पिछले दिनों राज्यों के साथ स्वच्छ भारत मिशन 2.0 की समीक्षा बैठक में इस योजना पर अब तक हुए काम का ब्योरा रखा गया है। इन प्लांट की कुल क्षमता 8449 टन कचरे का प्रतिदिन निस्तारण करने की होगी। आवासन और शहरी कार्य मंत्रालय के एक अधिकारी के अनुसार, अभी 13 राज्यों में बायो गैस प्लांट को मंजूरी दी गई है, लेकिन बैठक में कई अन्य राज्यों ने इस योजना से जुड़ने की इच्छा जताई है। उम्मीद है कि जल्द ही यह संख्या सौ तक पहुंच जाएगी। गौरतलब है कि इस साल के बजट भाषण में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने गोबरधन योजना के तहत पूरे देश में पांच सौ बायो गैस प्लांट लगाने का एलान किया था, जिनमें से 75 प्लांट शहरी क्षेत्रों में लगाए जाने हैं। शहरी क्षेत्रों में लगने वाले प्लांटों के लिए शहरी कार्य मंत्रालय और ग्रामीण क्षेत्रों में जलशक्ति तथा ग्रामीण विकास मंत्रालय को मंजूरी देनी है। ये प्लांट गीले कचरे को बायो गैस में परिवर्तित करते हैं। जानकारी के अनुसार, शहरी क्षेत्रों में सबसे अधिक प्लांट पंजाब के लिए मंजूर किए गए हैं, जबकि दूसरे नंबर पर उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु हैं। शहरों के लिए बड़ी समस्या बनकर उभरे कचरे के निस्तारण के लिहाज ये प्लांट खासे अहम माने जा रहे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इन प्लांटों की सफलता काफी कुछ इस पर निर्भर करेगी कि संबंधित शहर कचरे को अलग-अलग करने में कितना सफल हो पाते हैं। जब तक स्त्रोत के स्तर पर ही गीले और सूखे कचरे को अलग करने की व्यवस्था नहीं होती, तब तक इन परियोजनाओं का सौ प्रतिशत लाभ नहीं मिल सकेगा।

गठबंधन से पहले राजभर ने अमित शाह के सामने रखी शर्त, मांगीं तीन सीटें

नईदिल्ली, एजेंसी। करीब छह महीने से सुभासपा-भाजपा के गठबंधन को लेकर जो कयास लगाए जा रहे थे उन पर अब विराम लग चुका है। सुभासपा अध्यक्ष राजभर ने दिल्ली में अमित शाह से मुलाकात के बाद सारे सस्पेंस खत्म कर दिए हैं। ओम प्रकाश राजभर अपने बेटे अरुण राजभर गृहमंत्री अमित शाह से मुलाकात करने के लिए दिल्ली पहुंचे थे। एनडीए का हिस्सा बनने से पहले ओम प्रकाश राजभर ने गृहमंत्री के सामने तीन शर्तें भी रखीं। ये तीन शर्तें पूर्वांचल की तीन सीटों पर चुनाव लड़ने को लेकर थी। पार्टी सूत्रों के अनुसार तीन में से एक सीट पर बात भी बन गई है, जिस पर वह अपने छोटे बेटे अरुण राजभर को चुनाव लड़ाने की तैयारी में हैं। समाजवादी पार्टी से अलग होने के बाद से ही ओम प्रकाश राजभर दूसरे दलों के साथ गठबंधन को लेकर रास्ता खोज रहे थे। गठबंधन को लेकर राजभर ने पहले बसपा से संपर्क साधा लेकिन मायावती ने राजभर के लिए बसपा का दरवाजा ही नहीं खोला। इसके अलावा राजभर ने छोटे-छोटे दलों से भी गठबंधन किया। छह महीने पहले ही राजभर का मूड बदला और भाजपा के साथ जाने का मन बनाया। राजभर कई दिनों से भाजपा में जाने को लेकर हाथ-पांव मार रहे थे लेकिन उन्हें सही समय का इंतजार था। पिछले दिनों भाजपा के वरिष्ठ नेताओं से हुई मुलाकात के बाद राजभर ने गठबंधन को लेकर तारीख तय कर दी थी, हालांकि उन्होंने ये नहीं बताया था कि गठबंधन किससे होगा। शनिवार को राजभर बेटे अरुण के साथ जब दिल्ली में अमित शाह से मिलने पहुंचे तो गठबंधन की बात भी साफ हो गई। राजभर ने शाह से करीब एक घंटे तक बात की। राजभर ने शाह से पूर्वांचल की गाजीपुर, आजमगढ़ और चंदौली सीट मांगी। राजभर और अमित शाह के बीच गाजीपुर लोकसभा सीट को लेकर बात भी बन गई है। राजभर इस सीट से छोटे बेटे अरुण राजभर को लोकसभा का चुनाव लड़ाएंगे। इसको लेकर उन्होंने पूरी तैयारी कर ली है। वहीं दूसरी ओर एनडीए में शामिल हुए राजभर को एक बार फिर योगी सरकार मंत्री पद दे सकती है।

राजस्थान में रिश्वत लेने के आरोप में कांग्रेस नेता गिरफ्तार, शेखावत ने राहुल के साथ वाली तस्वीर जारी की

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान में शनिवार को कांग्रेस नेता गोपाल केसावत समेत चार लोगों को 18.5 लाख रुपये की रिश्वत लेते हुए गिरफ्तार किया गया। एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। रिश्वत की रकम राजस्थान लोक सेवा आयोग (आरपीएससी) भर्ती परीक्षा में नौकरी दिलाने के लिए मांगी गई थी। इस संबंध में सीकर एसीबी को पीड़ित की ओर से शिकायत मिली थी। मामले की जांच कर रही एसीबी ने खुलासा किया कि आरपीएससी में कार्यकारी अधिकारी की भर्ती के लिए रिश्वत की मांग की गई थी। कुल 40 लाख रुपये की मांग की गई, बाद में सौदा 25 लाख रुपये में तय हुआ।शुक्रवार को सीकर में दलाल अनिल कुमार और ब्रह्मप्रकाश को 18.50 लाख रुपए की रिश्वत लेते गिरफ्तार किया गया था।इसमें से 7.5 लाख रुपये शिकायतकर्ता को वापस कर दिए गए और उसे यह राशि जयपुर में राजस्थान प्रदेश विमुक्त, घुमंतू और अर्ध-घुमंतू कल्याण बोर्ड के पूर्व अध्यक्ष गोपाल केसावत को देने के लिए कहा गया।उधर, दलाल अनिल कुमार और ब्रह्मप्रकाश शुक्रवार रात दलाल रवींद्र शर्मा पुत्र बलराम को शेष 11 लाख रुपये में से 7.50 लाख रुपये की रिश्वत देने सीकर पहुंचे। एसीबी ने रवींद्र को भी गिरफ्तार कर लिया।इसके बाद परिवादी रिश्वत के 7.50 लाख रुपये लेकर गोपाल केसावत को देने गया, जिसे भी रिश्वत लेते हुए शनिवार को एसीबी ने गिरफ्तार कर लिया।आरोपियों से पूछताछ में आरपीएससी के किसी सदस्य व अधिकारी कर्मचारी की मिलीभगत की जानकारी सामने नहीं आई है।एसीबी अधिकारियों ने बताया कि चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर उनसे रिश्वत की रकम बरामद कर ली गई है। इन लोगों ने आरपीएससी में नौकरी दिलाने का आश्वासन देकर पैसे मांगे।इसके बाद परिवादी ने एसीबी से शिकायत की। इस पर एसीबी की सीकर और जयपुर टीम ने ट्रैप कार्रवाई को अंजाम दिया। एसीबी की टीम फिलहाल केसावत के आवास और अन्य ठिकानों पर तलाशी ले रही है।इस बीच, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रमुख गोविंद डोटासरा ने कहा, अपराधी की कोई जाति या पार्टी नहीं होती, केशवत को पहले ही पार्टी से निष्कासित कर दिया गया था।इस बीच केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने आरोपी की कांग्रेस नेता राहुल गांधी से हाथ मिलाते हुए एक तस्वीर शेयर की है।उन्होंने अपने ट्वीट में कहा, तस्वीर में राहुल गांधी गोपाल केसावत से हाथ मिला रहे हैं, जिन्हें आरएएस भर्ती परीक्षा पास करने के लिए 18.5 लाख रुपये की रिश्वत लेने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। गोपाल राज्य विमुक्त, घुमंतू और अर्धघुमंतू कल्याण बोर्ड के के पूर्व अध्यक्ष हैं, जिन्हें राज्यमंत्री का दर्जा प्राप्त था।उन्होंने कहा, कांग्रेस नीचे से ऊपर तक एक भ्रष्ट पार्टी है। जब तक आलाकमान को काला धन मिलता रहेगा, तब तक राज्य कांग्रेस में अशोक गहलोत का दबदबा कायम रहेगा।

केंद्र के अध्यादेश पर आप का साथ दे सकती है कांग्रेस, नए बयान से मिले संकेत

नईदिल्ली, एजेंसी। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली को लेकर आए केंद्र सरकार के अध्यादेश के मामले में कांग्रेस आम आदमी पार्टी का साथ दे सकती है। इस मुद्दे पर भले ही कांग्रेस की दिल्ली यूनिट केजरीवाल सरकार पर हमला बोल रही हो, लेकिन सूत्रों से जानकारी मिली है कि संसद में कांग्रेस इस मुद्दे पर आप का साथ देगी। हालांकि, अभी अंतिम फैसला नहीं लिया गया है और आने वाले संसद के मॉनसून सत्र पर ही इस पर कोई भी निर्णय लिया जाएगा।

कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने एक ऐसा बयान दिया है, जिससे अटकलें लगाई जा रही हैं कि कांग्रेस ने अध्यादेश पर दिल्ली सरकार का साथ देने का मन बनाया है। शनिवार को एक संवाददाता सम्मेलन में जयराम रमेश ने कहा, कांग्रेस पार्टी ने हमेशा राज्यों में निर्वाचित सरकारों के संघीय ढांचे पर किसी भी हमले का विरोध किया है और वह ऐसा करना जारी रखेगी। संसद के अंदर भी और संसद के बाहर भी। कांग्रेस नेता के इस बयान में साफ तौर पर यह नहीं कहा गया कि क्या कांग्रेस दिल्ली में आम आदमी पार्टी का केंद्र के अध्यादेश पर समर्थन करेगी, लेकिन इससे कयास लगाए जाने लगे हैं।

बता दें कि आम आदमी पार्टी ने केंद्र सरकार द्वारा कुछ समय पहले लाए गए अध्यादेश का पुरजोर विरोध किया था। दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कई राज्यों के नेताओं से भी मुलाकात करते हुए उन्हें अध्यादेश का विरोध करने के लिए तैयार किया था। यहां तक कि 23 जून को पटना में हुई विपक्षी दलों की बैठक में भी इसका जिक्र किया गया था। शुरुआत से ही कांग्रेस का कहना रहा है कि चूंकि यह संसद का मामला है, इसलिए संसद सत्र आने पर ही इस पर कोई फैसला लिया जाएगा। वहीं, आम आदमी पार्टी का यह भी कहना है कि अगर कांग्रेस ने अध्यादेश पर अपना रुख साफ नहीं किया तो वह बेंगलुरु में आयोजित होने वाली विपक्षी दलों की अगली बैठक का हिस्सा नहीं बनेगी।

कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी की अगुवाई में हुई कांग्रेस के संसदीय रणनीतिक समूह की बैठक के बाद मुख्य विपक्षी दल के महासचिव जयराम रमेश ने बयान दिया। उन्होंने यह भी कहा कि कांग्रेस इस सत्र में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मणिपुर के मामले पर स्पष्टीकरण की मांग करेगी। सोनिया गांधी के आवास 10-जनपथ पर शनिवार शाम को हुई इस बैठक में पार्टी अध्यक्ष और राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे तथा पार्टी के कई अन्य वरिष्ठ नेता शामिल हुए। जयराम रमेश ने संवाददाताओं से कहा, करीब डेढ़ घंटे की इस बैठक में मॉनसून सत्र में सरकार की ओर से पेश होने वाले विधेयकों और हमारी ओर से उठाए जाने वाले मुद्दों पर चर्चा हुई है। उन्होंने कहा, संघीय ढांचे पर जो आक्रमण हो रहा है, मोदी सरकार यह आक्रमण कुछ जगहों पर खुद कर रही है और कुछ जगहों पर उनके द्वारा नियुक्त राज्यपाल आक्रमण कर रहे हैं। चुनी हुई सरकारों पर आक्रमण हो रहा है। कांग्रेस पार्टी हमेशा इसके खिलाफ लड़ती रही है और लड़ती रहेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि संघीय ढांचे पर मोदी सरकार द्वारा रोजाना आक्रमण किए जा रहे हैं और संवैधानिक संस्थाओं को खत्म किया जा रहा है। रमेश का कहना था।

डिजिटल माध्यम से होगा सीमा पार भुगतान, जी20 समूह के वित्त मंत्रियों की बैठक में सहमति बनाने पर फोकस करेगा भारत

नई दिल्ली, एजेंसी। जी-20 समूह के वित्त मंत्रियों की बैठक में डिजिटल माध्यम से सीमा पार भुगतान को लेकर सहमति बनाने का प्रयास किया जाएगा। अगर ऐसा होता है तो भारत की सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी (सीबीडीसी) के साथ यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआइ) को बड़ा प्रोत्साहन मिल सकता है।

आगामी 17-18 को गांधीनगर में जी-20 समूह देशों के वित्त मंत्रियों व केंद्रीय बैंकों के गवर्नरों की बैठक होने जा रही है। इससे पूर्व बंगलुरु में वित्त मंत्रियों की बैठक में जी-20 समूह के देशों ने भारत की डिजिटल भुगतान प्रणाली में काफी दिलचस्पी दिखाई थी। वित्त मंत्रालय के अधिकारियों के मुताबिक, डिजिटल भुगतान ब्लॉकचेन और अन्य डिजिटल उत्पाद की मदद से किए जाते हैं। दोनों ही प्रणाली पर बैठक में चर्चा होगी और सहमति बनाने का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि कई देशों के केंद्रीय बैंकों ने अपनी डिजिटल करेंसी जारी की है। आरबीआइ भी थोक व रिटेल दोनों के लिए अपनी डिजिटल करेंसी जारी कर चुका है। यूपीआइ जैसी भुगतान प्रणाली को भी वैश्विक स्तर पर चलन में लाने पर चर्चा होगी। ब्राजील ने भी इस प्रकार की प्रणाली विकसित की है। अधिकारी के मुताबिक, परंपरागत तरीके से सीमा पार भुगतान की लागत अधिक होती है और इसके भुगतान में जटिलताएं भी हैं। इस भुगतान की गति धीमी होती है और इसमें पर्याप्त पारदर्शिता भी नहीं होती है। यही वजह है कि अब दो देश आपस में व्यापार करते समय में अपनी-अपनी करेंसी में भुगतान को प्राथमिकता दे रहे हैं। दो देशों के बीच व्यापार में किसी भी करेंसी को डॉलर में बदलने का एक झंझट होता है और भुगतान इतना सुगम नहीं होता है। 18 देशों के साथ रुपये में व्यापार करने की तैयारी के पीछे यह भी एक अहम वजह है। जानकारों का कहना है कि पश्चिमी देशों में यूपीआइ का चलन बढ़ने से यह मास्टरकार्ड व वीजा को चुनौती दे सकता है। दो दिन पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी फ्रांस में यूपीआइ शुरू होने की घोषणा कर चुके हैं। स्वदेशी जागरण मंच के सह संयोजक अश्विनी महाजन ने बताया कि रुपये को वैश्विक करेंसी बनाने की तो अभी शुरुआत हुई है।

दिल्ली में निर्माणाधीन गोल्फ कोर्स के गड्ढे में तीन लड़कों की डूबकर मौत, पुलिस बोली- बाढ़ से नहीं मरे

नई दिल्ली, एजेंसी। दक्षिण पश्चिम दिल्ली के द्वारका सेक्टर-23 में निर्माणाधीन गोल्फ कोर्स के गड्ढे में तीन लड़के डूब गए। पुलिस उपायुक्त (द्वारका) एम हर्षवर्धन ने बताया कि पुलिस को रात करीब आठ बजे सूचना मिली कि तीन लड़के गड्ढे में घुसे हैं लेकिन बाहर नहीं आये। यह पाया गया कि चार लड़कों का एक समूह दीवार कूदकर निर्माणाधीन गोल्फ कोर्स के परिसर में घुसा था। ये लड़के सेक्टर-19 में फुटबॉल खेलकर घर लौट रहे थे। तीन लड़के अपना बैग घास पर छोड़कर पानी के गड्ढे में चले गए और डूब गए। तीनों के शव बरामद कर लिए गए हैं। हादसे की जांच जारी है।

पुलिस अधिकारी ने बताया कि यह बारिश या बाढ़ से जुड़ी घटना नहीं है। निर्माणाधीन गोल्फ कोर्स में पानी के गड्ढे सामान्य हैं। फिर भी पुलिस पूछताछ कर रही है। मृतकों की पहचान कुतुब विहार निवासी अरुण, अनुज और अभिषेक के रूप में की गई है। तीनों की उम्र लगभग 20 से 25 साल थी। चौथे लड़के ने इस घटना की सूचना अधिकारियों को दी। वह पानी के गड्ढे में नहीं घुसा था।

इस बीच मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि उफनती यमुना के जलस्तर में गिरावट आई है। कई इलाकों से बाढ़ का पानी कम होने पर अधिकारियों ने सड़कें खोल दी हैं।राष्ट्रीय राजधानी के बाढ़ग्रस्त इलाकों में स्थिति सुधर रही है। बीते दो दिन में हरियाणा के यमुनानगर में हथिनीकुंड बैराज से छोड़े जा रहे पानी की मात्रा में कमी आई है। हालांकि दिल्ली से अभी बाढ़ का खतरा टला नहीं है। यमुना का जलस्तर अब भी खतरे के निशान 205.33 मीटर से ऊपर है। वहीं मौसम विभाग ने अगले दो दिनों के दौरान दिल्ली में मध्यम स्तर की बारिश का अलर्ट जारी किया है।

पबजी के बाद ऑनलाइन लूडो पर मोहब्बत, दोनों ने कर ली शादी, प्रेमिका को लेकर घर पहुंचा तो परिवार वालों ने भगाया

काकोरी, एजेंसी। पाकिस्तान की सीमा पबजी खेलते हुए सचिन से प्रेम कर बैठी। बंदिशों को तोड़ कर बच्चों को साथ लेकर वह सचिन से मिलने भारत आ पहुंची। ऐसा ही एक मामला काकोरी थानाक्षेत्र में भी सामने आया है। जहां ऑनलाइन लूडो खेलते हुए रिया तिवारी और रविराज के बीच दोस्ती हुई। परिवार की मर्जी के खिलाफ दोनों ने अंतरजातीय विवाह कर लिया। पत्नी को लेकर रविराज घर पहुंचा। बेटे-बहू को आशीर्वाद देने के बजाय परिवार वालों ने धक्का देकर उन्हें घर से निकाल दिया। सास-ससुर के इस रवैये से नाराज रिया ने काकोरी कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराया। बहू के थाने जाने की जानकारी मिलने पर बेटे रविराज की मां ने भी एफआईआर दर्ज कराई है।

चार महीने पहले रचाई शादी, रिश्तेदारों के घर ली पनाह: कठिंगरा निवासी किसान रामस्वरूप का बेटा रविराज देर रात तक मोबाइल पर ऑनलाइन लूडो खेलता था। करीब पांच माह पूर्व लूडो खेलते हुए बालागंज निवासी रिया तिवारी से सम्पर्क हुआ। दोनों करीब एक महीने तक चैटिंग करते रहे। फिर शादी करने का मन बना लिया। परिवार की मर्जी के खिलाफ रविराज और रिया ने शादी कर ली। रविराज के मुताबिक, वह पत्नी को लेकर घर गया तो माता-पिता ने रखने से मना कर दिया। इसके बाद नव दम्पति चार माह तक रिश्तेदारों के घर पनाह लिए रहे। शुक्रवार को वह लोग दोबारा परिवार वालों को मनाने के लिए घर पहुंचे। लेकिन रामस्वरूप और उसकी पत्नी कंचन ने बेटे-बहू को घर में प्रवेश करने की इजाजत नहीं दी। इसे लेकर दोनों पक्षों में मारपीट हुई।

हमारे रोकने पर नहीं माना...: मां कंचन के मुताबिक रविराज को उन्होंने समझाने का प्रयास किया था, लेकिन बेटे ने एक नहीं सुनी। माता-पिता को नाराज कर अपनी मर्जी से शादी कर ली। अब घर में जबरन घुसना चाहते हैं। यह बात हमें मंजूर नहीं है। कंचन का आरोप है कि रविराज को उसका चाचा नेकराम भड़का रहा है। जिसके बहकावे में आकर ही रविराज ने घर पहुंच कर झगड़ा किया है। एडिशनल इंस्पेक्टर राजीव सिंह ने बताया, बहू ने सास-ससुर के खिलाफ मारपीट और धमकी देने की एफआईआर दर्ज कराई है। वहीं, किसान की पत्नी कंचन ने भी बेटे रविराज, बहू रिया के साथ देवर नेकराम के खिलाफ एफआईआर लिखवाई है। जिसकी पुलिस जांच कर रही है।

ट्रंप को चुनाव के लिए महिला सहयोगी की तलाश, उपराष्ट्रपति पद पर कमला को मिलेगी चुनौती?

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप एक और कार्यकाल के लिए 2024 में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव की दौड़ में शामिल हैं। इस बीच एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि अगर उन्हें रिपब्लिकन पार्टी से 2024 के चुनाव के लिए नामांकन भरने का मौका मिलता है तो वह उपराष्ट्रपति पद के लिए एक महिला उम्मीदवार को अपने सहयोगी के रूप में शामिल करना चाहेंगे। गौरतलब है कि डोनाल्ड ट्रंप का अपने पूर्व उपराष्ट्रपति माइक पेंस के साथ मतभेद रहा है, दोनों एक-दूसरे पर कई बार मौखिक हमले कर चुके हैं।

ये तीन नाम हैं चर्चा में: मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, डोनाल्ड ट्रंप का प्रचार अभियान चुनाव से पहले ही तेजी पकड़ रहा है। वहीं चर्चा है कि पूर्व राष्ट्रपति के साथ तीन महिलाएं संभावित रूप से उपराष्ट्रपति पद के लिए टिकट की दावेदार हो सकती हैं। इनमें मर्जोरी टेलर ग्रीन , एलिस स्टेफनिकऔर क्रिस्टी नोएम के नाम शामिल हैं। टेलर ग्रीन और स्टेफनिक ट्रंप के मुखर समर्थक रही हैं और उन्होंने ट्रंप के खिलाफ लाए गए दोनों महाभियोगों को हटाने का प्रयास करते हुए सदन में कदम उठाए थे।

इस बीच, साउथ डकोटा की गवर्नर क्रिस्टी नोएम को 2019 से गवर्नर के रूप में उनके प्रशासनिक अनुभव के कारण आम मतदाताओं के लिए सबसे आकर्षक माना जा रहा है। उन्होंने पिछले कुछ वर्षों में कई दक्षिणपंथी उपायों के पीछे अपनी जोर आजमाइश की है। इन सबके बीच बड़ा सवाल यह है कि ट्रंप को आखिर महिला सहयोगी की जरूरत क्यों पड़ी? ट्रंप का लक्ष्य उपराष्ट्रपति पद के लिए एक महिला सहयोगी चुनकर अनिर्णीत युवा महिला मतदाताओं के बीच अपनी वोट बैंक में सुधार करना है। 2020 में महिला मतदाताओं के बीच उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा था, उस दौरान महिलाओं का जितना समर्थन जो बाइडन ने जुटाया था, ट्रंप उससे काफी पीछे थे।

बताया जा रहा है कि इस बार महिला मतदाताओं के बीच ट्रंप का समर्थन पिछले साल के 39 प्रतिशत के मुकाबले 44 प्रतिशत है और वह बाइडन से आगे बने हुए हैं। रिपोर्ट में दावा किया गया है कि उपराष्ट्रपति पद के लिए एक महिला सहयोगी युवा महिलाओं के बीच उनकी लोकप्रियता को और बढ़ा सकती है। रिपब्लिकन पार्टी के लिए जनमत सर्वेक्षण करने वाले फ्रैंक लंट्ज ने मीडिया को बताया कि यह निर्णय महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि वैसे तो उपराष्ट्रपति आमतौर पर ज्यादा मायने नहीं रखता लेकिन जब राष्ट्रपति 80 वर्ष का होने वाला हो, तो यह विकल्प अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

भारत-चीन शक करने की बजाय एक-दूसरे का समर्थन करें

आसियान की बैठक में ड्रैगन बोला- दोनों देशों को रिश्ते बेहतर करने की जरूरत

जकार्ता, एजेंसी। चीनी डिप्लोमैट वांग यी ने भारत और चीन के बीच रिश्ते बेहतर करने की बात पर जोर दिया है। शुक्रवार को इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता में आसियान देशों की मीटिंग हुई। इस दौरान वांग यी ने भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर से भी मुलाकात की। वांग यी ने कहा कि दोनों देशों को एक-दूसरे पर शक करने की बजाय समर्थन करना चाहिए। जयशंकर के साथ हुई मीटिंग के दौरान दोनों देशों के बीच जल्द मिलिट्री कमांडर लेवल की बातचीत करने का फैसला किया गया है। एस जयशंकर और वांग यी की मुलाकात में ऋष्ट का मुद्दा भी उठा। एस जयशंकर ने जहां भारत-चीन बॉर्डर से जुड़े अनसुलझे विवादों का मुद्दा उठाया। वांग यी ने इस पर कहा कि सीमा विवाद को सुलझाने के लिए ऐसे समाधान की जरूरत है जिसे दोनों देश मंजूर कर सकें। उन्होंने यह भी कहा कि चंद मुद्दों से भारत-चीन के रिश्ते को परिभाषित नहीं किया जा सकता है। एस जयशंकर और वांग यी ने इंडो-पैसिफिक के मुद्दे पर भी चर्चा की। आसियान देशों की बैठक में एस जयशंकर ने अमेरिका के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिकंन से भी मुलाकात की। दोनों ने रूस-यूक्रेन जंग के बारे में विस्तार से चर्चा की। 2019 में जब चीन के राष्टपति भारत आए तो दोनों देशों के बीच संबंध बेहतर होने की उम्मीद जगी थी। फिर गलवान झड़प ने सब बदल दिया। 15 जून 2020 को गलवान घाटी में चीनी सेना के साथ हुई झड़प में 20 भारतीय सैनिक शहीद हो गए थे। चीन के 38 सैनिक मारे गए थे। हालांकि, चीन की पीपुल्स लिब्रेशन आर्मी ने 4 सैनिक मारे जाने की बात ही कबूली थी। यह टकराव करीब 3 घंटे तक चला था। वहीं, 2022 में दोनों देशों की सेनाओं में फिर टकराव हुआ। अरुणाचल के तवांग में चीनी सैनिकों ने भारतीय पोस्ट को हटाने की कोशिश की। भारत के 6 जवान घायल हुए। चीन को हमसे ज्यादा नुकसान हुआ।

भले ही वे मुझे अयोग्य घोषित कर दें और जेल में डाल दें, इसके बाद भी हमारी पार्टी ही जीतेगी- इमरान खान

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के प्रमुख इमरान खान ने भविष्य की अपनी पॉलिटिकल प्लानिंग के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अगर उनकी पार्टी पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है, तो वह आगामी आम चुनाव लड़ने के लिए नए राजनीतिक दल का गठन करेंगे। पाकिस्तानी अंग्रेजी अखबार डॉन को दिए इंटरव्यू में खान ने ये बातें कहीं। मालूम हो कि 9 मई को हुए हिंसक राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शन के बाद प्रदर्शनकारियों और पीटीआई कार्यकर्ताओं पर काफी सख्ती बरती जा रही है। साथ ही इमरान की पार्टी पर प्रतिबंध लगाने की भी मांग उठी है। पाकिस्तान के गृह मंत्री राणा सनाउल्लाह ने कहा था कि पीटीआई पर प्रतिबंध लगाना ही एकमात्र समाधान बचा है। रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने भी कहा कि इसे लेकर विचार किया जा रहा है। पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) के अध्यक्ष और विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो जरदारी भी इसी तरह की बात कह चुके हैं। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी पीटीआई पर प्रतिबंध लगाने के किसी भी कदम का विरोध नहीं करेगी। इसे लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में इमरान ने कहा, अगर वे पार्टी को बैन करते हैं तो हम एक नए नाम के साथ नई पार्टी बनाएंगे और फिर भी चुनाव जीतेंगे।

इमरान बोले- भले मुझे जेल में डाल दें...: इमरान खान ने कहा, भले ही वे मुझे अयोग्य घोषित कर दें और जेल में डाल दें, इसके बाद भी हमारी पार्टी ही जीतेगी। पीटीआई प्रमुख ने इस बात पर जोर दिया कि उनके समर्थकों का आधार बरकरार है। उन्होंने दावा किया कि राष्ट्रीय राजनीति मौलिक रूप से बदल गई है। अपनी पार्टी पर जारी कार्रवाई पर इमरान ने कहा कि सरकार अभी भी डरा-धमकाकर इसे तोड़ने का प्रयास कर रही है। इमरान ने कहा कि जनता का समर्थन अभी भी हमारे साथ है और आने वाले आम चुनाव में हम निश्चित तौर पर जीत हासिल करेंगे। दूसरी ओर, पाकिस्तान के निर्वाचन आयोग ने अवमानना के मामले में इमरान खान के खिलाफ गैर जमानती गिरफ्तारी वारंट जारी किया है। ईसीपी ने समान अपराध के लिए पूर्व सूचना और प्रसारण मंत्री फवाद चौधरी के खिलाफ भी गैर-जमानती गिरफ्तारी वारंट जारी किया। ईसीपी ने इमरान और पार्टी के पूर्व नेताओं चौधरी व असद उमर के खिलाफ अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल करने के लिए अवमानना कार्यवाही शुरू की थी। खान और चौधरी के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट आदेश ईसीपी के सदस्य निसार दुर्रानी की अध्यक्षता वाली चार सदस्यीय पीठ द्वारा पारित किया गया, जब दोनों पीटीआई नेता कई चेतावनियों के बावजूद मंगलवार को उसके सामने पेश नहीं हुए।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/ 49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129